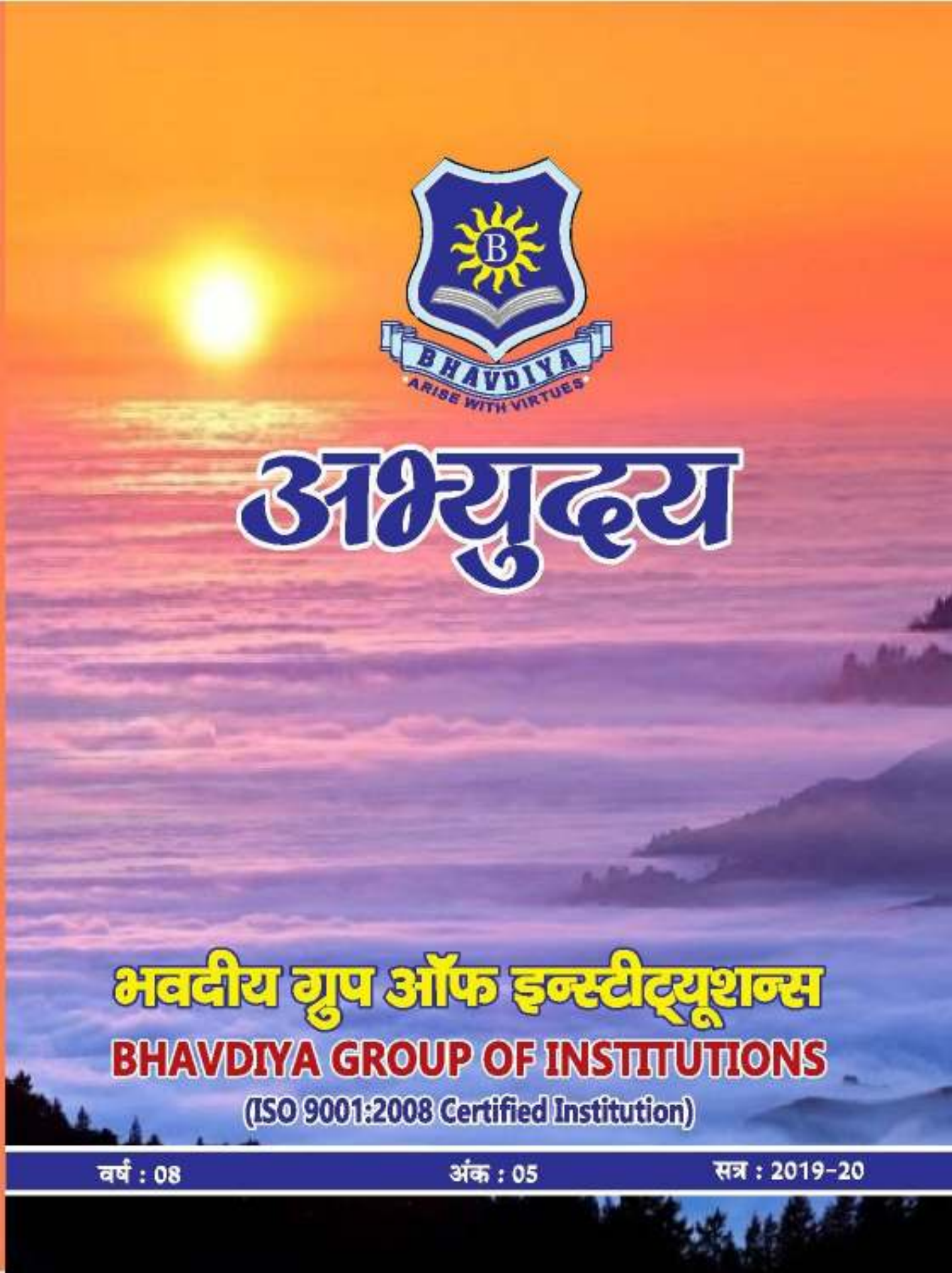

BHAVDIYA
ARISE WITH VIRTUES

अभ्युदय

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स

BHAVDIYA GROUP OF INSTITUTIONS

(ISO 9001:2008 Certified Institution)

वर्ष : 08 | अंक : 05 | सत्र : 2019-20

प्रबन्ध एवं प्रशासनिक मण्डल

एम. एल. वर्मा
प्रबन्ध निदेशक
प्रतिष्ठित व्यवसायी

इं. पी. एन. वर्मा
अध्यक्ष
पूर्व मण्डल अभियन्ता दूर संचार विभाग

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
शिक्षाविद्

अभ्युदय

अंक : 5 वर्ष : 8 सत्र : 2019–2020

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक : डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव
सम्पादक : श्री अवनीश शुक्ल
विशिष्ट सम्पादक : डॉ. संजय कुशवाहा (निदेशक–फार्मेसी)
डॉ. शिशिर पाण्डेय (निदेशक–बी.आई.बी.एम.)
डॉ. दयाशंकर वर्मा (विभागाध्यक्ष, एस.एस.आर.आई.)
विशेष सहयोग : श्री अतुल श्रीवास्तव (मैनेजर एडमिन)

छात्र/छात्रा सम्पादक

शुभम तिवारी : डी.एल.एड् (प्रथम सेमेस्टर)
आकाश वर्मा : बी.फार्म. (तृतीय वर्ष)
विभा गुप्ता : एम.बी.ए. (तृतीय सेमेस्टर)
कन्हैया लाल : बी.एस–सी. कृषि (तृतीय वर्ष)
अनीता वर्मा : डी.एल.एड् (प्रथम सेमेस्टर)

प्रकाशक : भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, सीवार, सोहावल–अयोध्या
मुद्रक : रोहिताश्व प्रिन्टर्स, 268, ऐशबाग रोड,
लखनऊ ☎: 0522-2692973

भवदीय ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स, सीवार-सोहावल
संस्थान-गीत

जहाँ पर जगता है आलोक, जहाँ मिटता अँधियारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥

अवध का दिव्य क्षेत्र सीवार–सोहावल–ग्रामांचल अभिराम,
जहाँ के उत्तर पथ के छोर बहे सरयू–धारा अविराम,
हरित वन–उपवन–निर्मल नीर अलौकिक कूल–किनारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥1॥

यशस्वी 'वर्मा मिश्रीलाल' बने संस्थापक अथक उदार,
पिताश्री 'हेमराज' का स्नेह, 'रमाऊ देवी' माँ का प्यार,
उसी से निर्मित यह संस्थान नित्य नूतन उजियारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 2॥

जहाँ संचालित हैं सब भाँति नयी शिक्षा के विविध प्रकल्प,
चिकित्सा–शिक्षण–कम्प्यूटर–प्रबन्ध के बने श्रेय–संकल्प,
लोक ने देकर शुभ सहयोग हमारा लक्ष्य सँवारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 3॥

प्रगति का अमर साधना–धाम चेतना का पावन उल्लास,
युवा पीढ़ी का जो दिन–रात बढ़ाये मंगलमय विश्वास,
'हमारा हाथ–आपका साथ' बना चिर–चिन्तन न्यारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 4॥

[इस संस्थान–गीत की रचना इन्स्टीट्यूट के प्रबन्ध–तंत्र के सचिव डॉ. अवधेशकुमार वर्मा, संस्थान के चेयरमैन श्री पी. एन. वर्मा तथा महानिदेशक श्री मंशाराम वर्मा की प्रेरणा से कवि डॉ. जनार्दन उपाध्याय, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, साकेत महाविद्यालय, अयोध्या के द्वारा महाशिवरात्रि 07 मार्च, 2016 ई. को की गयी।]

डॉ. मंशाराम वर्मा

श्रद्धाञ्जली

पिता का नाम	स्व. श्री राम नरेश वर्मा
माता का नाम	स्व. श्रीमती मुरता देवी
जन्म तिथि	1 जनवरी 1947
जन्म स्थान	ग्राम-भुवनपुर (लोदीपुर), पोस्ट-लोदीपुर, जनपद-अम्बेडकर नगर (उ.प्र.)
निवास स्थान	नोखे का पुरवा, भीखापुर देवकाली बाईपास रोड, अयोध्या (उ. प्र.) मो. 09412466931
शैक्षिक योग्यता–	एम टेक आई. आई. टी. खड़गपुर (प. बंगाल) पी. एच-डी. आई. आई. टी. (न्यू दिल्ली)

सेवाएँ- वर्ष 2013 से 13 जनवरी 2020 तक आप भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स में महानिदेशक अवैतनिक के रूप में।

- निदेशक, डॉ जाकिर हुसैन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी, आगरा।
- निदेशक, आई. ए. एस., इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेण्ट, भोपाल।
- **प्रोफेसर/डीन** : इन्जीनियरिंग संकाय, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, फैजाबाद, परिसर एम. सी. ए. टी., अम्बेडकरनगर।
- डीन : इन्जीनियरिंग संकाय परिसर, इटावा चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रो. विश्वविद्यालय, कानपुर, उ.प्र.
- प्रोफेसर : एन. डी. यू. ए. टी., कुमारगंज, अयोध्या।
- सह-प्राध्यापक (एन. डी. यू. ए. टी., कुमारगंज, अयोध्या)
- वरिष्ठ वैज्ञानिक (आई. सी. ए. आर. न्यू दिल्ली)
- सहायक निदेशक प्रशिक्षण, (डी. जी. ई. एण्ड टी., भारत सरकार न्यू दिल्ली, परिसर ए. टी. आई. लुधियाना)
- सहायक कृषि अभियन्ता, (बीज सम्वर्धन प्रक्षेत्र जमुनाबाद, गोला गोकरननाथ लखीमपुर, उत्तर प्रदेश)
- सर्विस इंजीनियर (यू. ऐग्रो सेवा केन्द्र, बस्ती)
- वरिष्ठ शोध सहायक (आई. ए. आर. आई. न्यू दिल्ली)

योगदान

- कृषि उपकरणों का अभिकल्पना, विकास, आदि प्रारूप निर्माण, क्षेत्र परीक्षण एवं प्रचार-प्रसार
  (क) मानव चालित 04 उन्नत कृषि यंत्र
  (ख) बैल चालित एवं शक्ति चालित : 11 उन्नत कृषि यंत्र
- बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर, कृषि अभियन्त्रण एवं प्रौद्योगिक महाविद्यालय, इटावा (सी. एस. आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर) में मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर साइंस विभागों की स्थापना करवाकर शिक्षण कार्य की शुरुआत सफलतापूर्वक करवाया गया।
- महामाया कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिक महाविद्यालय अम्बेडकर नगर (एन. डी. यू. ए. टी. अयोध्या) के तत्त्वावधान में मैकेनिकल एवं कम्प्यूटर साइंस विभागों की स्थापना करके शैक्षिक कार्य का प्रारम्भ करवाया गया।
- डॉ. जाकिर हुसैन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट आगरा में कृषि इंजीनियरिंग विभाग की स्थापना करवाकर शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक प्रारम्भ करवाया गया।

शोध परियोजना के प्रमुख अन्वेषक

आई. सी. ए. आर. न्यू दिल्ली, उत्तर प्रदेश विज्ञान एवं प्रौ. परिषद लखनऊ एवं नाबार्ड लखनऊ द्वारा वित्त पोषित 6 परियोजनाओं का सफल क्रियान्वयन किया गया।

संदेश

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

11 फरवरी, 2020

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, सीवार, अयोध्या द्वारा अपने वार्षिक समारोह के अवसर पर पत्रिका 'अभ्युदय' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हुए विद्यार्थियों का चारित्रिक एवं मानसिक विकास भी होता है। विद्यालय की वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक लेखन क्षमता में वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

पत्रिका 'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

श्री पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

संदेश

लल्लू सिंह
सांसद (लोकसभा)
अयोध्या (उ0प्र0)

23, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली - 110001
फोन/फैक्स : 011-23782845

128-क, चुंगी सहादतगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
फैक्स : 05278-220486, मो. : 09415905607
ईमेल : lallu.singh@sansad.nic.in

दिनांक 28.01.2020

शुभकामना

बड़े हर्ष का विषय है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस, सीवार निकट लोहिया पुल अयोध्या में वार्षिक समारोह एवं एक वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का विमोचन किया जा रहा है। वार्षिक समारोह के आयोजन व पत्रिका के विमोचन से बुद्धजीवियों, विचारकों, साहित्यकारों व विद्वत-व्यक्तियों के विचार से समाज में जागरूकता आयेगी, इसके अतिरिक्त अन्य शैक्षिक एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियों द्वारा विद्यालय की गरिमा-वृद्धि होती रहे, ऐसी मेरी कामना है।

विद्यालय की ओर से इस प्रकार का प्रयास भविष्य में भी जारी रहेगा और जनमानस को इससे लाभ मिलता रहेगा। मेरी ओर से आपको शुभकामनाएँ।

(लल्लू सिंह)

सेवा में,
पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

संदेश

वेद प्रकाश गुप्त
विधायक
अयोध्या

आवास
9/3/201, जनाना हॉस्पिटल रोड,
रिकाबगंज, अयोध्या

दिनांक : 27.01.2020

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', सीवार, सोहावल, फैजाबाद विगत वर्ष की भाँति अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है कि सुदूर क्षेत्र में इस शैक्षणिक संस्थान द्वारा दिये जा रहे आधुनिक तकनीकी ज्ञान से समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित होंगे। मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

मैं 'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(वेद प्रकाश गुप्ता)

सेवा में,
पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

संदेश

श्रीमती शोभा सिंह चौहान
विधायक
बीकापुर विधानसभा
अयोध्या

आवास
ग्राम व पोस्ट-महोली, अयोध्या

दिनांक : 09 फरवरी 2020

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस, सीवार, सोहावल, अयोध्या द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का पाँचवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में सम्मिलित नवीन सूचनाएँ एवं निर्देशात्मक लेख छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास, उन्नयन एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ एवं सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई।

डॉ0 अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

(शोभा सिंह)

संदेश

रामचन्द्र यादव
विधायक
रूदौली-अयोध्या

B.G. 2, राज्य सम्पत्ति कलोनी
माल एवेन्यू लखनऊ
क-5 No. 323333
मो.-8765954970, 9415220081

हमें यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' (2019-2020) प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका के माध्यम से संस्थान में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं व शिक्षकों द्वारा रचनात्मक क्रिया-कलापों, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों व रचनाओं का समावेश करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को नवीनतम तकनीकी एवं वर्तमान परिदृश्य से अवगत कराये जाने का एक सफल प्रयास है।

मेरे लिये यह गर्व की बात है कि मेरा संदेश इस प्रतिष्ठित पत्रिका में सम्मिलित किया जाएगा। इस पत्रिका में संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जो विकासशील कार्य हुए हैं उनका ब्यौरा होगा और विद्यार्थियों के लिए वह सब जानकारी होगी जो उनको चाहिए। यह पत्रिका एक संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी।

आपकी यह पत्रिका ज्ञानवर्धक तथा दिशा निर्देशिका के रूप में सफलता प्राप्त करे। आप सभी को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना।

सादर,
पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

(रामचन्द्र यादव)

संदेश

गोरखनाथ बाबा
सदस्य विधानसभा
273-मिल्कीपुर अयोध्या
सदस्य याचिका समिति, उ.प्र.

निवास :
बी-902, बहुखण्डीय मंत्री आवास
अलीबाग, लखनऊ
मो.-9919888880

दिनांक : 08.02.2020

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' (2019-20) का प्रकाशन एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन करने जा रहा है।

आशा है कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में इस शैक्षणिक संस्थान द्वारा दिये जा रहे व्यावसायिक एवं तकनीकी ज्ञान से समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित होंगे। इस पत्रिका में सम्मिलित नवीन सूचनाएँ रचनात्मक क्रिया-कलापों, साहित्यिक लेख, छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास, उन्नयन एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। आपकी यह पत्रिका एक सन्दर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन एवं वार्षिक उत्सव की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना।

सादर,

गोरखनाथ बाबा

(गोरखनाथ बाबा)

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

संदेश

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या-224001 (उ. प्र.) भारत
DR. RAMMANOHAR LOHIA AVADH UNIVERSITY AYODHYA-224 001 (U.P.) INDIA

आचार्य मनोज दीक्षित
कुलपति
Professor Manoj Dixit
Vice Chancellor

Phone (Office) : 05278-246223
Phone (Fax) : 05278-246330

दिनांक : 06.02.2020

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', सीवार, सोहावल, अयोध्या अपना वार्षिक समारोह आयोजित करने जा रहा है, इस पुनीत अवसर पर संस्थान अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' के 5वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में उल्लखित लेख निश्चित ही शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं जनमानस में नवचेतना जागृत करेगी तथा छात्र-छात्राओं में सृजनात्मक लेखन का विकास करेगी।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनायें एवं शोध पत्रिका के सम्पादक मण्डल को मेरी अशेष मंगलकामनायें।

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, अयोध्या

Dixit
प्रो0 (मनोज दीक्षित)

संदेश

प्रो0 विनय कुमार पाठक
कुलपति

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

दिनांक : 20 जनवरी, 2020

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अयोध्या विगत वर्ष की भाँति वार्षिक समारोह का आयोजन एवं वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' के पाँचवें अंक का विमोचन कर रहा है। इस प्रकार के प्रकाशनों से निश्चय ही विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं के प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है। तकनीकी क्षेत्र के छात्रों में रचनात्मक क्रिया-कलापों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में पत्रिका का प्रकाशन निश्चय ही एक अच्छा प्रयास है।

आपकी यह पत्रिका ज्ञानवर्धक तथा दिशानिर्देशिका के रूप में सफलता प्राप्त करे। आप सभी को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

(प्रो. विनय कुमार पाठक)
कुलपति

Sector-11, Jankipuram Extension Yojna, Lucknow-226 031 (U.P.) INDIA, Website : www.aktu.ac.in
☎ Office : +91 522 2772194 Fax : +91 522 2772189 E-mail : vc@aktu.ac.in, vinay@vpathak.in

संदेश

भवदीय ग्रुप ऑफ़ इन्स्टीट्यूशन्स

सीवार-सोहावल, अयोध्या

मिश्रीलाल वर्मा
प्रबन्ध निदेशक

मंगल-कामना

हेमकुञ्ज, 11/24/1-ए,
शृंगारहाट, अयोध्या-224123
दिनांक : 30.01.2020

हम सभी के लिए हर्ष एवं गर्व का विषय है कि संस्थान की वार्षिक पत्रिका "अभ्युदय" का अंक 05 (सत्र 2019-20) प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की मौलिक-रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ तथा सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

माता-पिता, परिजनों, गुरुजनों एवं सुहृज्जनों के आशीर्वाद, प्रोत्साहन एवं सहकार से विद्यार्थी जीवन से ही मेरे मन में शिक्षा-संस्कृति, मानवीय-मूल्यों एवं विद्योन्नयन के प्रति समर्पण-भावना का उन्मेष हो गया था। विज्ञान-वर्ग में स्नातक-स्तर तक की शिक्षा ग्रहण कर लेने के उपरान्त आगे की विद्यालयीय-शिक्षा में अग्रसर होने की अनुकूलता न देखकर मैं शिक्षा-विधा के प्रसार-प्रकाश के व्यवसाय में प्रवृत्त हो गया। वही सत्संकल्प 'भवदीय प्रकाशन' के रूप में मूर्तिमान हुआ, जिसे अवध विश्वविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय सहित व्यापक शिक्षा-क्षेत्र के गुरुजनों, अभिभावकों एवं विशेषतः विद्यार्थियों का हार्दिक सहयोग और सद्भाव अपेक्षा से कहीं अधिक मात्रा में प्राप्त हुआ।

बीते दिनों संस्थान के पूर्व महानिदेशक प्रो० मंशाराम वर्मा (पूर्व अधिष्ठाता इंजी. संकाय नरेन्द्रदेव कृषि एवं प्रौ.वि.वि. कुमारगंज, अयोध्या) का देहावसान संस्थान के लिए बड़ी घटना है, उनके देहावसान ने महाविद्यालय परिवार को सहसा शोक से जड़ीभूत कर दिया। उनके द्वारा संस्थान को दिया गया समर्पण, कर्त्तव्यनिष्ठा आज भी भवदीय ग्रुप के लिए अनुकरणीय, अविस्मरणीय है।

शिक्षा विकास की जननी है। विश्व में जो राष्ट्र जितना शिक्षित है, वह उतना ही विकसित है। भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। वस्तुतः गाँवों का विकास ही भारत का विकास है। दूर-दराज गाँवों में बसने वाले किसान, मजदूर की सन्तानों तक शिक्षा की रोशनी पहुँचाने का जो सपना कभी युग प्रवर्त्तक महात्मा गाँधी ने देखा था, उसी सपने को साकार करने की पवित्र संकल्पना के साथ स्थापित हमारा संस्थान शहर के कोलाहल एवं चहल-पहल से बहुत दूर शान्त, सुरम्य, नीरव ग्रामीण अंचल को विगत वर्षों से उच्च शिक्षा के प्रकाश से आलोकित एवं उसकी सुगन्ध से सुरभित कर रहा है। गाँव के बेटे-बेटियाँ, जिनकी पहुँच शहर के महाविद्यालयों तक नहीं है, वे आज व्यावसायिक क्षेत्र में विभिन्न कोर्सों की गुणवत्तायुक्त एवं मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आज-दिन संस्थान का सुनाम अवध विश्वविद्यालय-परिक्षेत्र में अग्रणी विद्यापीठ के रूप में मुख्यतः हो रहा है। प्रबुद्ध, सम्भ्रान्त एवं शिक्षा के प्रति जागरूक विविध-वर्गीय नागरिकगण संस्थान के प्रति प्रोत्साहनपूर्ण आत्मीय सद्भाव रखते हैं। प्रबन्धन-संचालन-प्रशासन-शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़े समस्त महानुभाव पूर्ण तत्परता से संस्थान को अग्रसर बनाने में दत्तचित्त हैं। हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि संस्थान में अध्ययनरत सभी छात्र-छात्राएँ विनीत, अनुशासित एवं विद्यानुराग से आपूरित हैं।

हमारी मंगल कामना है कि संस्थान में शिक्षण-प्रशिक्षण-रत विद्यार्थी आगे चलकर अपने जीवन में सफलकाम बनें। अध्यापक-गण से हमारी हार्दिक अपेक्षा है कि इसी प्रकार पूरे मनोयोग से विद्यादान में निरत रहें। 'विद्यादानं महादानम्!' साथ ही, अनुरोध है कि विद्या-विभूषित आदरणीय गुरुजन, विविध क्षेत्रों में अग्रणी सुधी-समाजसेवी महानुभाव एवं समस्त आत्मीय अभिभावक-वृन्द इसी प्रकार संस्थान को अपना सद्भाव एवं सहयोग प्रदान करते रहें, जिससे संस्थान और अधिक प्रवर्धमान हो सके और हम आपकी और अधिक शुभ सारस्वत सेवा करने में सफल-समर्थ सिद्ध हों। सर्वं भवतु मंगलम्!

वसन्त पंचमी, 2020

(मिश्रीलाल वर्मा)

संदेश

चेयरमैन की कलम से.....

शिक्षा वर्तमान एवं भविय के निर्माण का अनुपम साधन है। भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में ग्रामीण आबादी की शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। हमारे देश में स्वैच्छिक प्रयासों की एक लम्बी परंपरा है। इसी क्रम में दूरद्रष्टा श्रद्धेय श्री मिश्रीलाल वर्मा, प्रबन्ध निदेशक ने फैजाबाद जनपद (अब अयोध्या) के ग्रामीण अंचल सीवार-सोहावल में रोजगारपरक शिक्षा संस्थान की नींव 21 अगस्त 2010 को रखी एवं 15 अगस्त 2011 से शिक्षण कार्य प्रारम्भ करके ग्रामीण छात्र/छात्राओं की प्रतिभा को पुष्पित-पल्लवित करने का सुअवसर प्रदान किया। स्थापना के नौ वर्षों की यात्रा पूर्ण कर संस्थान उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। गतिशीलता जीवन का पर्याय है। ज्ञानदीप लेकर लक्ष्य की ओर अग्रसर होना ही शिक्षालयों का उद्देश्य है। संस्थान की पत्रिका 'अभ्युदय' भी इस दिशा में बढ़ाया गया एक सार्थक कदम है। इसके माध्यम से हम अपने संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मन में अंकुरित होते विविध भावों, प्रतिभाओं के बहुरूपों को प्रस्तुत करते हैं, साथ ही साथ यह पत्रिका संस्थान की प्रगति, प्रतिभा-सम्पन्नता एवं रचनाशीलता आदि तथ्यों को भी दर्शाती है। हमारी युवा शक्ति एक सच्चे नागरिक की भाँति अपने परिवार, ग्राम, नगर, प्रान्त तथा राष्ट्रीय विकास कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाए, एक चेयरमैन के रूप में यही उनके प्रति मेरा सर्वप्रमुख कर्त्तव्य है।

हमारे सहयोगी एवं पूर्व महानिदेशक प्रो. मंशाराम वर्मा जी का अचानक से देहावसान हम सभी की अपूरणीय क्षति है, वे हमारे सिर्फ सहयोगी ही नहीं अपितु अग्रज एवं पथप्रर्दशक थे, भवदीय परिवार उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलने का भरपूर प्रयास करेगा, उनके लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शैक्षिक गुणवत्ता को उच्चस्तर पर पहुँचाने हेतु हम अनवरत प्रयासरत हैं। संस्थान का अनुशासन पूर्णरूपेण चुस्त-दुरुस्त रखा जाता है। छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान आदि भी आयोजित किये जा रहे हैं। किसी संस्था के विकास की कोई सीमा नहीं होती। यह तो ऊर्ध्वगामी मार्ग है। इस मार्ग का लक्ष्य सदैव पथिक से दूर ही रहता है, किन्तु मुझे विश्वास है कि सबके सहयोग से ही 'हम होगें कामयाब'। संस्थान परिसर में हमने दीर्घ सुविधाओं का स्वप्न संजोया है। हमारे पास प्रगतिशील चिन्तन एवं सहयोगी विचारधारा वाले सहयोगियों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं एवं शुभचिन्तकों का समूह है जो निरन्तर संस्थान के विकास हेतु मेरे साथ कृत संकल्प है। मेरी कल्पना, मेरा स्वप्न इस संस्थान को एक परिवार, एक नये समाज, एक अनोखी व्यवस्था, एक नये राष्ट्र का सृजनहार बनाने का है। मेरी आकांक्षा है कि हमारे संस्थान से जुड़े हर सदस्य की आँखों मे यही स्वप्न हो ताकि यह स्वप्न शनैः शनैः वृहत् आकार ले, साकार हो एवं विश्व में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सम्भव हो सके। हमारी निरन्तर कर्मशीलता और सर्जनेच्छा अवश्य ही हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी होगी।

सम्पादक मण्डल के सदस्यों, संस्थान के समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को शुभकामना।

सद्भावनाओं सहित!

P.N. Verma

(इं. पी. एन. वर्मा)

चेयरमैन–भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स

संदेश

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव/प्रबन्धक

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल-अयोध्या

सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में पावन सरयू के किनारे पर स्थित भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स आज शिक्षा के क्षेत्र में नूतन आयाम स्थापित कर रहा है। यहाँ पर संचालित स्नातक एवं परास्नातक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों एम.बी.ए., बी. बी.ए., बी.सी.ए.,डी-फार्म, बी-फार्म, डी0एल0एड्0, बी0एड्0, बी0एस0सी-(कृषि), बी.एस. (गृहविज्ञान), बी.लिब, बी.कॉम, बी.पी.ई. ने छात्रों को एक नये मुकाम पर पहुँचाने का प्रयास किया है। साथ ही नूतन विकास की कड़ी में आगामी सत्र आई.टी.पी.(इन्टीग्रेटेड टीचर एजूकेशन प्रोग्राम), आई.टी.आई. तथा एल-एल.बी. पाठ्यक्रमों का संचालन संस्थान द्वारा प्रस्तावित है, जिसे मूर्त रूप प्रदान किया जा रहा है।

किसी भी कार्य/दायित्व को पूर्णता की तरफ पहुँचाने के लिए एक टीम की आवश्यकता होती है, संस्थान के प्राचार्यगण, प्राध्यापक एवं समस्त कर्मचारीगणों का हमेशा पूरे मनोयोग से सहयोग प्राप्त होता रहा है। इसी का परिणाम है कि संस्थान आज इतनी अल्पावधि में शिक्षा के क्षेत्र में एक नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

संस्थान में गुणवत्तायुक्त एवं मूल्यपरक शिक्षा देने के प्रति दृढ़ संकल्पित होते हुए डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव (प्राचार्य, भवदीय एजूकेशनल इंस्टीट्यूट) की निर्देशन में संस्थान को (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, नैक) मूल्यांकन दिलवाने के लिए प्रयास प्रारंभ कर दिया गया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि जल्द ही हमारे संस्थान को उच्च श्रेणी के नैक ग्रेड से आच्छादित हो जायेगा।

संस्थान के कैम्पस को ग्रीन-क्लीन कैम्पस के साथ ही हर सुविधा से परिपूर्ण करने कोशिश की गयी है, जिससे कि सभी छात्र-छात्राओं को समस्त शैक्षणिक सुविधाएँ गुणवत्तापरक प्राप्त हो सकें,

संस्थान के शैक्षिक स्तर को बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष विभिन्न सेमिनार, फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम, स्टूडेण्ट प्रोग्राम, वर्कशाप, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षणिक यात्रा तथा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है जिससे छात्रों का प्रत्येक क्षेत्र में विकास सम्भव हो।

मैं भवदीय परिवार के समस्त शिक्षकों, सदस्यों, इष्ट मित्रों तथा शुभेच्छु को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके भरपूर सहयोग से यह सम्भव हो सका। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में 'भवदीय' प्रदेश ही नहीं वरन् देश के उच्चस्थ शैक्षणिक संस्थाओं में अपनी भूमिका अदा करेगा।

शुभकामनाओं सहित!

(डॉ. अवधेश कुमार वर्मा)
सचिव/प्रबन्धक

सम्पादकीय...

प्राचार्य की कलम से....

भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स परिवार की पत्रिका 'अभ्युदय' का पांचवाँ अंक आप सभी सुधी पाठकों के सम्मुख नये कलेवर एवं उत्साह के साथ प्रस्तुत है। पत्रिका के माध्यम से संस्थान की प्रगतिशीलता, विभिन्न क्रियाकलापों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं शैक्षिक उद्देश्यों का यह दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए अतीव प्रसन्नता की अनुभति हो रही है। ज्ञान के अन्वेषण, उसके तात्त्विक निर्वचन और सम्प्रेषण की बुनियादी प्रविधियों के विकास-क्रम में एक वैकल्पिक लेकिन महत्त्वपूर्ण अनौपचारिक माध्यम के रूप में संस्थान की पत्रिका का स्थान होता है।

संस्थान का शैक्षिक परिवेश 'आरोह तमसो ज्योतिः' से वसुधैव कुटुंबकं तक का भाव धारण कर शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के चेतन परिष्करण के लिए दृढ संकल्पित है। निःसन्देह निर्विवाद रूप से समसामयिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के सभी पक्षों में जटिलताओं के कारण शिक्षा बहुत अधिक दबाव का अनुभव कर रही है फिर भी हमारा संस्थान अपनी सीमाओं की परिधि से आगे निकलकर जनसामान्य की आशाओं, अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप दायित्व निर्वहन हेतु सतत् प्रत्यत्नशील है। संस्थान की पत्रिका 'अभ्युदय' निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्यों के अनुरूप किये जा रहे ठोस प्रयासों का संकल्पित स्वरूप है, विद्यार्थियों की परिष्कृत चेतन-धारा का प्रवाह है, इसका समयबद्ध प्रकाशन इसी महत उद्देश्य से प्रेरित है।

जनपद के अग्रणी शिक्षा-संस्थानों में शुमार हमारा संस्थान प्रबन्ध समिति, अनुभवी प्राध्यापकों एवं कुशल कर्मचारियों के सहयोग से विकास के पथ पर अग्रसर है हमने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व अनुशासन के कड़े मानदण्डों पर सदैव खरा उतरने में सफलता प्राप्त की है, जिसका पूरा श्रेय शिक्षकों व विद्यार्थियों को है। मैं सभी प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान

दिया। ईश्वर को भी धन्यवाद, जिसने मुझे प्राचार्य के पद पर कार्य करने का अवसर प्रदान किया और ईमानदारी पूर्वक तटस्थ रहने की प्रेरणा दी।

"स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का निर्माण होता है" इसी भाव को लेकर संस्था की प्रगतिशीलता के सम्बन्ध में सोचना तथा उन भावों, विचारों को मूर्तरूप देने का कार्य मेरे दायित्वों में शुमार है। इसी कड़ी में संस्थान को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रात्यायन परिषद (NAAC) द्वारा ग्रेड दिलाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया गया है। इसी शिक्षण सत्र में सभी को पूरी क्षमता के साथ संस्थान को उच्चता देने का प्रयास करना होगा जिससे NAAC के मूल्यांकन में श्रेष्ठतम श्रेणी प्राप्त हो सके।

संस्थान की पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष एवं उल्लास का अनुभव कर रहा हूँ क्योकि विद्यार्थियों के अन्दर उद्गार नवसृजनात्मक क्षमताओं के साथ अभ्युदय के माध्यम से प्रस्फुटित हुआ हैं। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका संस्थान के शैक्षिक यात्राओं में नये प्रतिमान स्थापित करने के साथ ही विद्यार्थियों, कर्मचारियों, कुशल शिक्षकों की रचनात्मक व अनुसंधानपरक अभिवृत्ति को एक नई दिशा प्रदान करेगी। मैं संस्थान के प्रबन्ध निदेशक, शिक्षा-सेवी, संस्थापक सम्माननीय श्री मिश्रीलाल वर्मा जी, चेयरमैन इं. पी.एन. वर्मा जी तथा युवा कर्मठ एवं ऊर्जावान सचिव डॉ. अवधेश कुमार वर्मा जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनका पूर्ण सहयोग व सान्निध्य हमें हर समय मिलता रहता है।

संस्थान के पूर्व महानिदेशक श्रद्धेय प्रो. मंशाराम वर्मा जी का आकस्मिक निधन व्यक्तिगत तौर पर मेरे लिए अपूर्णनीय क्षति है, मुझे अल्पकाल में उनके विराट् व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसकी तुलना कभी नहीं की जा सकती है। संस्थान के प्रशासनिक प्रबन्धक, प्रशासनिक अधिकारी तथा सहयोगी बन्धुओं, शिक्षण सत्र के कुशल संचालन में संलग्न प्राध्यापक, प्राध्यापिकाओं, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को धन्यवाद प्रेषित करता हूँ। सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों विशेषतः अवनीश शुक्ल (संपादक) व कृष्णा दूबे (आई.टी.सेल प्रभारी, बी.जी.आई.) को हार्दिक साधुवाद, जिनके श्रम-कर्म से पत्रिका का यह अंक आपके कर कमलों में पहुँच रहा हैं। पत्रिका के इस अंक में पूर्ववर्ती अंकों की त्रुटियों को यथासम्भव शोधित करने का प्रयास किया गया है।

इन प्रयासों में सहभागी सभी महानुभावों, सहयोगियों के प्रति सहृदय बहुत-बहुत आभार...।

शुभकामनाओं के साथ,

Rajnish

(डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव)

प्रबंध निदेशक श्री मिश्रीलाल वर्मा, अध्यक्ष ई. पी. एन. वर्मा, सचिव डॉ. अवधेश कुमार वर्मा के साथ
भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के समस्त प्राचार्यगण एवं स्टाफ

सम्पादकीय मंडल : डॉ. शिशिर पांडेय, डॉ. संजय कुशवाहा, डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव
(प्रधान सम्पादक), डॉ. दयाशंकर वर्मा, श्री अवनीश शुक्ल (सम्पादक) एवं अन्य सदस्यगण

प्रवेश समिति बांये से दांये क्रमश डॉ. शिशिर पांडेय, डॉ. संजय कुशवाहा, डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव (प्राचार्य), डॉ. दयाशंकर वर्मा एवं अन्य सदस्यगण

प्राचार्य के साथ **नियंता मंडल** सदस्य

केन्द्रीय कार्यालय
मैनेजर एडमिन श्री अतुल श्रीवास्तव, प्रशासनिक अधिकारी के. आर. एन. वर्मा, कार्यालय अधीक्षक श्री कृपाशंकर शर्मा के साथ कार्यालय के सदस्यगण

छात्र कल्याण परिषद्
बांये से दांये क्रमश श्री कृष्णा दुबे (आई.टी. सेल प्रभारी), श्री अतुल श्रीवास्तव (मैनेजर एडमिन), डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव (प्राचार्य), श्री अवनीश शुक्ल (विभागाध्यक्ष), श्री संतोष पाठक (छात्रवृत्ति अनुभाग)

प्लेसमेन्ट सेल
प्राचार्य डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव, डॉ. शिशिर पाण्डेय, डॉ. संजय कुशवाहा, मैनेजर एडमिन श्री अतुल श्रीवास्तव, निदेशक प्लेसमेण्ट श्री पुनीत स्टीफेन के साथ अन्य सदस्यगण

वर्ष 2019 के सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ता

2018-19 (MBA)
SOMNATH GUPTA
(75.91%)

2018-19 (MBA)
SHIWANI RASTOGI
(74.95%)

2018-19 (BBA)
DEEPAK KUMAR
(73.92%)

2018-19 (BBA)
KM.NISHA
(67.52%)

2018-19 (BCA)
DOLLY PANDEY
(77.86%) (HONOURS)

2018-19 (BCA)
PRATIMA
(77.3%) (HONOURS)

2018-19 (D.Pharm.)
MOHIT YADAV
(81.27%)

2018-19 (D.Pharm.)
ASHA MAURYA
(80.38%)

2017-19 (B.ED.)
NITYA UPADHYAY
(82.16%)

2017-19 (B.ED.)
KM.ANKITA SHARMA
(80.75%)

2015-17 (BTC) BHVTTI
SATYA PANDEY
(90.28%)

2015-17 (BTC) BHVTTI
ANKUSH KM.CHAUDHRY
(88.84%)

2015-17 (BTC) SSRI
PRIYA KATIYAR
(91.28%)

2015-17 (BTC) SSRI
PRIYA TRIPATHI
(90.96%)

2015-17 (BTC) SSRI
KAPIL KUMAR VERMA
(90.96%)

2018-19 (B.LIB.)
KALPANA KUSHWAHA
(79.60%)

2018-19 (B.LIB.)
PRATIMA DEVI
(78.10%)

अनुक्रम

1.	भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स : स्थापना एवं विकास		4
2.	Department of Business Management & Computer Science Annual Report 2018-19 & 2019-20	– *Dr. Shishir Pandey*	6
3-	Event report- 2019-2020	—	11
4.	वार्षिक रिपोर्ट : शिक्षक-शिक्षा विभाग	– *अवनीश शुक्ल*	13
5.	वार्षिक रिपोर्ट : कृषि संकाय	– *डॉ. अरुण कुमार*	15

प्रबन्धन-अनुभाग

1.	Recent development in Banking ---- India	— *Dr. Shishir Pandey*	16
2.	Personality Development	— *Punit Stephen*	18
3.	Special issue on operations research.....	—*Dhananjay Singh*	20
4-	Working Together Hand In Glove	— *Shivendra Pratap Singh*	22
5.	Long Refreshment In Toxic Workplace----	— *PriyankaPandey*	23
6-	Is Your Cloud Storage Solution Safe? -----	— *Er. Sumit Srivastava*	26
7-	Stress : Good or Bad	— *Supriya singh*	27
8-	How to Become a Successful Professional	— *Manoj Kumar Shukla*	29
9-	URDU literature and its impact ------	— *Afreen Fatima*	31
10-	Be Confident …Never Give Up……..!	— *Abhishek Bhatnagar*	32
11.	Importance of human resource -------	— *Pratibha Yadav*	33
12.	My Hall of Knowledge	— *Gulfishan Parveen*	33
13-	A Good Students	— *Sakshi Yagyaseni*	34
14.	Ability, Opportunity & Adversity	— *Arshiya Sultan*	34
15.	The Game of Life	— *Ragini Gupta*	35
16.	Success	— *Shreya Gupta*	36
17.	Chalk-Talk of life	— *Fatima Zehra*	36
18.	Role of Parents in Our Life	— *Avantika Rawat*	37
19.	Return Gift for all my Teacher	— *Pragya Verma*	38
20.	बेटी एक लक्ष्मी होती है	— *Saba Azmi*	38
21.	प्रेरणात्मक उद्धरण	– *अनुज रावत*	39
22.	रेत की तरह	— *Shivam Tripathi*	39
23.	मै	— *Vibha Gupta*	40
24.	कमाल है	— *Priyanka*	40
25.	माँ के प्रति स्नेह	— *Kajal Tiwari*	41
26.	शिक्षा	— *Mansi Sahu*	41
27.	सोचती हूँ कि मै	— *Himani Singh*	41

फार्मेसी- अनुभाग

1.	**Pharmacy : Current Issues**	— ***Mr Ran Vijay Singh***	42
2.	**जेनरिक बनाम ब्रांडेड औ**	— ***विष्णु गुप्ता***	43
3.	**कोशिश**	— Mr. Jagdeesh Prasad	44
4.	**Teacher is So Much More Than Just ---**	— Ms. Jyoti Vaish	45
5.	**Indian Economy Growth Rate & Statistics**	— Mr. Anuj Kr Singh	45
6.	**शहीदों की शहादत**	— आकाश वर्मा	47
7.	**मेरे गुरु.....**	— धीरेन्द्र श्रीवास्तव	47
8.	**हमारी फार्मेसी**	— पियूष गुप्ता	47
9.	**स्वच्छ भारत, स्वच्छता अभियान**	— दीपक कुमार	47
10.	**देश प्रेम कविता**	— मंजीत कौ	48
11.	**हॉस्टल की यादें**	— मोहम्मद अनीस	48
12.	**कुछ करना तो है**	—निदा परवीन	48
13.	**Plastic By Numbers**	– Afreen Naaz	49
14.	**आदमी** (कविता)	— अंकुर पटेल	49
15.	**हे भारत वीर जागो** (कविता)	— उपेन्द्र प्रताप सिंह	49
16.	**Life Goals**	– Saumya Dwivedi	49
17.	**हौ**	— अमरीन बानो	50
18.	**वक्त**	— अमिता पटेल	50

शिक्षक- प्रशिक्षण अनुभाग

1.	**प्रदूषण का बदलता स्वरूप**	—अवनीश शुक्ल	51
2.	**जीवन की कुछ नसीहतें** (कविता)	—श्रीमती ममता सिंह	52
3.	**विज्ञान का महत्त्व, चमत्कार औ**	—शिवप्रसाद वर्मा	53
4.	**राष्ट्रकवि व सफल साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टै**	—सूर्यनाथ सिंह	55
5.	**कला समाज का दर्पण है**	—डॉ. पंकज यादव	56
6.	**आधुनिक हिन्दी भाषा का महत्त्व**	—विनोद कुमार	57
7.	**स्त्री शिक्षा का महत्त्व**	—सुनीता वर्मा	57
8.	**शिक्षा में खेल का महत्त्व**	—डॉ. दयाशंकर वर्मा	58
9.	**मूल्यों के विकास में समाज**	—अजय कुमार राय	59
10.	**वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षक**	—अनूप कुमार सिंह	60
11.	**शिक्षा में बदलाव**	—सुभाषचन्द्र वर्मा	61
12.	**शिक्षा का अधिकार अधिनियम**	—शुभम् तिवारी	62
13.	**विराजिये माँ**	—अनीता कुमारी	63
14.	**हमारे जीवन में शिक्षा का महत्त्व**	—आकांक्षा जायसवाल	64
15.	**अकेलापन**	—आकांक्षा चौ	65
16.	**नारी शिक्षा**	—सुधांशु	65
17.	**देश-भक्ति गीत**	—सुधांशु सिंह	66
18.	**हिन्दी भाषा**	—अंकिता सिंह	67
19.	**वो प्यारी बच्ची**	—डिम्पल	67

20.	फिर न जाने क्यूँ	—डिम्पल सिंह	68
21.	शिक्षा	—डिम्पल वर्मा	69
22.	बाल मजदूरी	—*संदीप कसौ*	69

कृषि- अनुभाग

1.	कृषि मशीनीकरण के लाभ	— Er. V. C. Pal	70
2.	सफलता	—दिपांशी वर्मा	70
3.	भारत में कृषि का महत्त्व एवं कृषि के क्षेत्र में रोजगार	— डॉ. अरुण कुमार	71
4.	Haemorrhagic Septicaemia	— Dr. Sujeet Kumar Yadav	72
5.	Terminology in Plant Pathology	– Uttam Patel	73
6.	Program Planning and Importance of ----	—Jyoti Rani	73
7.	Statisticians Know How to Avoid Common Pitfalls	— Amit Mishra	74
8.	किसान पर कविता	— पवन कुमार	75
9.	बेटियाँ	— काजल वर्मा	75
10.	मेरी सफलता	— मधुरिमा गोस्वामी	75
11.	क्या आप जानते है	— हर्षित वर्मा	76
12.	Friends is the Key to Success	– Zufishan Rhman	76
13.	गुरुवर दया के सागर	— संध्या सोनी	77
14.	मेरी पहचान	— *सिद्धान्त चौ*	77
15.	Artificial Intelligence	— Rajneesh Singh Patel	78
16.	बेजोड़ परीक्षा	— दिषू कुमार	78
17.	जिन्दगी एक गणित की पुस्तक की तरह है	— संजना वर्मा	79
18.	प्रेम	— मुस्कान कुमारी	79
19.	ये धरा ही उसकी माता है	—शिवम तिवारी	80
20.	हमारी जीवन-शै	—शुभम तिवारी	81
21.	जिन्दगी की राह पर	—अनुपम कुमार	81
22.	शहीद के बेटे की दीपावली	—महीप कुमार	82
23.	गाँव बदलिगा	—आदर्श सिंह	82
24.	मतदाता जागरूकता गीत	—कन्है	83
25.	पापा	—साजिया खान	84
26.	माँ	—सचिन कुमार	84
27.	महिमा अपरम्पार बनारस	—सौ	85
28.	Women Empowerment	– Pooja Sahu	85
29.	शिक्षक की महिमा	— उपासना	86
30.	आकांक्षा	— नेहा गोस्वामी	87
31.	जीवन की सच्चाई	—गगनदीप	87
32.	माँ शारदा से प्रार्थना	—रोशनी गौ	88
33.	जीवन का लक्ष्य	—श्रद्धा मिश्रा	88

❖❖❖

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स : स्थापना एवं विकास

[प्रारम्भ से आज तक]

—डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
(सचिव)

आदरणीय महानुभाव !

ज्ञान औ
युग से हमारे देश में चली आ रही है
संवहन में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना हर भारतवासी का परम कर्त्तव्य है
समाज-सेवा की भावना है
अभ्युदय की प्रेरणा देती रहती है विचार औ
संकल्प भगवत्कृपा से जगता है । मनस्वियों
तथा सुजनों के अनुग्रह से विकसित होता है

तदनुरूप इन्स्टीट्यूशन की स्थापना के स्वप्न को साकार करने के लिए 5 जुलाई 2010 को इस भूखण्ड (जिसका क्षेत्रफल लगभग 8 एकड़ का है
कराई गई। इसके पश्चात् 21 अगस्त 2010 को भूमि पूजन का कार्य सम्पन्न करके शै
विभिन्न कोर्सों की मान्यता के लिए फाइलिंग का भी कार्य समानान्तर डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फै
ए. तथा एम.बी.ए. पाठ्यक्रम हेतु ए.आई.सी.टी.इ. दिल्ली में आवेदन किया गया। आदरणीय चेयरमै
पी. एन. वर्मा के कुशल निर्देशन एवं अथक प्रयास के परिणामस्वरूप एक ही वर्ष के अन्दर मंगलवार, 16 अगस्त, 2011 को संस्थान के प्रथम शै
उद्घाटन परमादरणीय डॉ0 रामशङ्कर त्रिपाठी, फै
की अध्यक्षता में, प्रोफेसर अवध राम, पूर्व कुलपति महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी द्वारा डॉ. रामअँजोर सिंह, पूर्व प्राचार्य, रामनगर, पी. जी. कॉलेज, बाराबंकी तथा श्रीमती डॉ. राधारानी सिंह, बाराबंकी व अयोध्या-फै

विद्वानों की उपस्थिति के साथ-साथ स्थानीय प्रबुद्ध वर्ग व सम्मानित जनता की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था।

तदुपरान्त बी. टी. सी. एवं डी. फार्म. पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु प्रयास किया गया। फलस्वरूप अगस्त 2013 में **भवदीय हेमराज वर्मा टीचर्स ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट** की स्थापना हुई जिसके अन्तर्गत बी. टी. सी. की कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ हो गया। इसी कड़ी में दिनांक 24.8.2013 को डी. फार्मा. की मान्यता प्राप्त होना संस्थान के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि साबित हुई, जिसकी कक्षाएँ सितम्बर 2013 से प्रारम्भ हुईं।

इसी कड़ी में सत्र 2014-15 में बी.एड्. पाठ्यक्रम की सम्बद्धता NCTE द्वारा भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट को प्राप्त होने के उपरान्त कक्षाएँ संचालित की गयी तथा B.T.C. पाठ्यक्रम के संचालन हेतु संस्थान की नयी शाखा ग्राम बरई कलाँ जो कि इस कै **श्री साईंराम इंस्टीट्यूट** के नाम से स्थापित हुई है
सत्र 2015-16 से NCTE द्वारा बी.टी.सी. पाठ्यक्रम की मान्यता प्राप्त हो चुकी है
प्रबन्ध निदेशक, चेयरमै
प्रो. एम. आर. वर्मा जी के निर्देशन में बी.टी.सी. के प्रत्येक पाठ्यक्रम में अतिरिक्त यूनिट के लिए NCTE में आवेदन किया गया था जो कि आपके कुशल निर्देशन में विगत 3 मार्च 2016 को पूर्ण हो गया है
बी.टी.सी. पाठ्यक्रम की प्रवेश क्षमता इस ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षित माँग के अनुरूप हो चुकी है
कुशल निर्देशन एवं प्रयास तथा टीम वर्क का प्रतिफल है
ग्रामीण क्षेत्र में भी MBA की 60 सीटों पर प्रवेश समय से पहले हो जाता है
अन्य जिलों से भी बच्चे मै
है

प्लेसमेण्ट सेल का गठन किया है
स्टीफन डायरेक्टर ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेंट छात्र/छात्राओं को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों में कै
सेलेक्शन कराने हेतु प्रतिबद्ध है

2015-2016 शै फै
जनपद के नब्बे इण्टर कालेजों में बच्चों के अन्दर प्रतिस्पर्द्धा की भावना जागृत करने हेतु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता करा कर प्रत्येक विद्यालय के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर चुके छात्रों को संस्थान परिसर में क्रमशः 20 दिसम्बर 2015 एवं 3 जनवरी 2016 को पुरस्कृत किया गया तथा उसी दिन इन विजयी छात्रों द्वारा मेगा क्विज कम्प्टीशन का भी आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्र/छात्राओं के साथ-साथ उन कालेजों के प्रधानाचार्य गण को पुरस्कृत व सम्मानित किया गया।

संस्थान के सभी संकाय सदस्यों व छात्रों के प्रयास से भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स ने शिक्षा के अलावा अन्य सामाजिक जिम्मेदारियों का भी भली-भाँति निर्वहन किया है
से ही समाज का विकास हो सकता है
है
ग्रामीणों में कम्बल-वितरण, निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कर दवा-वितरण एवं प्राकृतिक आपदा से पीड़ित व्यक्ति को आर्थिक राहत प्रदान करना आदि कार्य भी समय-समय पर किया जा रहा है

प्रबन्धतन्त्र द्वारा **स्टूडेन्ट वेलफेयर एकाउण्ट** की व्यवस्था की गई है
एवं छात्राओं को विभिन्न मदों जै
परीक्षा शुल्क के रूप में सहयोग किया जाता है
द्वारा अब तक विभिन्न कक्षाओं के जरूरतमन्द छात्रों की मदद संस्थान द्वारा की गयी है

संस्थान की यह भूमि, जिसका क्षेत्रफल 8 एकड़ में फै
प्रबन्ध-निदेशक के कुशल निर्देशन एवं तकनीकी पद्धति के द्वारा पूरे क्षेत्रफल की जमीन को हरा-भरा बना दिया गया है
व्यवस्था की गयी है
ग्रहण करने में कठिनाई न हो। संस्थान के प्रबन्ध तंत्र द्वारा अभी इस शै
PCI/AICTE द्वारा सत्र 2017 में प्राप्त होने के उपरान्त कक्षाएँ संचालित हो रही हे। जिसका सफल संचालन BIPSR द्वारा किया जा रहा है
के नूतन विकास की कड़ी में बी.एस-सी., बी. काम., बी.एस-सी. (कृषि), बी.एस-सी. (गृहविज्ञान), बी. लिब., बी.पी. ई. की कक्षाओं के संचालन की अनुमति डॉ. रा.म. लो. अवध वि.वि. द्वारा प्राप्त हो चुकी है जिनमें से सत्र 2017-18 से बी.एस-सी. (कृषि), बी. एस-सी. (गृहविज्ञान), बी. लिब. की कक्षाएँ **भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट** के परिसर में नियमित रूप से संचालित हो रही है
गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने हेतु संस्था का नै
प्रमाणित व मूल्यांकन हेतु संस्थान ने इसका उत्तरदायित्व डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव प्राचार्य भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट को सौ
प्रतिबद्ध है TQAC का गठन कर लिया है
(Alumuni meet 2020) कार्यक्रम सम्पर्क करा चुके है
प्रथम इकाई स्थापित हो चुकी है
विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास व सामुदायिक विकास स्थापित करना है
2018-19 से बालक एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर प्रबन्ध तंत्र द्वारा **भवदीय पब्लिक स्कूल** की स्थापना मोहबरा बाजार, रानोपाली, अयोध्या में की गयी है
परिवार के सभी सदस्यों का इसी तरह से सहयोग एवं प्रेरणा मिलता रहेगा तो निश्चित ही भविष्य में संस्थान में उपरोक्त पाठ्यक्रम संचालित होंगे, जो कि इस ग्रामीण क्षेत्र के विकास में एक मानक तय करेगी। साथ ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी।

इसी के साथ आपके सहयोग एवं आशीर्वाद की कामना करते हुए! आप सभी को बहुत-बहुत
धन्यवाद!!

❑

Department of Business Management and Computer Science
Annual report 2018-19 & 2019-20

—Dr. Shishir Pandey

"In the past the man has been first, in the future the system must be first"
By F.W. Taylor

With the starting of new session, being as Assistant Director of BIBM I have a goal to shape the excellence of students. So I have organised many activities and events for the complete growth of newly admitted students as well as old students. I take a pleasure to present the annual report of session 2018-19 and 2019-20. This session marked with many events and success stories. This academic session was so energetic for the growth and development of the students.

Bhavdiya Group of Institutions is located at Sewar, Sohawal, Ayodhya, was established in 2010 and first session started in 2011-12 with the following courses **M.B.A., B.B.A. B.C.A. and B.Com** with the vision of providing professional education in rural area and the people belongs to each part of the society.

Master of Business Administration (MBA) is running under **Bhavdiya Institute of Business Management (BIBM)** affiliated to **A.P.J. Abdul Kalam Technical University, Lucknow (AKTU) CODE : 743** and providing all Specialization offered by the university i.e. Finance, Marketing, Human Resources, Information Technology and International Business. The course is approved by **All India Council of Technical Education (AICTE)**. The institute is having the Intake of 60 seats. Bhavdiya Institute of Business Management is one of the leading institutes of Ayodhya and nearby Districts. Any graduate, with 50% marks (for SC/ST 45%) can get admission in MBA. We provide free education to SC/ST students. Institute has Teaching and Non-teaching staff as per norms and having a well equipped computer lab and Library with sufficient number of books and journals.

Training and Placement : A separate Training and Placement cell is being managed by **Mr. Punit Stephen (Director, T&P)** under supervision of **Dr. Shishir Pandey (Assistant Director BIBM).**

The placement cell of Bhavdiya group of institution is committed to the goal of facilitating and helping thousands of learners of whatever course they may be. The placement cell is responsible for the entire placement activities i.e. mock interviews, presentations, personality development and spoken English classes in the institution. The office liaises with various industrial establishment and corporate houses etc. which conduct distinguish guest lectures, industrial visits, internship, campus drives and select students from all disciplines.

➢ Students who are placed in different companies 2017-2018 and 2018-2019

S.No	Name	Class	Company's	Designation
1.	Somnath Gupta	MBA	Mahindra & Mahindra	Sales Advisor
2.	Shivani Rastogi	MBA	Cars24 Pvt. Ltd	Retail Associate
3.	Riya Srivastava	MBA	HDFC Life	SDM Corporate
4.	Akash Jaiswal	MBA	Bianca Industries	Dealers Sales Executive
5.	AkashTiwari	MBA	RBS Technologies Pvt. Ltd	Marketing coordinator
6.	Shikha Singh	MBA	Hindustan Security Services Pvt. Ltd.	Branch manager
7.	Rangoli Singh	MBA	Peace Softech Pvt. Ltd.	Business developer
8.	Praveen Kumar	MBA	Peace Softech Pvt. Ltd.	Business developer
9.	Anju Devi	MBA	Force Motors	Sales executive
10.	Fayazul Hasan	MBA	Bajaj Allianz, Faizabad	Team leader
11.	Rajneesh Verma	MBA	India-Insure	Senior Executive
12.	Saurabh Kasaudhan	BCA	Peace Softech Pvt. Ltd.	Business developer
13.	Mohd. Azhar	BCA	RBS technologies Pvt. Ltd. Noida	Software developer
14.	Dimpal Verma	MBA	Bajaj Allianz, Faizabad	Sales Executive

Toppers of the last four years students (MBA)

We always encourage and recognize our topper students for their success.

- 2015-16 Sabiha Khatoon 69.50 %
- 2016-17 UttamSoni 75.5% (honours)
- 2017-18 Rangoli Kumar 78.62% (honours)
- 2018-19 Somnath Gupta 75.91%

Bachelor of Business Administration (BBA) and **Bachelor of Computer Application (BCA)** are under graduation degree courses running in **Bhavdiya Educational Institute** (RMLAU CODE-275). The institute is affiliated to Dr. Ram Manohar LohiaAwadh University, Faizabad, U.P. Both the courses are approved by University Grant Commission, New Delhi.

Bachelor of Business Administration

BBA is a specialized course for Business Management in which student of intermediate having 40% marks from any discipline can get admission. Most of our students prefer MBA course after BBA, though we provide them the job opportunities. Some of our students are working in renowned companies.

The toppers of BBA last four years :

- 2015-16 Mohd. Fahim Khan 72.97%
- 2016-17 Ghanshyam 62.45%
- 2017-18 Antima Singh 72.25%
- 2018-19 Deepak Kumar 73.82%

Bachelor of Computer Application

To make aware with computer and software technology, we provide **BCA** course. We produce software developers through BCA and most of our students are working in different Software companies. A separate training session is also provided to the students to improve and aware with new technologies of software development. In BCA, student of intermediate with Mathematics having 45% marks (for SC/ ST 40%) can get admission.

The toppers of BCA last four years :

- 2015-16 Rakshit Gupta 77.75%
- 2016-17 Somnath Gupta 75.63%
- 2017-18 Mohd. Azeem 72.97%
- 2018-19 Dolly Pandey 77.86%

Extra-Curricular Events :

1. On 03 Aug 2018, Bhavdiya Institute of Business Management commenced its first event with orientation day, in which the introduction was given to the newly admitted Students of their respective departments, management authorities, HODs, teaching, non-teaching staffs and also with their seniors.
2. On 09 Aug 2018, career counseling was organized. In this event students were informed for the best career opportunities by Mr. Punit Stephen, Mr. Dhananjay Pandey and Miss. Supriya Singh
3. On 15 Aug 2018, Independence Day was celebrated by the student of whole campus. They had participated in several cultural programs.
4. On 21 Aug 2018, English speaking workshop was held in the BIBM seminar hall, in this event the student were told about the current scenario of English speaking and an importance of English communication by Mr. Punit Stephen.
5. On 23 Aug 2018, Resume Writing competition was held under the guidance of Mr. Punit Stephen, Miss. Supriya Singh and Miss Priyanka Pandey. In this competition, where the students of BBA, BCA and MBA had participated.
6. On 31Aug 2018, a guest lecture was held in the BIBM seminar hall. The lecture was delivered by Mr. Mandeep Singh Johal on "Financial advice and operations". The students were interacted during the session in the concern of legal advisory.
7. On 05Sept 2018, Teachers Day was celebrated by the students. In this event students paid regards to their teachers and performed various activities for celebration.
8. On 13 Sept 2018, industrial visit was conducted by Mr. Punit Stephen, Mr. Abhishek Bhatnagar and Miss Supriya Singh at Amrit bottlers Pvt. Ltd. In this visit the students have learnt about the working process of an organization.
9. On 18 Sept 2018, the students of BBA, BCA and MBA have categorized into seven groups and each group had given the PowerPoint Presentation on the industrial visit about the working culture of Amrit bottlers.
10. On 20 Sept 2018, the debate competition was held on the topic of OFFLINE vs ONLINE SHOPPING and conducted by Miss Supriya Singh. All the students

have categorized into A and B group. Both groups performed very well.

11. On 25 Sept 2018, the English elocution was held. In this event the students have learnt about the importance of verbal and non-verbal communication. By the role play the senior students have shown the organizational etiquettes to the new comers.

12. On 27 Sept 2018, the Placement cell organized a mock interview. It was conducted by Mr. Punit Stephen, Miss Supriya Singh, Mr. Manoj Shukla and Mr. PankajTiwari and students of BBA, BCA and MBA had participated with their hard copy of Resume.

13. On 04 Oct 2018, the two events were held at BIBM seminar hall, the cleanliness campaign as well as fresher's party. In these events all the students have cleaned up their department and after recess the senior students have given the fresher's party to their juniors.

14. On 11 Oct 2018, BIBM have conducted a business quiz competition in four rounds. Four teams have participated in this competition. The teams performed very well and got first, second and third position.

15. On 25 Oct 2018, MS office workshop was given by Miss. Priyanka Pandey in the BIBM seminar hall and students have learnt the use of MS office tools.

16. 0n 31st Oct 2018, a workshop on wordpress and python was organized by Softpro India Pvt. Ltd for the students of BCA and MBA (IT). In this workshop, students have learnt about the power of programming through practical implication given by YashiAsthana (CEO), Mr. Rohit Kumar (software engineer) and team.

17. On 02 Nov 2018, a vigilance awareness week was organized by Power Grid Corporation in the BIBM seminar hall. A speech competition was held in which all the students of BBA, BCA & MBA had participated and secured position.

18. On 03 Nov 2018, Diwalifest and Rangoli competition was held in the BIBM seminar hall. In this event all the students have categorized into seven groups and the students had set their stalls with different products related to Diwali celebration for sell.

19. On 15 Nov 2018, a workshop on motivation was organized by Mr. Manoj Kumar Shukla. In this workshop, students have learnt about how to overcome with the challenges of life and forgive attitude.

20. On 28 Nov 2018, an industrial visit was organized by Dr. Shishir Pandey and Mr. Punit Stephen at Raghuvanshi Printers, Quality printers and Bhavdiya Prakashan. All the students of BBA, BCA and MBA have learnt about the working culture of organization.

21. On 29 Nov 2018, a first campus drive was commenced by Placement cell for the students of BBA, BCA and, MBA where **RBS Technology, Noida** has selected students from BIBM department.

22. On 07 Dec 2018, a workshop on industrial training was organized by **Softonic Solution, Delhi** for the students of BCA and MBA (IT). The workshop was given by Mr. **Sandeep Kumar** (project manager of Softonic Solution)

23. On 13 Dec 2018, the students of BBA, BCA and MBAhave categorized into seven groups and each group had given the Power Point Presentation on the industrial visit about the working culture of Raghuvanshi printers, Quality printers and Bhavdiya Prakashan.

24. On 21 Jan 2019, a campus drive was held by **Hindustan security services** for all the students of BBA, BCA and MBA at BIBM department.

25. On 26 Jan 2019, Republic day was celebrated by the student of whole campus. They had participated in several cultural programs.

26. On 29 Jan 2019, a live program "**Pariksha ki baat PM ke saath'** was held by PMO with distinguishes colleges.

27. On 28 feb 2019, the Placement cell organized a mock interview. It was conducted by Mr. Punit Stephen, Ms. Supriya Singh, Ms. Priyanka Pandey and Mr. Manoj Shukla and the students of BBA, BCA and MBA had participated with their hard copy of Resume.

28. On 08 Mar 2019, an event on women empowerment was held by Supriya Singh at BIBM seminar hall. In this event all the students of BBA, BCA and MBA had participated in speech competition, skits and poetry. A motivational speech was also delivered by Dr. Pankaj Kumar Yadav (faculty of B.TC Deptt.).

29. On 14 mar 2019, a workshop on motivation organized by Mr. Manoj Kumar Shukla. In this workshop, students have learnt about the impotance of teamwork in organization.

30. On 28 mar 2019, a IT related movie shown to the students to make them aware of use and misuse of technology in modern era.

31. On 03 April 2019, an industrial visit organized by placement cell at SPENCERS' LUCKNOW, in this visit the students were demonstrated the merchandise of SPENCERS working style and their conducts. The students were given the technical exercises as well.

32. ON 11 April 2019, a workshop organized by MY CHATRI at BIBM seminar hall. In this workshop the students were told about the opportunity in IT sectors.

33. On 12 April 2019, students given presentation on industrial visit at Spencer's. The main purpose of this event was to create awareness regarding the functioning of the industry and also correlate theoretical knowledge with real time practice of the industry.

34. On 18 April 2019, farewell party organized by BIBM students for their senior students. It was an incredible evening hosted and organized by class junior students, to bid farewell for senior students. The programme started at 12.00 pm with Principal, Co-coordinator, Administrator Officer and their class teacher.

35. On 26 April 2019, a guest lecturer Mr. Amit Srivastava invited by the BIBM department from National P.G College Lucknow and the topic was web development.

❑

EVENT REPORT 2019-2020

1. On 28 Aug 2019, Bhavdiya Institute Of Business Management commenced its first event with orientation day, in which the introduction of BBA, BCA, B.Com and MBA given to the newly admitted Students of their respective departments, management authorities, HODs, teaching, non-teaching staffs and also with their seniors. In this event all the coordinators with rest of faculty members had given introduction with their respective class students.

2. On 03 Sep 2019, career counseling organized. In this event students were told about the opportunity for their future both in public and private sector. They were told about the skills that they have to develop in the corporate sector. Mr. Punit Stephen, Mr. Abhishek Bhatnagar, Miss Supriya Singh and Miss. Priyanka Pandey had conducted this event.

3. On 05 Sept 2010, Teachers Day and fresher's party celebrated by the students. In this event students' paid regards to their teachers and performed various activities for celebration and the students welcomed the newly admitted students. They had organized cultural activities in the presence of all faculty members.

4. On 12 Sep 2019, the debate competition organized by Mr.Punit Stephen, Miss Supriya Singh, and Miss Priyanka Pandey on the topic "Education system of India". The students had divided into two groups.In this, every group had to perform individually and contriving their opponent group.

5. On 19 Sep 2019, the motivational session organized by Mr. Dhananjay Singh with presence of all faculty members to appreciate students, so that can enhance their skills and bring out their furtive talents. In this event students have shown some motivational video clips with the introduction of some eminent personality of India.

6. On 26 Sep 2019, the Power Point presentation on "innovation is the new creation" held in the BIBM seminar hall. In this event the students had presented their PowerPoint presentation on the previous motivational videos. They were divided into three groups.

7. On 10 oct 2019, the cleanliness drive "Swachh Bharat Abhiyaan" organized by the students of BBA, BCA, B.Com and MBA.the main purpose of this event is to develop awareness about the cleanliness.

8. On 19 Oct 2019, the workshop on "mission skill connect" organized by MYCHATRI in the BIBM seminar hall. In this event Mr. Shishir Pandey (sales and marketing manager, My Chatri) had told about the different computer language and the upcoming need in the corporate sector and students asked some questions regarding the development of technical skill.

9. On 24 Oct 2019, the students of BBA, BCA, B.Com and MBA organized Diwali fest and Rangoli competition on the occasion of auspicious festival of Deepawali. All the students of department had categorized into four groups and they prepared their stall with handmade products. The event had conducted in the supervision of Dr. Shishir Pandey, Miss Supriya Singh and Miss Priyanka Pandey. The main purpose of this event was to extract the creative ability of the students.

10. On 25 oct 2019, an industrial organized by Dr. Shishir Pandey, Mr. Punit

Stephen and Miss Supriya Singh at Yash Papers Ltd. this visit was really very fruitful for all the students where they have seen the procedure and process of paper manufacturing. Students have also learnt about how to manage employee and what the role of different position in the company are. They also introduced with a new unit "chuk".

11. On 31 oct 2019, BIBM and BEI department organized the "Sardar valla- bhai patel jayanati". In this event all the students of BBA, BCA, B.COM and MBA had given tribute to the "iron man of India" and also taken pledge of unity and integrity. The flower homage was given by all the faculty members of BIBM and BEI seminar hall.

12. On 01 Nov 2019, the power grid corporation organized the speech competition on "Eradicate corruption build new nation" with association of BIBM department. In this event the fifteen students of the department participated in the speech competition. The chief guest was Mr. Jagvijay Singh (deputy general manager Powergrid Corporation).

13. On 14 Nov 2019, PowerPoint presentation organized on industrial visit at "Yash Paper Ltd and CHUK". The students of MBA, BBA, BCA and B.Com categorized into six groups and they have presented their observation and knowledge of previous industrial visit in presence of all faculty members.

14. On 21 nov 2019, a mock interview conducted by training placement cell for the students of MBA, BBA, BCA and B.Com. The purpose of this mock interview was to develop the etiquettes regarding interviews and also improve students speaking skill and knowledge. This mock interview had conducted successfully with association of Dr. Shishir Pandey (Asstt. Director, BIBM), Mr. Punit Stephen (T&P Director), Miss Supriya Singh, Miss Priyanka Pandey and Mr. Manoj kumar Shukla.

15. On 9 Dec 2019, BIBM and BEI department organized one day seminar on **"Contemporary issue on E-Commerce"**. This key note speaker of this event was **Dr. Ahmad Tasnim Siddiqui (Astt. Professor, Taif University, UAE)**. In this event selected twelve students of the department have presented their researcher paper on the given topic in the presence of all faculty members.

Summary :

We continuously upgrade the benchmark through latest teaching tools, updated training modules, with different activities and events to cope with ever changing corporate and education scenario. All the students are groomed in a real life corporate environment to immediately adapt themselves to high-pressure working environment after passing out from the institute.

One of the most important things we do for students is not just taught them specific knowledge and functional skills, but help them match their interests to their career path. The emphasis is on developing managerial competence and enhancing personal effectiveness, with a vision to take on the challenges of the future.The institute is thankful to hard working staff, learned faculty members and the people who always bless us by their support and development of the institution. Last but not the least our students are cooperative and hard working. They have proven their ability and talent to accomplish our vision. Their grasping power is competitive as they follow their mentors as they are expected.

We hope for better future for this area and other places where we are providing education to the students.

❑

वार्षिक रिपोर्ट : शिक्षक-शिक्षा विभाग

–अवनीश शुक्ल
विभागाध्यक्ष/समन्वयक

भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स में शिक्षक-शिक्षा विभाग की स्थापना सत्र 2013 में बी.टी.सी. कोर्स के साथ भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट संस्थान में 50 सीटों से हुई थी। वर्तमान में भवदीय ग्रुप में शिक्षक- शिक्षा विभाग के तीन संस्थान यथा– भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, श्री साईंराम इंस्टीट्यूट औ
इंस्टीट्यूट संचालित है
एड्. (पूर्व प्रचलित नाम बी.टी.सी.) के कुल 680 प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है
टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में सत्र 2018-19 में 60 तथा सत्र 2019-20 में 100 प्रशिक्षु प्रशिक्षण ले रहे है
क्रम में श्री साईंराम इंस्टीट्यूट में सत्र 2018-19 में 65 तथा सत्र 2019-20 में 150 औ
इंस्टीट्यूट के डी.एल.एड्. सत्र 2018-19 में 50 तथा 2019-20 में 100 औ
57 तथा 2019-20 में 100 प्रशिक्षु कुशल प्राध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है
इंस्टीट्यूट को बी.एड्. एवं डी.एल.एड्. दो कोर्स का अनुमोदन प्राप्त है

डी.एल.एड्. (पूर्व प्रचलित नाम बी.टी.सी.) का अनुमोदन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद जयपुर तथा सम्बद्धता एस.सी.ई.आर.टी. प्रयागराज उ. प्र. से प्राप्त है
परिषद जयपुर तथा सम्बद्धता डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय से है

संस्थान के बी.एड्. एवं डी.एल.एड्. कोर्सों में विगत वर्षों का शै
है
16%) अंक प्राप्त कर संस्थान में सर्वोच्च स्थान हासिल किया है
भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की सत्या पाण्डेय ने (90.28%) अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया है
कटियार (91.28%) अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रहीं। विभाग के सै
पात्रता परीक्षा (UPTET) व केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET) में अच्छे अंक प्राप्त कर संस्थान का नाम रोशन किया है
कक्षाओं के समापन के उपरान्त (UPTET) एवं (CTET) की तै
किया जाता है
चेयरमै
के मार्ग निर्देशन एवं परामर्श हेतु विशेष व्यवस्था की गई है
व्यवस्था है
में प्रशिक्षण प्राप्त सै
जूनियर हाईस्कूल एवं माध्यमिक विद्यालयों में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत है
विद्यालयों हेतु उ. प्र. राज्य सरकार द्वारा निकाली गई 68,500 भर्ती में संस्थान के 35 प्रशिक्षुओं का चयन सहायक अध्यापक के पद पर हुआ है

संस्थान के प्रशिक्षु पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), रोवर्स-रेंजर्स, रेडक्रास जै
सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते है
अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर रंगोली, मेंहदी,

वाद-विवाद तथा चित्रकला जै
आयोजन किया जाता है
प्रतिभाओं को निखारने का अवसर प्राप्त होता है
30 नवम्बर, 2018 को भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट को प्रथम जिला स्तरीय डी.एल.एड्. प्रशिक्षु, खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजक बनाया गया जिसमें अयोध्या तथा अम्बेडकरनगर जिले के विभिन्न तहसीलों के डी.एल.एड्. प्रशिक्षुओं ने क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, बै
कई अन्य खेल प्रतियोगितओं में भाग लिया, जिसमें सोहावल तहसील की टीमों ने सर्वाधिक 07 खेलों में प्रथम स्थान हासिल कर ऑलराउण्डर विजेता बने। प्रतिभागियों को संयुक्त शिक्षा निदेशक श्रीमती संध्या श्रीवास्तव (प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अयोध्या) तथा डॉ. अवधेश कुमार वर्मा (सचिव भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स) ने शील्ड एवं मेडल देकर सम्मानित किया।

राष्ट्रीय खेल दिवस (29 अगस्त) के अवसर पर शिक्षक-शिक्षा एवं भवदीय ग्रुप के अन्य संस्थानों के क्रिकेट मै
एजूकेशनल की टीम विजयी रही। 05 सितम्बर, 2019 को डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन् का जन्म दिवस शिक्षक दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया गया। प्राचार्य डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव एवं विभागाध्यक्ष अवनीश शुक्ल ने केक काटकर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

18 जनवरी, 2020 को स्वामी विवेकानन्द जी के शै
एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि स्वामी शुभंकर जी महाराज (रामकृष्ण आश्रम अयोध्या) थे। इस एक दिवसीय संगोष्ठी में विभाग के प्राध्यापकों ने विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला तथा प्रशिक्षुओं को स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों को आत्मसात् करने की सलाह दी। 25 जनवरी, 2020 (राष्ट्रीय मतदाता दिवस) के अवसर पर मतदाताओं को मतदाता सूची में नाम बढ़वाने तथा मतदाता सूची में गलत जानकारियों को सही कराने एवं लोकतंत्र में भागीदारी बढ़ाने हेतु मतदाता जागरूकता रै
गई, जो संस्थान से होते हुए आस-पास के गाँवों सीवार, बरईकला, बेगमगंज तथा अख्तियारपुर के लोगों को जागरूक किया गया तथा मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की शपथ भी दिलाई गयी। ❑

मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी, वहाँ आप ही स्वर्ग बन जायेगा। **—तिलक**

विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

आज के लिए और सदा के लिए सबसे बड़ा मित्र है अच्छी पुस्तक। **—टपर**

वार्षिक रिपोर्ट : कृषि संकाय

—डॉ. अरुण कुमार
विभागाध्यक्ष-कृषि संकाय

भवदीय एजूकेशनल इंस्टीट्यूट के अन्तर्गत कृषि संकाय विभाग की शुरुआत सन् 2017 में 320 सीटों के साथ हुई थी। प्रथम वर्ष (सत्र 2017-18) में 84 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया था, जिसमें से 61 छात्र-छात्राएँ परीक्षा में सम्मिलित हुए थे, जिनका परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा था। जिसमें प्रथम स्थान बद्रीश गुप्ता (76.60%), द्वितीय स्थान कन्है
30%) एवं तृतीय स्थान संयुक्त रूप से अनुपम कुमार औ

विगत सत्र की भाँति इस सत्र 2018-19 में प्रथम वर्ष में 293 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया, जिसके सापेक्ष परीक्षा में प्रथम वर्ष में 218 छात्र-छात्राएँ एवं द्वितीय वर्ष में 39 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुई थीं। प्रथम वर्ष सत्र 2018-19 के घोषित परीक्षा में सम्मिलित 218 परीक्षार्थियों में से 209 परीक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित हुए। परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 95.87 रहा। कुल सम्मिलित 193 छात्रों (पुरुष) के सापेक्ष 186 छात्र उत्तीर्ण घोषित हुए एवं उत्तीर्ण प्रतिशत 96.37 रहा, जबकि कुल सम्मिलित 25 छात्राओं (महिला) के सापेक्ष 23 छात्राएँ उत्तीर्ण घोषित हुईं एवं उत्तीर्ण प्रतिशत 92 रहा। जिसमें 100 प्रतिशत प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए है
कु. कामिनी यादव ने 87.67 प्रतिशत अंक प्राप्त करके संस्थान में प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान अभिषेक वर्मा (84.66%) एवं तृतीय स्थान अवनीश कुमार दुबे (84.16%) ने प्राप्त किया।

द्वितीय वर्ष सत्र 2018-19 के घोषित परीक्षा में सम्मिलित 39 परीक्षार्थियों में से 39 परीक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित हुए। परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 100 रहा। कुल सम्मिलित 33 छात्रों (पुरुष) के सापेक्ष 33 छात्र उत्तीर्ण घोषित हुए एवं उत्तीर्ण प्रतिशत 100 रहा, जबकि कुल सम्मिलित 06 छात्राओं (महिला) के सापेक्ष 06 छात्राएँ (महिला) उत्तीर्ण घोषित रहीं एवं उत्तीर्ण प्रतिशत 100 रहा। जिसमें 100 प्रतिशत प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए है
करके संस्थान में प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान संयुक्त रूप से शाजिया बानो औ
तृतीय स्थान अनुपम कुमार (77.17%) ने प्राप्त किया।

वर्तमान शै
166 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया। पूर्व में कृषि स्नातक पाठ्यक्रम वार्षिक था। कृषि स्नातक की शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए सेमेस्टर प्रणाली के लिए संस्थान का प्रबन्धतंत्र एवं प्राचार्य डॉ. रजनीश कुमार श्रीवास्तव, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के कुलपति जी को ज्ञापन दिया, जिसके फलस्वरूप विश्वविद्यालय प्रशासन ने Fifth Dean Committee का सेमेस्टर पाठ्यक्रम हो गया है
प्रगति पर है

❑

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने की लगन का। *—प्रेमचन्द*

Recent development in Banking and Financial Services in India

–Dr. Shishir Pandey
Professor (B.I.B.M)

The emergence of innovative financial technology has revolutionized financial services in India as well as the banking sector. It has resulted in the introduction and advancement of several technology trends that have contributed to the radical transformation, growth, and advancement of these industries. The alliance between the innovative technologies of the financial sector and banking services has changed the conventional systems of handling money, and this collaboration is expected to create a massive shift with emerging trends in financial services.

Few Trends in Banking and Financial Services in India That Are Changing the Entire Scenario

Digitization :

With the rapid growth of digital technology, it became imperative for banking and financial services in India to keep up with the changes and innovate digital solutions for the tech-savvy customers. Besides the financial institutions, insurance, healthcare, retail, trade, and commerce are some of the major industries that are experiencing the enormous digital shift. To stay competitive, it is necessary for the banking and financial industry to take the leap on the digital bandwagon.

Modern trends in banking system make it easier, simpler, paperless, signatureless and branchless with various features like IMPS (Immediate Payment Service), RTGS (Real Time Gross Settlement), NEFT (National Electronic Funds Transfer), Online Banking, and Telebanking. Digitization has created the comfort of "anywhere and anytime banking." It has resulted in the reduced cost of various banking procedures, improved revenue generation, and reduced human error. Along with increased customer satisfaction, it has enabled the customers creating personalized solutions for their investment plans and improves the overall banking experience.

Enhanced Mobile Banking :

Mobile banking is one of the most dominant current trends in banking systems. As per the definition, it is the use of a smartphone to perform various banking procedures like checking account balance, fund transfer, and bill payments, without the need of visiting the branch. This trend has taken over the traditional banking systems. In the coming years, mobile banking is expected to become even more efficient and effortless to keep up with the customer demands. Mobile banking future trends hint at the acquisition of IoT and Voice-Enabled Payment Services to become the reality of tomorrow. These voice-enabled services can be found in smart televisions, smart cars, smart homes, and smart everything. Top industry leaders are collaborating to adopt IoT-connected networks to create mobile banking technologies that require users' voice to operate.

UPI (Unified Payments Interface) :

UPI or Unified Payments Interface has changed the way payments are made. It is a real-time payment system that enables instant inter-bank transactions with the use of a mobile platform. In India, this payment system is considered the future of retail banking. It is one of the fastest and most

secure payment gateways that is developed by National Payments Corporation of India and regulated by the Reserve Bank of India. The year 2016 saw the launch of this revolutionary transactions system. This system makes funds transfer available 24 hours, 365 days unlike other internet banking systems. There are approximately 39 apps and more than 50 banks supporting the transaction system. In the post-demonetization India, this system played a significant role. In the future, with the help of UPI, banking is expected to become more "open."

Digital-Only Banks :

It is a recent trend in the Indian financial system and cannot be ignored. With the entire banking and financial services industry jumping to digital channels, digital-only banks have emerged to create paperless and branchless banking systems. This is a new breed of banking institutions that are overtaking the traditional models rapidly. These banks provide banking facilities only through various IT platforms that can be accessed on mobile, computers, and tablets. It provides most of the basic services in the most simplified manner and gives access to real-time data. The growing popularity of these banks is said to be a real threat to traditional banks.

ICICI Pockets is India's first digital-only bank. These banks are attractive to the customers because of their cost-effective operating models. At the same time, though virtually, they provide high-speed banking services at very low transaction fees. In today's fast lane life, these banks suit the customer needs because they alleviate the need of visiting the bank and standing in a queue.

Cloud Banking :

Cloud technology has taken the world by storm. It seems the technology will soon find its way in the banking and financial services sector in India. Cloud computing will improve and organize banking and financial activities. Use of cloud-based technology means improved flexibility and scalability, increased efficiency, easier integration of newer technologies and applications, faster services and solutions, and improved data security. In addition, the banks will not have to invest in expensive hardware and software as updating the information is easier on cloud-based models.

Biometrics :

Essentially for security reasons, a Biometric Authentication system is changing the national identity policies and the impact is expected to be widespread. Banking and financial services are just one of the many other industries that will be experiencing the impact. With a combination of encryption technology and OTPs, biometric authentication is forecasted to create a highly-secure database protecting it from leaks and hackers attempts. Financial services in India are exploring the potential of this powerful technology to ensure sophisticated security to customers' account and capital.

These are some of the recent trends in the banking and financial sector of India and all these new technologies are predicted to reshape the industry of business and money. The future is going to bring upon a revolution of sorts with historical changes in traditional models. The massive shift in the landscape has few challenges. Nonetheless, the customers are open to banking innovations and the government is showing great support with schemes like "Jan DhanYojana," which aims at proving a bank account to every citizen. Meanwhile, the competition from the foreign and private sector banks have strained the government regulators, nationalized banks and financial institutions to adopt new technology in order to stay relevant in the race.

❑

Personality Development

– *Punit Stephen*

Assistant Professor- BIBM

Intro-

Every individual has his own characteristic way of behaving, responding to emotions, perceiving things and looking at the world. No two individuals are similar.

You might like going out for parties but your friend might prefer staying back at home reading his/her favourite book. It is really not necessary that if you like partying around, your friend will also like the same. Here comes the role of personality.

Personality is nothing but the aggregate conglomeration of memories and incidents in an individual's entire life span. Environmental factors, family background, financial conditions, genetic factors, situations and circumstances also contribute to an individual's personality.

Personality also influences what we think, our beliefs, values and expectations. What we think about others depends on our personality.

In a layman's language personality is defined as the personal qualities and characteristics of an individual. Personality is how we interact with others. Personality is a sum of characteristics of an individual which makes him different from the others. It is our personality which makes us unique and helps us stand apart from the crowd.

Determinants of Personality

Following are the factors which help in shaping one's personality:

1. Heredity - Heredity refers to factors that are determined once an individual is born. An individual's physique, attractiveness, body type, complexion, body weight depend on his/her parents biological makeup.

2. Environment - The environment to which an individual is subjected to during his growing years plays an important role in determining his/her personality. The varied cultures in which we are brought up and our family backgrounds have a crucial role in shaping our personalities.

3. Situation- An individual's personality also changes with current circumstances and situations. An individual would behave in a different way when he has enough savings with him and his behavior would automatically change when he is bankrupt.

An individual's appearance, character, intelligence, attractiveness, efficiency, style determine his/her personality.

Let us go through the importance of personality development.

Personality development grooms an individual and helps him make a mark of his/her own. Individuals need to have a style of their own for others to follow them. Do not blindly copy others. You need to set an example for people around. Personality development not only makes you look good and presentable but also helps you face the world with a smile.

Personality development goes a long way in reducing stress and conflicts. It encourages individuals to look at the brighter sides of life. Face even the worst situations with a smile. Trust me, flashing your trillion dollar smile will not only melt half of your problems but also evaporate your stress and worries. There

is no point cribbing over minor issues and problems.

Personality development helps you develop a positive attitude in life. An individual with a negative attitude finds a problem in every situation. Rather than cribbing and criticizing people around, analyze the whole situation and try to find an appropriate solution for the same. Remember, if there is a problem, there has to be a solution as well. Never lose your cool. It would make the situation worse.

Personality development plays an essential role not only in an individual's professional but also personal lives. It makes an individual disciplined, punctual and an asset for his/her organization. An in-disciplined individual finds it difficult to survive in the long run. Personality development teaches you to respect not only your Boss and fellow workers but also family members, friends, neighbors, relatives and so on. Never make fun of anyone at the workplace. Avoid criticizing and making fun of your fellow workers.

Personality development helps an individual to inculcate positive qualities like punctuality, flexible attitude, willingness to learn, friendly nature, eagerness to help others and so on. Never hesitate to share information with others. Always reach office on time. Some people have a tendency to work till late. Late sittings not only increase your stress levels but also spoil your personal life. Sitting till late at the office indicates that an individual is extremely poor in time management skills.

Let us go through some tips for enhancing one's personality :

- **Smile a lot-** Nothing works better than a big smile when it comes to interacting with people around. Do not forget to flash your trillion dollar smile quite often. Believe me, it works! As they say "*a smile is a curve that sets everything straight*". A smiling face wins even the toughest soul. Wear your smile while interacting with others. Smile not only helps in enhancing an individual's personality but also winning other's heart.
- **Think positive-** It is really essential to think positive. Remember there is light at the end of every dark tunnel. Do not always think negative as it not only acts as a demotivating factor but also makes an individual dull and frustrated. Don't get upset over minor things. Be a little flexible and always look at the broader perspectives of life.
- **Dress Sensibly-** Dressing sensibly and smartly go a long way in honing one's personality. One needs to dress according to the occasion. How would a female look if she wears a sari to a discotheque? Obviously ridiculous! No matter how expensive your sari is, you can't wear it to a night club or a pub where everyone is dressed in smart casuals. Price has nothing to do with smart dressing. **An individual who is well dressed is respected and liked by all**. No one would take you seriously if you do not wear suitable clothes fitting with occasions. Do take care of the fit of the dress as well. An individual should wear clothes as per his/her body type, height, physique and so on. Someone who is bulky would not look very impressive in body hugging clothes. It is not necessary that something which looks good on your friend would also look good on you. Wear the right make up. You do not have to apply loud make up to look good and attractive. Even minimal make up, if applied sensibly can really make you stand apart from the rest.

- **Be soft-spoken-** Do not always find faults in others. Fighting and quarrelling lead to no solution. Be polite with others. Be very careful of what you speak. Avoid being rude and short tempered.
- **Leave your ego behind-** An individual needs to hide his ego everywhere he goes. Be it office or workplace you need to leave your ego behind if you wish to win appreciation from others. An individual who is good from within is loved by all.
- **Avoid Backbiting- Backstabbing and criticizing people are negative traits which work against an individual's personality**. Learn to appreciate others. If someone has done some extraordinary task, do not forget to give a pat on his/her back. Believe me; the other person will speak high of you even when you are not around. Do not spread unnecessary rumours about someone. An individual should not try to interfere too much in someone's personal life. Dishonesty, cheating, lies tarnish your image and people start avoiding you in the long run. If your friend is seeing someone, you have absolutely no rights to make his/her affair national news.
- **Help others-** Do not always think of harming others. Share whatever you know. Remember no one can steal your knowledge. Always help others.
- **Confidence-** Confidence is the key to a positive personality. Exude confidence and positive aura wherever you go.
- **A Patient listener-** Be a patient listener. Never interrupt when others are speaking. Try to imbibe good qualities of others.

❑

Special issue on operations research in Healthcare

—Dhananjay Singh

Assistant Professor (B.I.B.M)

Operations research is the most important part in mathematics as well as various fields i.e. healthcare, military Some of the fields that are included in Management Science are: mining Decision analysis, Engineering, forecasting, Game Theory, industrial engineering, Logistics, mathematical modeling.

"The OR is better for upcoming generation". which can define as:

An operations researcher follows a scientific approach to suggest methods of improving real life problems such as the above, and uses techniques that typically overlap with mathematics, statics and computer science calculate best or optimal solutions. OR it a powerful tool in hands of decision-makers and manager, since it allows them to make high-quality decision that are scientifically justified. Such decisions may be found in, for example, factories, business, banks mining, the construction industry, agriculture, and ecology *And Consulting environment.*

Operations Research for Health care (ORHC) focuses of the development and uses of operations research in health and health care.

ORHC encourages contribution related to typical problem areas of healthcare such as logistics, finance, and management, accounting, policy, logistics and architecture as well as hospitals, practices, and care (including home care and long term care).

Demographic change and increasing health experiment in the world make the health care delivery research a hot topic. Hospitals in the world are becoming larger and larger to take advantage of the scale economy but also become more and more complex to design and to operate. Ageing population makes chronic disease increasingly important and leads to the need of bitter disease prevention, diagnostic, treatment planning and proactive cares. Patients are more and more concerned by Healthcare safety and traceability. Healthcare system is also changing and new health services such as the home health care and telemedicine's are growing. Most hospitals used to empiric management are not prepared for and innovative system engineering approaches are needed.

Recent development of Advanced medical Technologies makes the system engineering approach possible. The increasing ability of healthcare it relevant data makes possible better disease prevention, diagnostic and healthcare system operations. Automations Technologies such as robotics and ICT technologies are making healthcare delivery more efficient and safer. Innovative operations research(OR) technique have been developed for a wide range of healthcare application such as operating room planning, emergency department staffing, breast cancer screening, radiotherapy treatment planning, home healthcare planning, long-term care planning and scheduling. Facing these challenges, the very first attempt of the hospitals is to

Apply modern management techniques from other industries. This leads to numerous hospital projects on learn management, quality control, inventory control, etc.

Most of these projects had Limited impact due to their strong dependence on experiences of consulting firms gained from other industries and hardly took into specific feature of. Hospitals realize more and more the need of original research taking into specific features of healthcare industry.

Various scientific communicated quickly in bread major healthcare challenges from different perspectives Emerging hot topics of the robotics & automation community included lab automation, lab-on-chip surgical in navigation, nanoscale drug delivery, medical imaging analysis,e.t.c. Other communities such as (OR) and industrial engineering (IE) have very active in healthcare Management Research. Major (OR) and IE journals publish more and more papers in healthcare and OR/IE conference often have very popular sessions in healthcare such as surgery planning/ scheduling, nurse roistering , emergency department analysis, ambulance locations dispatching and so on. Motivated by the above observations, **IJPR** responded to the increasing submissions in healthcare and to clearly define its scope.

For this purpose, the goal of this IJPR special issue is to provide a comprehensive view of health service improvement by system engineering approaches such as OR,IE and control theories.

❑

"Working Together Hand In Glove"

—Shivendra Pratap Singh
Asstt. Professor, BIBM

"Individually, we are one drop. Together, we are an ocean"

Working with others, whether as an individual or as a leader of an essential part of every individual, managers and entrepreneur's remit? Team working is rapidly becoming the preferred practice in many organizations as traditional corporate hierarchies give way to flat, multi skilled working methods.

The famous quotes by ***Ryunosuke Satoro,*** "Individually, we are one drop. Together we are an ocean "reminds me of a good Chinese story which tells us the importance of working together.

Simple tips which can help us in effectively with others :

1- Realize that we need others : No matter how independent we are as individuals, we depend on others to define ourselves and create purpose in our lives.

2- Get them to identify with us : Finding out how successful people get others to work with them or for them is always interesting. The bottom line is that we need to make an effort to identify with others and to get others to identify with us.

3- Don't worry so much about getting credit : We may need to work with others as partners or in teams, or working under another person or within a company. Our job, always, is to make that person above us look good at the same time that we get what we need from the job. Actually, the better job we do, the better it is for the person above us. Don't worry about the boss getting credit for what we do.

4- Earn the respect of others : Respect is a strong motivator for success. But it's not easy to achieve the kind of success and respect we wanted. It requires a consistency of behavior that is truly impressive. It requires that we treat others in a honest and caring way.

5- Watch our words : To successful people, working with others means knowing what to say – and what not to say.

6- Handle difficult people with care : Some jobs require better social skills than others. From those who must constantly interact with others, there's a good chance we'll encounter difficult people.

7- Have a healthy skepticism of authority : Like Buddha says, Do not believe in anything simply because we have heard it. Do not believe in anything simply because it is spoken and rumored by many. But after observation and analysis, when we find that anything agrees with reason and is conductive to the good and benefit of the one and all, then accept it and live up to it.

8- Don't be afraid to depend on others : Don't be afraid to ask for help; our success might depend on it. There is a magic that results when a person invests in us. He becomes a big-time investor in our success, a stockholder I our dreams.

Henry Ford **said, "**Coming together is a beginning. Keeping is a progress. Working together is success. What are we waiting for, "Let's come together, keep together and work together to be successful in personal and professional life.

❑

Long Refreshment In Toxic Workplace Environment

—By Priyanka Pandey
Assistant Professor at B.E.I.

"Adopting the right attitude can convert a negative stress into a positive one."

Toxic workplace can be defined as a workplace where you are surrounded by lot of negativity and negative people which harms your morale every day.

When you enter as an employee in an organization then you meet with new people and you enter in new environment. It doesn't possible for you to have meet with the same kind of people that you are. Never think that everything is going to be in your favor so you have to prepare yourself to handle all the distress and negative thoughts of other in your workplace.

Being surrounded by toxic people in any sphere of life can be very frustrating.Sometimes it pays to take a risk and up and out your job. There is not enough money in the word to make you truly happy. And if anyone tells you differently, they are lying to you.In your frustration you may be decided to leave that organization. But your decision would not give you proper satisfaction in life, to overcome from this situation of life you have to change your attitude.

This story may help you to change your attitude and thoughts of life and give you happiness in life :

In acertain company a young employee went to the H.R. head and said "I can't work here any longer". I want to quit this job.

The H.R. head asked, "Why? Please tell me what happened?"

The whole atmosphere is so toxic to my mind, replied the employee.There are people here who are into a lot of politics and there are those who talk negative all the time. Some spent most of their time into gossiping then working I don't think that I can handle this any longer.

The H.R. head said ok, but I have a request to make before you leave.

The employee asked "please tell me what I can do for you Sir?"

The H.R. head said that I want you to do this one last thing sincerely. I want you to take a glass of water filled it to the brim and walk around the office area three times without spilling a single drop of water on the floor after that you may leave the job if you wish.

Though it sounded weird, the employee thought that's the matter of just few minutes anyways he took a glass full of water and walk three times around the office floor and then he came to the H.R. head to tell him that he has done.

H.R. head asked when you were walking around the floor did you see any

employee speaking badly about another employee.Any gossips?Any disturbances?

The employee replied: NO.

The H.R. head further asked said did you see any employee see another employee in a wrong way

Again employee said No I haven't seen all these then the H.R. head asked do you know why?

Because you were focused on a glass and make sure you didn't tip over and spill any water. And the same goes with our life. When we focus on our priorities we don't have time to see all the drama around us, the mistakes of others, gossips, politics, negativity etc.The fact is anywhere we go. Weare going to find toxic people. Change of job orchange of situation doesn't necessarily ensure freedom from such people. we should certainly do what we can do positively change thing saround us but when we know that we have done our best and things still remains more or less the same we should shift our focus to the glass of water means our priorities our growth our excellence and then we won't' be as much affected by the negativity around us and it isabsolutely beyond our capacity to handle. We may actually need a change knowing well that the new job or the new situation will bring fresh complexity along with them as well

From among the many exercises that we use in therapy to help people change the way they think, here are seven ways to tame your inner critic :

1. Pay attention to your thoughts. You're so used to hearing your own narration that it's easy to become oblivious to the messages you're sending yourself. Start paying close attention to your thoughts and you may discover that you call yourself names or talk yourself out of doing things that are hard.

It's estimated that you have around 60,000 thoughts per day. That's 60,000 chances to either build you up or tear yourself down. Learning to recognize your thought patterns is key to understanding how your thinking affects your life.

2. Change the channel. While problem-solving is helpful, ruminating is destructive. When you keep replaying a mistake you made in your head over and over again or you can't stop thinking about something bad that happened, you'll drag yourself down.

The best way to change the channel is by getting active. Find an activity that will temporarily distract you from the negative tapes playing in your head. Go for a walk, call a friend to talk about a different subject, or tackle a project you've been putting off. But refuse to sit and listen to your brain beat you up.

3. Examine the evidence. Your thoughts aren't always true. In fact, they're often exaggeratedly negative. It's important to examine the evidence before you believe your thoughts.

If you think, "I'm going to embarrass myself when I give that presentation," pause for a minute. Take out a piece of paper and write down all the evidence that indicates you're going to fail. Then, list all the evidence that you *aren't* going to fail. Looking at the

evidence on both sides can help you look at the situation a little more rationally and less emotionally. Reminding yourself that your thoughts aren't 100 percent true can give you a boost in confidence.

4. Replace exaggeratedly negative thoughts with realistic statements. When you recognize that your negative thoughts aren't completely true, try replacing those statements with something more realistic. If you think, "I'll never get a promotion," a good replacement statement might be, "If I work hard and I keep investing in myself, I may get promoted someday."

You don't need to develop unrealistically positive statements; overconfidence can be almost as damaging as serious self-doubt. But a balanced, realistic outlook is key to becoming mentally stronger.

5. Consider how bad it would be if your thoughts were true. It's tempting to envision a misstep turning into an utter catastrophe, but often the worst-case scenario isn't as bad as we fear. If you predict you're going to get rejected for a job, ask yourself how bad would that actually be? Rejection stings but it's not the end of the world. Reminding yourself that you can handle tough times increases your confidence. It can also decrease much of the dread and worrisome thoughts that can stand in your way.

6. Ask yourself what advice you'd give to a friend. It's often easier to be more compassionate toward other people than to yourself. For example, while you might call yourself an idiot for making a mistake, it's unlikely you'd say that to a loved one. When you're struggling with tough times or doubting your ability to succeed, ask yourself, "What would I say to a friend who had this problem?" Then, offer yourself those kinds, wise words.

7. Balance self-improvement with self-acceptance. There's a difference between telling yourself that you're not good enough and reminding yourself that there's room for improvement. Accept your flaws for what they are right now while committing to improvement in the future. Although it sounds a bit counterintuitive, you can do both simultaneously: You might accept that you feel anxious about an upcoming presentation at work while also making a decision to improve your public speaking skills. Accept yourself for who you are right now while investing in becoming an even better version of yourself down the road.

Conclussion :

➢ **Train Your Brain to Think Differently**

Your mind can be your best asset or worst enemy. It's important to train it well. The good news is that mental strength exercises will help you silence the toxic self-criticism for good. With practice, you can develop a more productive inner dialogue that will fuel your efforts to reach your goals. ❑

सफलता न मिलने का कारण कार्य–प्रणाली में कहीं न कहीं खामी है
आत्मावलोकन व आत्मविश्लेषण से काफी हद तक सुधार किया जा सकता है

Is Your Cloud Storage Solution Safe? Here's How to Tell

Er. Sumit Srivastava

Asstt.Professor, BEI

Millions of everyday consumers, professionals, and business owners now rely on cloud storage to share, back up, and store information long-term. And for good reason—cloud storage allows you to access your files from anywhere, and it's often cheaper than mainstream data storage solutions. It also claims to be highly secure—but how secure is it really?

How Cloud Storage Works

First, let's start with a briefer on how cloud storage works. When you upload a file to the cloud, you aren't sending it to some extra dimensional, ethereal plane. Instead, you're sending your data over the internet to an external server, usually a data center owned by the cloud storage company. That data is also likely backed up at multiple data centers, in case one happens to go down. Then, when you wish to retrieve those files, you'll use the internet to access the data center and retrieve them.

In many cases, your data will be encrypted, and in most cases, you'll have a username and password to protect your specific account. However, consumers may also have the option of layering additional encryption onto their accounts, such as encrypting Google Drive for stronger security.

Points of Vulnerability

One of the best ways to determine the security of a system is to look for inherent points of vulnerability. These are some of the most common points that exist:

- **Data center integrity.** The data center itself may be physically vulnerable. If the data center isn't properly maintained, or if it's vulnerable to a natural disaster like an earth quake or flood, it could result in massive data loss. Most cloud storage companies compensate for this by having one or more redundant backups, in geographically separated locations (often across the country).
- **Data center encryption.** Next, you can look at the security of the data centers being used. Hypothetically, if a cybercriminal is able to gain access to the data center, they could gain access to thousands, if not millions of consumer files. Generally, data centers are well-protected, tours aren't allowed, vehicles must have special passes, and the hard drives are physically unreadable to outside prying eyes. This isn't the case for all data centers, but it's quickly becoming the standard.
- **Internet connection vulnerability.** Don't forget, the vulnerability could be on your side too. You'll be sending and receiving files with the distant data center over an internet connection, which could easily be compromised if you aren't careful. If you don't use a strong password for an encrypted Wi-Fi connection, or if you use a public network, your account could be compromised.
- **Consumer password vulnerability.** Of course, it's also possible for your account to be compromised the old-fashioned way. If you choose a weak

password, or one that's easy to guess, or if you give your password away to someone untrustworthy, someone could log in and gain access to all your files.

How to Determine Cloud Storage Security

As you can see, some of these factors are up to the consumer. You'll need to follow best practices for cyber security if you want to make sure your data isn't compromised by a shoddy internet connection or from an easily guessed password.

Apart from that, much of the burden of security lies with your cloud storage provider. It's on them to protect their data centers, provide redundancy for those data centers, and protect their clients' information. There are a few things you can do to determine the strength of a provider:

- **Look at the brand history.** How many data breaches has this company suffered? If they have a near-perfect history, it's not a guarantee of a perfect future, but it's a good indication they take data security seriously.
- **Investigate encryption standards.** How is this company encrypting their data? What standards do they apply to their data centers?
- **Determine where and how data is backed up.** Finally, determine how much redundancy is in place to protect your data. A simple search or talk with an account representative should tell you where their data centers are located, how your data is backed up, and whether emergency protections like fire suppression systems are in place.

Most cloud storage solutions offer some degree of security, and most consumers with a major brand won't have to worry about their data being lost or stolen. However, it's important to understand how cloud storage works, and understand that it's not perfect; otherwise, your files could be compromised.

❑

Stress : Good or Bad

—Supriya singh

Assistant Professor- BIBM

Feeling stressed can feel consummately typical, particularly amid test time. You may see that occasionally being stressed-out motivate you to concentrate on your work, yet at different occasions, you feel fantastically over powered and can't focus on anything.

While stress influences everybody in various courses, there are two note worthy kinds of stress: stress that is useful and inspiring — great stress — and stress that causes nervousness and even medical issues — awful stress. Here's additional on the advantages and symptoms of stress and how to tell in case you're encountering excessively stress.

Benefit of Stress

As indicated by specialists, stress is a blasted of vitality that essentially exhorts you on what to do. In little dosages, stress has numerous points of interest. For example, stress can enable you to address day by

day difficulties and inspires you to achieve your objectives. Truth be told, stress can enable you to achieve undertakings all the more proficiently. It can even lift memory.

Stress is likewise a crucial cautioning framework, delivering the battle or-flight reaction. At the point when the mind sees some sort of stress, it begins flooding the body with synthetic compounds like epinephrine, norepinephrine and cortisol. This creates a variety of reactions such as an increase in blood pressure and heart rate. Plus, the senses suddenly have a laser-like focus so you can avoid physically stressful situations — such as jumping away from a moving car — and be safe.

Side Effects of Stress

Stress is key for survival, yet an excess of stress can be unfavorable. Passionate stress that stays around for a considerable length of time or months can debilitate the insusceptible framework and cause hypertension, weakness, misery, nervousness and even coronary illness. Specifically, an excessive amount of epinephrine can be unsafe to your heart. It can change the supply routes and how their cells can recover.

Signals of Too Much Stress

It may be tough to tell when you're experiencing good or bad stress, but there are important ways that your body lets you know that you're struggling with too much stress. Watch out for the following warning signs :

- In ability to concentrate or complete tasks
- Get sick more often with colds
- Body aches
- other illnesses like autoimmune diseases flare up
- Headaches
- Irritability
- Trouble falling sleeping or staying awake
- Changes in appetite
- More angry or anxious than usual

What You Can Do

Stress is an inescapable piece of life,however you can enhance the manner in which you react to stress and maintain a strategic distance from or change a portion of the circumstances that make negative stress

1) Watch out for indications of stress over-burden : Symptoms of too much stress can be physical, emotional, mental and behavioral. While everyone is different, some common signs are: memory problems, trouble concentrating, racing thoughts, irritability, anger, sadness, headaches, frequent colds and changes in sleep or appetite.

2) Know your stress triggers : Stress and its triggers are distinctive for everybody. Certain individuals, spots or circumstances may create large amounts of stress for you. Consider what causes you stress, and conceptualize arrangements. In the event that open talking or introductions make you stressed, begin exploring early and practice a few times. On the off chance that there are companions or social circumstances that reason extraordinary stress, you might need to maintain a strategic distance from them when you are now feeling tense or overpowered.

3) Exercise : All types of activity decrease stress hormones, surge the body with feel-great endorphins, enhance inclination, help vitality and give a sound diversion from your issues. Also, exercise may make you less defenseless to stress over the long haul. Find physical exercises

that you appreciate and attempt to give around 30 minutes to them every day.

4) Relax :While it's difficult to wipe out all negative stress from your life, you can control the manner in which you respond to stress. Your body's characteristic battle or-flight reaction can inflict significant damage. When you're looked with a stressful circumstance that your brain sees as a danger, it sends different synthetic concoctions, similar to adrenaline and cortisol, all through your body. Therefore, pulse and breathing velocities up and your absorption backs off. This tires out the body.

5) Manage your time well : Time can appear to be an extravagance in school; however there are different approaches to oversee it successfully. Initially, center around one errand at any given moment. Performing various tasks once in a while works. Scribble down all that you has to do in a timetable or an undertaking the board application/program, organize your rundown and break ventures into single steps or activities.

6) Don't self-medicate : Some students drink, take drugs, smoke and use other unhealthy behaviors to cope with stress. However, these behaviors can exacerbate stress by negatively affecting your mood and health.

7) Reach out : If you're stressed out, talk to your friends and family. If you feel like you can't handle the stress on your own, schedule an appointment with a counselor on campus.

Conclusion : The fact that stress is a perception also means that we can do something about it. We can train ourselves (or we can be trained by a professional, if necessary) to change our perspective. Remember that stress is a perceived disconnect between the situation and our resources to handle the situation. Therefore, there are two possible ways we can change our perspective about stress.

First, we might be able to change the situation. If traffic is a chronic source of stress, can we take the train to work?Second, in situations that cannot be changed directly, we can possibly change the way we view the situation. If we have no other option but to drive to work, can we use that time to our advantage instead of dwelling on how slowly the traffic is moving? ❑

How to Become a Successful Professional

—Manoj Kumar Shukla

Assistant Professor (B.I.B.M)

No matter what field you work in, you probably have some aspirations of professional success. Success may be defined in different ways by different people, but being an informed and dedicated employee, a strong leader, and an honest person can all make a big difference in making you a successful professional in any career. No matter how you define your goals or what field you work in, strengthening your professional skills, building professional relationships, and being a self-motivated professional can help you achieve success and satisfaction in your career.

1. Strengthen your sales skills. No matter what line of business you're in, sales are probably an important part of your field. Even if you don't actually work in sales, as

a professional you will need to be able to sell ideas, project roles, and cooperation.

- Listen sincerely to others. It helps to repeat what they said back to them to show that you they are being heard. Remain understanding despite your personal opinions and exercise compassion.
- Don't bring your own agenda to your business interactions. If you want to be a professional and develop successful sales skills, you'll need to devote all of your attention to the person you're talking to.
- Instead of talking someone into something they don't necessarily want, try to allow that person to reach the decision on their own. Whether you're selling products or ideas, present your "product" with clarity, concision, honesty, and integrity, and highlight the benefits or advantages of that product. Use phrases such as, "Would you like to proceed?" and "Are you ready to move forward?" and allow the person to consent from a place of positivity.
- Understand what your customers or coworkers expect from what you're offering. Those expectations are more important than what you think they should need or expect

2. Exercise communication skills. Communication skills will help you in any professional arena, and may even benefit your personal life as well. How you communicate can affect the first impression others have of you, and may make or break your professional opportunities.

- Resist saying the first thing on your mind. Instead, try waiting 5 seconds or so, and if you still think your input is relevant and contributes to the conversation, then voice your idea.[5]
- If you're naturally shy or soft-spoken, challenge yourself to be more vocal and active in conversations.
- Be aware of yourself—not just your appearance (which is important), but also your words, your tone, and your body language.
- Understand your conversational objective(s) *before* you join a conversation.
- Be empathetic towards others. If someone (a customer, a coworker, a manager, etc.) is having a hard time, be understanding of their struggles. Put yourself in that person's place and try to think about what you might want to hear in that moment. Just make sure to remain professional and appropriate for your role.

3. Work on interpersonal skills. Interpersonal skills are essential if you want to be part of any professional team. The ability to get along with others and work collaboratively is an important part of any business, no matter what professional field you work in.

- Be mindful of whom you're speaking with, and how you might be coming across, in every interaction with others.
- Accept that you may not agree with others all the time and they may not always agree with you. That's okay—you can find ways to compromise, or agree to disagree. Just don't try to argue or fight with others, as this may result in hurt feelings and fractured professional relationships. Offer constructive criticism that contains alternative options, if necessary.
- Ask a trusted colleague to give you feedback on your interpersonal skills. Let them know that you're trying to develop your skills and would like to know how you come across to others.

4. Learn leadership skills. If you're hoping to become a successful professional, you probably have aspirations of earning a leadership role. The best way to prepare for that role - and prove to your superiors that you're a natural leader— is to develop your leadership skills *before* you get promoted to a managerial role.

- Put the needs of others and the needs of the company ahead of your own needs
- Empower others. Commend other people for their work and celebrate their success every day.
- Remember that every action contributes toward your identity as a leader. Instead of seeing every action or interaction as an isolated incident, think of them as a series of steps on the road towards success and leadership.
- Practice informed decision-making skills. Ensure that every decision you make will better you as well as the company, and/or create new opportunities for yourself and/or the company.

❑

URDU literature and its impact on Indian Culture

—Afreen Fatima

M.B.A. IIIrd Semester

History :

India got the freedom and developed its own constitution. Which was implemented on 26th January 1950. In the constitution of India, schedule eight deals with languages, as per constitution. India accepted 140 languages as it is national language, later which became 22 Urdu was one of the 14 languages and now it also included in 22 languages.

Generally a language has following role in democratic country

- Mass communication
- Education
- Literature

Urdu and popular culture :

Urdu popular culture is not only among mother tongue, some important feature of Urdu's popular are Ghazal, Mushaira, Antakshari.

There are also huge impact of URDU language and literature on Indian cinema especially Bollywood.

Many dozen films were adapted from Urdu fiction, film such as Mughal-e-azam, Anarlkali, Yhoodi, and Rustam Shorab, Hatim Tai, Heer Ranjha, Laila Majnu were based on Urdu dastan.

Impact of URDU on Indian culture :

It was first Indian language which became medium of higher instructions including for medical, engineering and law education. After and before the independence, Urdu was the main language of films influenced the whole culture of India. It was not only the Urdu language and literature but its culture's art, craft, architecture, fashion, music was influencing the most part of India and abroad also. In this way we can say Urdu is like a back bone of Indian culture, which spread from Kashmir to Andhra Pradesh and Karnataka.

India is growing to be a very important country in the modern world as its people provides the web with plenty of content. It is also one of the south Asia's most important

consumer markets. If you are the part whose career goal is to be a part of a multinational company that has a multilingual staff. Think of learning Urdu because the new groups of language students are most interested in are Urdu, Portuguese, Russian, and Chinese. The UK projects that these four languages would be dominant in the very near future as the countries where these languages are spoken are foreseen to be the new world markets.

Conclusion :

URDU is an important Indian language which has impacted the Indian culture positively and also allows understanding rich literary gems from the Indian subcontinent.

❑

Be Confident …Never Give Up……..!

Some Tips on how to boost confidence

—Abhishek Bhatnagar
Assistant Professor (B.I.B.M)

Confidence means : We have every positive vibe to cope up with all types of situations and circumstances and we have a strong feeling that **"if any other can do, I am also capable of doing same thing with more appropriable manner".**

Sometimes, Confidence leads over confidence which may cause depression and disappointment so it should be handled carefully.

Follow the Followings :

- **Always use to speak yourself:** Every morning sitdown for a minute and try to converse with yourself**." I am the unique creature of God and I have the same mental, spiritual and logical power like others to achieve my targets".**
- **Honesty inside you:** Honesty in every aspects of the life tries to recognize and remove the weaknesses one by one.
- **Practice makes one perfect:** no one is perfect by birth, deliberate continuous efforts with a motive to improve the weaker areas will definite help to make perfect.
- **Always remember your goals and never forget them even if you get partial success.**
- **Your future aims and targets should be properly prioritized and well diversified with small successes followed by step to step basis.**
- **Be positive always: always try to build a positive environment around yourself; it will lead to remove negative vibes.**
- **Always try to learn positive things from all existing creatures available in your surroundings.**

Remember : There is always unique in everyone personality. No one is better than you in that but you have to find that "uniqueness" in you.

"Winners are not people who never fail, but people who never quit"

❑❑

Importance of human resource in an organisation

—Pratibha Yadav

M.B.A. IIIrd Semester

Human resource are important assets of any organization. They are important to the organization because they have skill and expertise necessary to expand the business and to reach its goal.

One way to be sure your business will succeed is to attract suitable talent in the organization and treat them fairly manage them well and provide them with opportunities and they will help organization to achieve ideas and all business plan.

In addition, human resource plays a significant role in developing positive business culture and environment.

Without human resource a business cannot run properly. So we can say that human resource are backbone of any organization.

❑

My Hall of Knowledge

—Gulfishan Parveen

B.B.A. IIIrd Semester

Here some consider everything a race, while other find it as gossip place.
Lots of care, lots of tension
In the midst of which you have to complete your presentation.
Here you'll find many competition,
Which go to fulfill your ambition.
Now, there are two home of mine
This ends at 4:30 from nine.
It makes you know all your duty,
But these 3 years, will look like just 3 hours of a movie.
If you see the institute aquaria,
You will not find any substitute of Bhavdiya.

❑❑

A Good Students

—Sakshi Yagyaseni

B.B.A. IIIrd Semester

"It is difficult for a student to pick a good teacher, but it is more difficult for a teacher to pick a good student.

A good student must have a huge desire and passion to learn and explore new things they have always positive attitude towards life and they always prepare for every task a good student is truthful, honest and frank and they always attend all classes they are very punctual and they do right thing at the right time. A good student should be very active and hardworking , he know how to develop his/her self-discipline and a good student never disappoints his teacher and obey all the things about his teachers.

Some qualities of good student :

- A good students always come in complete and clean uniform.
- They always respect their teachers.
- They never fight with others.
- They are very punctual.
- They always help other students for study.
- They always take a part in all extra curricular activities.

❑

Ability, Opportunity & Adversity

—Arshiya Sultan

B.B.A. IIIrd Semester

Life is struggle. Struggle is caused by adversity. Misfortune and misery produce adversity.

Aspects of adversity-

1. Negative aspects of adversity- If we are dull of blunt learners, we see negative aspect of adversity.

2. Positive aspect of adversity- If we are sharp and talented learners, we should see positive aspects of adversity, it make us sharper and more talented. We should make ourselves learners of positive and creative thought. The ability of realizing the response of positivity can make our future bright.

OPPORTUNITY

Only opportunity can show our sharpness talent and intellect. If we find ourselves unable to get opportunity, we cannot show our talent, our capability to accomplish that particular work positively.

Ability is ability only when we get an opportunity.

"Opportunity comes but Once."

❑

The Game of Life

—Ragini Gupta

B.B.A. IIIrd Semester

A child sat by a lake one day, asking what does this all mean?
Who am I ? where am I going? How do I fit into the scheme?
I sat down beside him, looked into his eyes, and saw the reflection of so many whys.
I've, too, questioned, my child, there's so much to say,
But in all my searching and knowing,
I can't show you the way.
I can only try to explain what I see.
May be you can show me, how it should be?
You see, life has many a game.
The hardest to play is the one for fame.
When we look for fame, we look for power.
In this quest, you might say, man has wasted many a life, many an hour.
Are we all so ant like and insecure,
That for fame and power so much we endure?
The game of war, it's not hard to understand.
It's just fighting and killing, man to man.
What is hard to understand, are the men who are willing.
They fight in the name of pride and nation.
Pride and nation, my god!
I see no reason for this frustration.
The amazing yet saddest part is
All wars are fought in the name of peace.
So you see my dear child- I, too, ask why.

❖❖❖

Success

—Shreya Gupta
B.B.A. IIIrd Semester

"Success" everybody's first and final goal. All the game behind every competition is success because success brings everything fame, money, respect, wealth. Success is understanding difference between need and wants. There are two types of people in the world : one who just want to achieve their goal, they just want to get good and respectable post with higher pay and live a healthy and happier life with a lot of money.

But not everybody is chasing money by getting a good job and doing some business. There are also some people who don't want to follow the same pattern which others are following, they want to do something different, they dream to do big, their hunger to do more or to achieve more never ends and these type of people change the world, because they are not follower, they are time changer, they bring transformation.

Both are the success but the difference is of hunger. Everybody in this world wants to get success. Don't get satisfied with just a single success. World is too big.

If one advances confidently in the direction of his dream and endeavors to live the life he imagined, he will meet with a success in unexpected hours. But the path of success is not easy. It takes passion, desire, focus, failures, late nights, innovation, courage, strategy and so on. Follow your dreams because pain is temporary. If you achieved once your success, it will last forever. Never give up because 'Babe Ruth' has said, 'it's hard to beat the person who never give up'. There are so many definition of success, make your own definition and be an example for everyone. Good luck to every readers…..thank you.

❑

Chalk-Talk of life

—Fatima Zehra
B.B.A. IIIrd Semester

As a student career and success are my two main goals. My goal is not to do better or to be better than anyone else, but to better than, I used to by yesterday. The goal should not be live forever, it should be to create something that will live forever. Everyone want happiness but nobody want pain but how rainbow is possible without a little rain. Everyone want to go heaven but nobody want to die. Everyone want success but nobody wants to try.

Great said by 'Naujot Singh Siddhu'- "Nobody travels on the road to success without a puncture or two."

The road success is never straight . those hurdles and curves help to guide us and further make us successful. Always remember this "The pain you feel today is

the strength you feel tomorrow." The secret of life though , is to fall seven times and to get up eight times. Never compare yourself with other. Make your own identity. Success touches your feet when you come out from your comfort zone and facing the challenges of life. The three important things in our life, once gone never come back are – time, opportunity and words. But if you lose an opportunity, never fill yourself with tears because somewhere it will * another better opportunity for you. Try to live a life without regrets. If it offers you an second chance take it. Life can be unfair sometime but that is not the reason give upon it.

Not always but sometime take risk in your life – If you win, you can lead & if you lose you can guide. The way of your destination is determined by your way of thinking.

"I don't know the key of success but the key of failure is trying to please everyone."

So, work for your goal, more than you hope for it.

That's it.

❑

Role of Parents in Our Life

—Avantika Rawat

B.C.A. IIIrd Semester

In human a parents in care taken of a child, children resisting contact with a parents post separation accessing this phenomenon using an biological system, so parents are more precious gift of god for us. They help us in every step of our life. They trained us very hand style for the future challenges. Parents help to make us educated. Their our living cost for the future of their children. They provide each and every thing to us when ever and whatever. we need and when ever parents work hand day and night for their children education and his life. So we celebrated every year parents day for his respect.

A good role model is someone who is always positive calm and confidence themselves.

It means parent play the important role in our development i.e. mental, physical, social, financial, cultural, ethical and career development etc.

So we must always respect to our parents like create positive thought better understanding. Appreciating obey their rules and watch our language etc. so our parents are over heroes. We can never deny the role and value of parents in our life. They life without parents in a worst life ever. Parents are support and shade for us and love my parents. They are standing beside me in any every walk of life.

❑❑

Return Gift for all my Teacher

—Pragya Verma
B.C.A. Ist Semester

We were once and untoned brutes. Teacher were god and temples were classes. In our life they were always behind us. They were with us every things to share whenever we got troubled they did care. They taught us all tricks of life. When to jump and when to dive. We are proud that they are our teacher. They were first to introduce all world's features.

They came as an angel in our life. We want to see them always happy.

We ask good to bless them with good health.

❑

बेटी एक लक्ष्मी होती है

—Saba Azmi
B.B.A. Vth Semester

अगर बेटा चाहिए तो क्या वह एक बेटी के बिना मिल सकेगा।
हम हर एक लोग अलग-अलग देवी की पूजा करते है
वह भी तो एक बेटी थी फिर क्यों वह हमारी बेटियों से नफरत करते है
क्यों उन्हें पेट में ही मार दिया जाता है
बेटी की हँसी ही पिता के थकान को दूर करती है
बेटी ही घर को सँवारती है

अगर हर इंसान बेटी को पेट में ही खत्म कर दे तो हमारे देश में बेटियों की कमी आ जायेगी औ धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगा। इसलिए बेटी को जन्म दो एक सन्तान के रूप में कि वह बेटी देगी।

मेंहदी रोली गगन का सिंगार नहीं होता
रक्षाबंधन भाईदूज का त्योहार नहीं होता
रह जाते है
जिन घर में बेटी का औ
जन्म देने के लिए माँ चाहिए
राखी बाँधने के लिए बहन चाहिए
कहानी सुनाने के लिए दादी चाहिए
पर ये सब रिश्ते निभाने के लिए बेटी तो जिन्दा रहनी चाहिए।

❑

प्रेरणात्मक उद्धरण

—अनुज रावत
एम.बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

1. अपने लक्ष्य को ऊँचा रखो औ
   रुको जब तक आप इसे हासिल नहीं कर लेते है
2. जिनमें अकेले चलने का हौ
   उनके पीछे एक दिन काफिला होता है
3. आप हमेशा इतने छोटे बनिये कि हर व्यक्ति आपके साथ बै
   आप जब उठें तो कोई बै
4. ये क्या सोचेंगे? वो क्या सोचेंगे? दुनिया क्या सोचेगी? इससे ऊपर उठकर कुछ सोचें, जिन्दगी सुकून का दूसरा नाम हो जाएगी।
5. इतर से कपड़ों को महकाना कोई बड़ी बात नहीं है
   आये।
6. किसी के पै
   है
7. मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।
8. समझदार इंसान वो नहीं होता जो ईंट का जवाब पत्थर से देता है
   फेंकी हुई ईंट से आशियाँ बना लेता है
9. जीवन में सबसे बड़ी खुशी उस काम को करने में है
10. अच्छे के साथ अच्छा बनें बुरे के साथ बुरा नहीं, क्योंकि हीरे को हीरे से तराशा तो जा सकता है पर कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं हो सकता है

❑❑

रेत की तरह

—Shivam Tripathi
M.B.A. Ist Semester

रेत की तरह तिनका-तिनका
बिछड़ चुके है
सूनी रै
उड़ चले आकाश में।
गली-गली हर दिशा कुंज में,
पूछ रहे है
रेत की तरह तिनका-तिनका
बिछड़ चुके है
चंद पलों की मुलाकात में,
हो गये हमराज वो।
फिर हुआ न जाने ऐसा क्या,
जो बिछड़ चुके है
रेत की तरह तिनका-तिनका
बिछड़ चुके है
गलतफहमी या गलती थी वो,
समझ न पाये आज वो।
अंतिम शब्द यही है
हर गलती की माफी होती,
समझ न पाये आज वो।
रेत की तरह तिनका-तिनका
बिछड़ चुके है

❑

मै

–Vibha Gupta
M.B.A. IIIrd Semester

मै
ऐ जिंदगी! आता है
अपने आँसू छिपाना,
शायद किस्मत है

अपने अरमानों की बलि भी चढ़ जाये मगर
पड़ता है
मै
थोड़ी–सी बड़ी–ही हुई थी,
थोड़ी–सी जिंदगी के मजे लेने लगी थी,
थोड़े आजाद ख्यालों में रहने लगी थी,
तुरन्त ही याद दिलाया गया, तू एक लड़की है
मै
समाज की गलत बातों का मुँहतोड़ जवाब देने लगी थी
अपने सपनों को बड़ा करने को सोचने लगी थी,
अपने यार दोस्त बढ़ाने लगी थी,
तुरंत याद दिलाया गया, तू एक लड़की है
मै

❑

❖❖❖

कमाल है

—Priyanka
B.C.A. IIIrd Semester

हर लॉकर की चॉबी बनकर हमेशा साथ देने वाली प्रोग्रामिंग है
कोडिंग के ब्रश से हमारे ख्वाबों को हकीकत बनाने वाली प्रोग्रामिंग है
हमारे बड़े–बड़े कामों को चुटकी में सॉल्व करने वाली भी प्रोग्रामिंग है
औ
हमारे दोस्तों से हमको सेकेण्ड में मिलाने वाली भी प्रोग्रामिंग है
औ
मिनटों में लाखों लेन–देन करने वाली भी प्रोग्रामिंग है
औ
पल–पल में तू कितने रंग बदलती है
सबका बनके रहती है
वाह! कमाल है

❖❖❖

माँ के प्रति स्नेह

—Kajal Tiwari
B.C.A. IIIrd Semester

खोलते है
तुम में सूरज चाँद तारे, आसमाँ हो जाता है
तुम हो दरिया तुम समुन्दर, औ
तुमको देखा तो लगा कि, तुम प्रकृति की भेंट हो।।
तुम हमारे स्वप्न औ
ये है
जब भी बै
तुम में सूरज चाँद तारे, आसमाँ हो जाता है
तेरी रहमत की दुआ, माँगते है
सातों सात जनम तक, होंगे न अब हम जुदा।।
तेरी ममता से मिला जो सुख को न भूलेंगे हम।
तुम हो मेरी जान से प्यारे, आज ये कहते है
जब भी मै
तुममें सूरज चाँद तारे, आसमाँ हो जाता है

❑

शिक्षा

—Mansi Sahu
B.C.A. Ist Semester

बहुत जरूरी होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा,
चाहे जितना पढ़ लें हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा,
शिक्षा पाकर ही बनते है
नेता, अफसर, शिक्षक
वै
या साधारण रक्षक
कर्त्तव्यों का बोध कराती,
अधिकारों का ज्ञान
शिक्षा से ही मिल सकता है
सर्वोपरि सम्मान
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान
शिक्षा से ही बन सकता है
भारत देश महान।

❑

सोचती हूँ कि मै

–Himani Singh
B.C.A. Ist Semester

सोचती हूँ कि मै
किसी डूबते का सहारा बन जाऊँ
हो जायें जहाँ सब दिल एक
मै
भूलना चाहती हूँ सारे रश्म–वो–रिवाज
मै
खोजूँ उस बुजुर्ग के अँधेरे घर को
औ
ऐ खुदा मत देना ऐसा रौ
जो हर शख्स पर इतराऊँ
देना दिल में इतनी लचक
जो राह चलते वृद्ध माँ–बाप का सहारा बन जाऊँ।

❑

Pharmacy : Current Issues

—Mr. Ran Vijay Singh
Associate Professor, BIPSR, Ayodhya
HOD – B.Pharm

Pharmacy education which was introduced in India in 1937 by Prof MM Malaviya and Prof ML Schroff in BHU has undergone dramatic changes over the past few decades. But it has not yet attained the desired level in terms of standards, innovation/ production of drugs at affordable price to the common people. Pharmacy education in India is largely industry oriented and hence Indian pharmaceutical industry with its tremendous growth capacity has several job opportunities. The primary purpose of pharmacy education is to develop technical human resources, novel approach and vision with respect to teaching, research and development (R&D) and training future health care professionals in the field of drugs and pharmaceuticals. The role of pharmacist is highly significant in the sustainable growth in pharm industry as well as health care system. The country should see that future pharmacists are given appropriate education and relevant training to make them fit to meet the challenges.

Although, considering the increasing responsibilities of pharmacy profession, the minimum qualification needed for a practicing pharmacist was upgraded from that of a certificate course (compounder) to a diploma in pharmacy by Pharmacy Council of India (PCI), Indian pharmacists are yet to assert themselves due to lack of up-to-date knowledge and compelled to realize that diploma as the minimum qualification with minimal or no training are negative factors for their image. The students are required to be trained in practical skills to confidently face the challenges of clinical and hospital pharmacy on one hand and industrial pharmacy/ pharmaceutical technology on the other. It is felt that lack of focus on quality of service is causing much harm for the professional growth of Indian pharmacist and health care professional. It is a fact that, when appropriate skills and knowledge are not present, delivery cannot be effective in any field. It is a demand of time that the practice of earning a diploma in pharmacy as the minimum requirement to be a registered pharmacist should be discontinued and all the students should be compulsorily made to earn a four-year B. Pharm degree course. Such a move can bring in the dignity and equity to pharmacy profession at par with others.

During the last few decades, since Drugs and Cosmetics Act 1940 and Pharmacy Act 1948 were enacted, pharmacy profession of India has been subjected to many reforms and developments. Pharmacy profession is responsible for the appropriate use of medication, devices and services to achieve optimal therapeutic outcomes to combat these complexities. Pharmacists

are those who are educated and licensed to dispense drugs, to provide drug information and are experts in handling of medication.

Major issues include pharmacist provider status; lack of cohesiveness and low self-confidence as a profession uniting pharmacy organizations; and the role of pharmacists in primary care. Just because a pharmacist can do a particular function does not mean that all pharmacists can do it well.

❑

जेनरिक बनाम ब्रांडेड औ

—विष्णु गुप्ता
व्याख्याता, BIPSR

परिचय— जेनेरिक दवा अर्थात् जो बिना किसी विज्ञापन के अपने रासायनिक नाम अथवा सक्रिय फार्मास्युटिकल पदार्थ के तहत पहचानी जाती है उदाहरण के लिए बाजार में पै
पै

ब्राण्डेड दवा अर्थात् जो अपने ब्राण्ड के नाम के तहत पेटेंट औ
मार्केटिंग कम्पनी द्वारा प्रदान की जाती है
लिए उसी पै
ब्राण्ड डोलो टै
सिरप द्वारा बाजार में बेचा जाता है

लाभ औ जेनेरिक दवा एवं ब्रांडेड दवा का फायदा लगभग समान होता है परन्तु दोनों के मूल्य में काफी अन्तर देखा गया है उदाहरण के लिए टै 10mg बाजार में विभिन्न ब्राण्ड नाम में उपलब्ध है
की कीमत लगभग 20 रुपये है
इसकी कीमत केवल 2.75/- है
ब्रांडेड दवा की तुलना में अधिक कीमत पर विपणन नहीं किया जा सकता है
सरकार दोनों के लिए अक्सर एक सस्ता विकल्प होता है
(PM-JAY) जै
दवा की कीमत का भुगतान करती है

जेनेरिक दवाएँ इतनी सस्ती क्यों है पेटेंट सभी नई औ
लेकिन एक नई ब्रांडेड दवा पर पेटेंट जीवन की समाप्ति के बाद, यह "जेनेरिक दवा" बनाने के योग्य है
दवा के पेटेंट जीवन के दौ
सकती है
खोना नहीं चाहती है
औ
कुछ कम्पनियाँ अपने ब्राण्ड नाम के साथ पुरानी दवा के विपणन औ
करती है
एडवांस टै

एक सामान्य निर्माता के लिए इस तरह के निवेश की आवश्यकता नहीं है
विपणन में। दवा का सूत्र ज्ञात हो, नै
पूर्ण हो, जेनेरिक मेकर की एकमात्र आवश्यकता है कि दवा का निर्माण मानकों के अनुसार किया गया हो। इसका प्रभाव जीवों में उतना ही अच्छा औ
जितना कि ब्रांडेड दवा का प्रभाव।

दवा उद्योग में डाक्टर औ

भूमिका (जेनेरिक ब्राण्डेड)— जेनेरिक दवाओं के बारे में भ्रम को कम करने में डाक्टर औ सस्ट

बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है
उनसे दवा के बारे में सलाह लेते है
को निर्धारित करने के लिए अपने डाक्टर/फार्मासिस्ट पर भरोसा करते है
50% लोगों ने बताया कि वे अपने डाक्टर या फार्मासिस्ट के साथ पहले जाँच के बिना एक जेनेरिक दवा पर स्विच नहीं करेंगे। यह वास्तव में एक अच्छा एहतियात है
जोखिम का आकलन कर सकता है
बारे में आपके किसी भी प्रश्न की मदद कर सकता है

लेकिन वर्तमान समय में दवा कम्पनियों के बहुमूल्य प्रस्ताव के कारण डाक्टर औ
दोनों ही ब्राण्डेड दवा पसन्द करते है
ब्राण्डेड दवा लेने के लिए मजबूर भी करते है

जेनेरिक बनाम ब्राण्डेड में सरकार की भूमिका– "प्रधानमंत्री जन औ (पीएमजेएवाई)" भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे जेनरिक दवा के प्रचार-प्रसार एवं बिक्री के लिए उत्तम योजना है BPPI(ब्यूरो ऑफ फार्मा पब्लिक सेक्टर अण्डरटेकिंग्स ऑफ इण्डिया) के द्वारा संचालित हो रही है
विकल्प है
"जन औ
से जेनेरिक दवाओं की बिक्री के माध्यम से चलाया जा रहा है
फार्मा कम्पनियों के प्रचार-प्रसार, डाक्टर एवं फार्मासिस्ट के निजी लाभ के लालच के आगे सरकार की योजना असफल साबित हो रही है

सभी स्थिति को देखते हुए हम कह सकते है
जेनेरिक दवा ब्राण्डेड दवा की तुलना में बेहतर औ प्रभावी है
आवश्यकता है
औ
हमेशा जेनेरिक दवा के लिए दवा के नाम के साथ दवा अणु नाम भी पर्चे में लिखें, जेनेरिक दवा के लिए दवा कम्पनियों के लिए नियम औ
इत्यादि।

जेनेरिक दवा भारत में सस्ती स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर सकती है
होना चाहिए औ
हॉस्पिटल में उपलब्धता सुनिश्चित करायी जानी चाहिए। लोगों को जेनेरिक दवा के लिए खुद जागरूक होकर जेनेरिक दवा के लिए डाक्टर औ
चाहिए। तो अगली बार जब आप एक महँगी दवा खरीदते है
रूप में उपलब्ध है

❑

कोशिश

–Mr. Jagdeesh Prasad
Assistant Professor,
BIPSR

कोशिश कर तेरी दुनिया बदल जाएगी।
मेहनत कर जिंदगी रंग लाएगी।
वक्त खुद नहीं बदलेगा, उसे बदलना पड़ेगा।
मंजिल खुद नहीं मिलेगी, उसके लिए आगे बढ़ना होगा।
कोशिश करके हारने में भी एक मिठास होती है
बिना प्रयास के तो जिन्दगी भी उदास होती है
बस कोशिश करते रहिए, जिन्दगी खुशियों से भर जाएगी।
सफलता आपके कदम चूमेगी, जिन्दगी बदल जाएगी।

❑

TEACHER IS SO MUCH MORE THAN JUST A TEACHER

—Ms. Jyoti Vaish
Lecturer, BIPSR, Ayodhya

TEACHER is a COUNSELOR and PSYCHOLOGIST to a problem filled child,
TEACHER is a POLICE OFFICER that controls a child gone wild.
TEACHER is a TRAVEL AGENT scheduling our trips for the year,
TEACHER is a CONFIDANT that wipes a crying child's tears.
TEACHER is BANKAR collecting money for a ton of different things,
TEACHER is a LIBRARIAN showing adventures that a story book brings.
TEACHER is a PHOTOGRAPHER keeping pictures of a child's yearly growth,
When MOTHER and FATHER are gone for a day, TEACHER become both.
TEACHER is a DOCTOR that detects when a child feeling sick,
TEACHER is a PARTY PLANNER for holidays to celebrate with all.
TEACHER is a NEWS REPORTER updating on our nation's current events,
TEACHER is a DIETICIAN assuring that children have lunch or not.
But a Teacher should proud to have to be these people because,
I am proud to say "I AM A TEACHER".

❑

Indian Economy Growth Rate & Statistics

—Mr. Anuj Kr. Singh
Store In-charge, BIPSR

India has emerged as the fastest growing major economy in the world and is expected to be one of the top three economic powers of the world over the next 10-15 years, backed by its strong democracy and partnerships.

India's nominal GDP growth rate is estimated at 12 percent in 2019-20. The estimate for 2018-19 was 11.5 per cent. During Q2 of 2019-20, GDP (at constant 2011-12 prices), GDP stood at Rs 33.16 lakh crore (US$ 474.46 billion) showing a growth rate of 4.3 percent over the corresponding quarter of previous year.

India has retained its position as the third largest startup base in the world with over 8,900-9,300 startups, with about 1,300 new start-ups being founded in 2019, according to a report by **NASSCOM**. India also witnessed the addition of 7 unicorns in

2019 till August, taking the total tally up to 24.

India's labour force is expected to touch 160-170 million by 2020, based on rate of population growth, increased labour force participation, and higher education enrolment, among other factors, according to a study by ASSOCHAM and Thought Arbitrage Research Institute.

India's foreign exchange reserves were US$ 448.59 billion in the week up to November 22, 2019, according to data from the RBI.

Recent Developments

With the improvement in the economic scenario, there have been various investments in various sectors of the economy. The M & A activity in India increased 53.3 percent to US$ 77.6 billion in 2017 while private equity (PE) deals reached US$ 24.4 billion.

Government Initiatives

The Union Budget for 2019-20 was announced by **MrsNirmalaSitharaman, Minister for Finance and Corporate Affairs, Government of India**, in Parliament on July 05, 2019. India is all set to become US$ 3 trillion economy by the end of FY20. The budget focuses on reducing red tape, making best use of technology, building social infrastructure, digital India, pollution free India, make in India, job creation in Micro, Small and Medium Enterprises (MSMEs) and investing heavily in infrastructure.

Total expenditure for 2019-20 is budgeted at Rs 2,786,349 crore (US$ 417.95 billion), an increase of 14.09 per cent from 2018-19 (budget estimates).

Numerous foreign companies are setting up their facilities in India on account of various government initiatives like Make in India and Digital India. **ShriNarendraModi, Prime Minister of India**, has launched the Make in India initiative with an aim to boost the manufacturing sector of Indian economy, to increase the purchasing power of an average Indian consumer, which would further boost demand, and hence spur development, in addition to benefiting investors. The Government of India, under the Make in India initiative, is trying to give boost to the contribution made by the manufacturing sector and aims to take it up to 25 per cent of the GDP from the current 17 per cent. Besides, the Government has also come up with Digital India initiative, which focuses on three core components: creation of digital infrastructure, delivering services digitally and to increase the digital literacy.

Road Ahead

India's gross domestic product (GDP) is expected to reach US$ 5 trillion by FY25 and achieve upper-middle income status on the back of digitization, globalization, favorable demographics, and reforms.

India's revenue receipts are estimated to touch Rs 28-30 trillion (US$ 385-412 billion) by 2019, owing to Government of India's measures to strengthen infrastructure and reforms like demonetization and Goods and Services Tax (GST).

India is also focusing on renewable sources to generate energy. It is planning to achieve 40 per cent of its energy from non-fossil sources by 2030 which is currently 30 per cent and have plans to increase its renewable energy capacity from to 175 GW by 2022.

❑

शहीदों की शहादत

—आकाश वर्मा
B. Pharm. IIIrd Year

बुझा है
उस घर की दीवारें भी रोई होगीं
खोया है
न जाने वो माँयें कै

कतरा-कतरा बहे खून का अब
आखिर हिसाब देगा कौ
क्यों न भड़के मेरे सीने में भी आग
आखिर कब तक कोई रहेगा मौ

छलनी किया जिन दहशतगर्दों ने सीना
अब उन्हें उनकी औ
भूलना नहीं कर्ज ये देश जवानों का
बात ये उनके घर में घुसकर सिखानी होगी।

❑❑

मेरे गुरु.....

—धीरेन्द्र श्रीवास्तव
D. Pharm. Final Year

गुरु का कोई सार नहीं है
गुरु से कुछ भी पर्दा नहीं है
गुरु हमारी सब नादानियों को जानते है
गुरु हमारे सभी कष्ट को पहचानते है
गुरु कभी नाराज हो तो वह उनका प्यार है
गुरु का दण्ड भी हमें स्वीकार है
ईश्वर का कई रूप है
तो वो केवल गुरु है

❑❑

हमारी फार्मेसी

—पियूष गुप्ता
D. Pharm. Ist Year

इस फार्मेसी की कुछ
इस कदर पढ़ाई होती
काश कि मेरे पास, जान
बचाने की भी 'दवाई' होती
सुबह शाम खाने का बताकर
अपना फर्ज भी निभा लेता
औ
यूँ ही न 'जान' गवाई होती।
तजुर्बे ने एक ही बात सिखाई है
नया दर्द ही, पुराने दर्द की दवाई है

❑❑

स्वच्छ भारत, स्वच्छता अभियान

—दीपक कुमार
B. Pharm. IIIrd Year

मै
सदा ही करते, तू तू मै
करो कभी कोई अच्छा काम
बढ़ाये जो भारत देश का नाम
देश की धरोहर पर है
फिर क्यूँ है
नहीं है
बस करना है
शहर को मानकर घर अपना
निर्मल स्वच्छ है
कूड़ेदान में फेंको कूड़ा
थूकने को नहीं है
बदलो अपनी आदत भै
न करो किसी पड़ोसी का इंतजार
देश है

❑❑

देश प्रेम कविता

—मंजीत कौ
B. Pharm. IIIrd Year

न तेरा है
नहीं समझी गई ये बात तो नुकसान सबका है
जो इसमें मिल गई नदियाँ वो दिखलाई नहीं देती
वो नाम जो न हिन्दू है
वो नाम तो सिर्फ हिन्दुस्तान है
कितना लम्बा इतिहास है
सारी दुनिया में खास है
गंगा यमुना की धारा है
ये देश राम का कान्हा का, ये देश शिवा का राणा का
नानक अशोक ये महावीर विक्रमादित्य सम्राट धीर
ये बुद्ध आदि शंकर का है
बहादुरशाह जफर का है
ये पृथ्वीराज चौ
ऊधम बिस्मिल की ज्वाला है
ये ही झाँसी की रानी है
एक जिंदा इंकलाब है

❑❑

हॉस्टल की यादें

—मोहम्मद अनीस
D. Pharm. IInd Year

दोस्ती के क्या कहने जो हॉस्टल में
बिल्कुल माँ की तरह ख्याल रखते है
तबीयत खराब होने पर
पूरी देखभाल किया करते है
एक सामान को मिल बाँटकर
इस्तेमाल कर लिया करते है
लड़ते भी है
फिर बाद में प्यार कर लिया करते है
जो न किया था कभी वो भी
करने पर मजबूर कर दिया था
जो भी थे जै
वो दिन वो रातें, वो शामें
वो हॉस्टल वो कमरा वो यार
बहुत याद आयेंगे।

❑❑

कुछ करना तो है

—निदा परवीन
B. Pharm. IInd Year

कुछ करना है
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना काम के मुकाम कै
बिना मेहनत के दाम कै
जब तक न हासिल हो मंजिल
तो राह में, आराम कै
अर्जुन सा, निशान रख
मन में, न कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है
सोच मत, साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी औ
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले है
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी ने आज भी झमेले है

❑

PLASTIC BY NUMBERS

—Afreen Naaz
B. Pharm. IInd Year

120 billion plastic bottle made by Coca-Cola every year
330 million tonnes of plastic Produce every year.
12.7 million tonnes of plastic entering the ocean every year
500, 000 plastic particles per square meter in river in a Manchester, UK- Thought to be the highest intersity ever discovered in one place.
450 years for a plastic bottle to break down, in the ocean.
80 percent of plastic in the ocean originates on land
53 year since the plastic bag war created I rubbish truck of plastic enter the ocean every minute.

❑

आदमी

—अंकुर पटेल
D. Pharm. IInd Year

आदमी बुलबुला है
औ
टूटता भी है
फिर उभरता है
न समुन्दर निगल सका इसको
न तवारीख तोड़ पाई है
वक्त की हथेली पर बहता
आदमी बुलबुला है

❑❑

हे भारत वीर जागो

—उपेन्द्र प्रताप सिंह
B. Pharm. IInd Year

हे भारत के राम जगो, मै
सौ
सुनो हिमालय कै
आज बता दो कितना पानी है
खड़ी शत्रु की फौ
सोये सिंह जगो भारत के, माता तुम्हें पुकार रही। रण की भेरी बज रही, उठो मोह निद्रा त्यागो पहला शीष चढ़ाने वाले, माँ के वीर पुत्र जागो बलिदानों के वज्रदंड पर, देश भक्त की ध्वजा जगे
औ
वो राष्ट्र भक्त की भुजा जगे।।
औ
जगो पूरा बी. जी. ई. ग्रुप जगो।

❑

Life Goals

—Saumya Dwivedi
B. Pharm. IInd Year

Life you fail, never,
give up because,
F.A.I.L means
“First Attempt In Learning
End is not the end,
In fact E.N.D means.
“Effert Never Dies”
If you get No as an,
answer remember N.O. means.
“Next Opportunity”.
Positive thinking !!!!

❑❑

हौ

—अमरीन बानो
B. Pharm. IInd Year

जब भी तेरी आश छूटे, साथ छूटे, तू भी टूटे,
लेकिन कभी हौ
लोग दिल भी दुखायेंगे, ठेस भी पहुँचायेंगे,
लेकिन हौ
तेरी नईया पार हो ही जाएगी गिरते उभरते,
लेकिन कभी हौ
उन रिश्तों को कभी न तोड़ना
जो रास्ते में तेरा साथ देते है
सफर तो कै
लेकिन हौ
जिन्दगी में सब कुछ किताबें ही नहीं सिखाती है
कुछ बातें जिन्दगी भी सिखाती है
मुश्किलें रास्ते में आना लाजमी है
लेकिन कभी हौ
जिन्दगी तुझे रोकेगी, टोकेगी, लोग भी तुम पर हसेंगे,
लेकिन तू हौ
जब भी तेरी आश छूटे, साथ छूटे तू भी टूटे
लेकिन कभी हौ

❖❖❖

वक्त

—अमिता पटेल
B. Pharm Ist Year

क्यूँ कहते है
हाँ, जो गवाँ दिया वो काफी था
कुछ करने के लिए
जिन्दगी मिली है
नहीं मिली जिंदगी गवाने के लिए
जायज है
फिर भी तै
वक्त कभी काफी नहीं होता जानते है
फिर भी ठुकराते है
मत ठुकराओ इसको बहाने से
एहसास होगा वक्त का जब छूट जाओगे
देखते रह जाओगे दूसरों को
औ
रास्ते है
ढूँढ़ों औ
आये हो दुनिया में तो कुछ करके जाओ
किसी औ
खुद के नाम का दीप जला जाओ।

❖❖❖

प्रदूषण का बदलता स्वरूप

—अवनीश शुक्ल
विभागाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी

आजकल बाहर घूमते-निकलते वक्त सबसे अधिक डर बना रहता है
जाने का"। पिछले कुछ वर्षों से देश की राजधानी दिल्ली समेत समूचे भारत में प्रदूषण का स्तर बहुत गम्भीर रूप ले चुका है
है
कितना कम औ
बना रहा है
वाहनों का धुआँ, इमारतों के निर्माण से उड़ती धूल, कल-कारखानों, पॉवर प्लाण्टों से निकलने वाला धुआँ सामने आता है
हम कोशिश भी करते है
आंतरिक वायु प्रदूषण पर अधिक ध्यान नहीं देते है
जाने-अनजाने हमारे स्वास्थ्य को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे है
बहुत बार आउटडोर प्रदूषण के मुकाबले इनडोर प्रदूषण अधिक घातक साबित होता है
तरह बिना कोई चेतावनी दिये हमारे शरीर को बीमारियों का घर बना रहा है

हाल में ही इनडोर प्रदूषण पर हुए कुछ अध्ययनों में कई चौ
'इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन की ओर से दिल्ली की 13 इमारतों में किये गये एक सर्वे से पता चला कि उनमें कार्बन डाई-आक्साइड का स्तर निर्धारित सीमा से बहुत अधिक है
भी थे। यही नहीं बहुत से कार्यालयों में हवा में जीवाणु औ
लेवल डिजीज बर्डन द्वारा किये गये एक अध्ययन से पता चला कि खाना पकाने औ
जाने वाले ईंधन जै
वायु प्रदूषण के प्रमुख कारणों में आते है
मोतियाबिंद, हृदयरोग जै
जन्म होता है
पहले मौ
जलने वाले ईंधन औ
माना गया है
सामने निकलकर आयी है
निमोनिया के कारण होने वाली मौ
यही प्रदूषण है

चिंता की बात यह है
तमाम तरह की बीमारियाँ हो रही है
इस बात की जानकारी नहीं है
इस्तेमाल होने वाली परफ्यूम, कास्मेटिक, मच्छर को मारने के तमाम साधन, बाथरूम से लेकर फर्श साफ करने वाले क्लीनर औ
लिस्ट है
रहे है
का न होना भी इनडोर प्रदूषण के स्तर को बद से बदतर बना रहा है

जाहिर है
बचने की इस समय उतनी ही जरूरत है
आउटडोर प्रदूषण से, क्योंकि जिन्दगी का एक बड़ा हिस्सा घर, ऑफिस, रेस्तरां, मॉल आदि के अन्दर गुजारता है
दफ्तरों में बढ़ते प्रदूषण के प्रति लोग जागरूक हो औ
उन साधनों का प्रयोग कम करें जो इनडोर प्रदूषण को

फै
फ्रेंडली वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा दें। यह बात भी ध्यान देने योग्य है
सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है
प्रदूषण सिर्फ हमारे व्यक्तिगत प्रयासों से खत्म हो सकता है
कम करने हेतु प्रतिबद्ध हो जायें यही हम सबके लिए हितकारी होगा।

विश्व के सबसे अधिक कार्बन डाई-आक्साइड उत्सर्जक देश–

चीन	10.43
अमेरिका	5.01
भारत	2.53
जापान	1.66
रूस	1.66

नोट– आँकड़े अरब मीट्रिक टन में।

❑

जीवन की कुछ नसीहतें

– श्रीमती ममता सिंह
प्रवक्ता- हिन्दी-डी.एल.एड्.

नसीहत..... वह सच्चाई है
जिसे हम गौ
औ
तारीफ..... वह धोखा है
जिसे हम पूरे गौ
प्रशंसा की भूख.....
अयोग्यता की परिचायक है
काबिलियत की तारीफ,
तो विरोधियों के भी दिल से निकलती है
अभ्यास हमें बलवान बनाता है
दु:ख हमें इंसान बनाता है
हार हमें विनम्रता सिखाती है
जीत हमारे
व्यक्तित्व को निखारती है
सिर्फ विश्वास ही है
जो हमें
आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है
इसलिए हमेशा
अपने लोगों पर
अपने आप पर
औ
विश्वास रखना चाहिए।।
जीवन के हर कदम पर
हमारी सोच, हमारे बोल तथा
हमारे कर्म ही हमारा भाग्य लिखते है
जो इंसान 'खुद' के लिए जीता है
उसका एक दिन 'मरण' होता है
पर जो इंसान 'दूसरों' के लिए जीता है
उसका सदै
स्वीकार करने की हिम्मत
औ
सुधार करने की नीयत हो
तो
इंसान बहुत कुछ सीख सकता है
हमको कितने लोग पहचानते है
उसका महत्त्व नहीं है
लेकिन क्यों पहचानते है
इसका महत्त्व है

❑

विज्ञान का महत्त्व, चमत्कार औ

—शिवप्रसाद वर्मा

प्रवक्ता- विज्ञान, डी.एल.एड्.

प्रस्तावना— आज जल, थल तथा नभ में विज्ञान की पताका लहरा रही है
तथा विज्ञान एक-दूसरे के पर्याय बन गये है
है
पर्वतों को लाँघ सकता है
चीरकर जलयान द्वारा अपने स्थान पर इठला सकता है
प्रकृति को उसने अपनी दासी बना लिया है
सिमट कर रह गयी है
सदृश्य हो गया है
कर विज्ञान मंद-मंद गति से मुस्करा रहा है

विज्ञान की व्यापकता— विज्ञान की व्यापकता सभी क्षेत्र में हुई है
आगे बढ़ने की परस्पर होड़ लगी है
हमारी इच्छाएँ तथा आराम की सीमाएँ भी बढ़ती जा रही है
कृषि, युद्ध, उद्योग आदि सभी क्षेत्र विज्ञान से प्रभावित है
की कल्पना भी असम्भव प्रतीत होती है
सहायता से मनुष्य भौ
कर रहा है
रहा है
करते है
जलयान औ
प्रतीत होते है

विज्ञान के अनेक उपयोग— ईंधन, उपकरण आदि ऐसे साधन विज्ञान की देन है
सक्रिय हो गया है
हीटर, कूलर आदि साधन प्राप्त है
झाड़ू लगाना, कपड़े धोना-सुखाना औ
भी सम्भव है
कार्यभार संभाल लिया है

यातायात— विज्ञान ने मानव-जीवन में दूरियों को नजदीकी में बदल दिया है
अपार जन-धन की हानि के बाद वर्षों में पहुँच पाता था
आज उसे अल्प समय में ही तय कर सकता है
साइकिल, स्कूटर, कार, मोटर, रेलगाड़ी, हवाई जहाज औ
वह चन्द्रमा का भ्रमण कर चुका है
जाने की तै

व्यवसाय— विज्ञान ने कृषि, उद्योग तथा कल-कारखानों आदि का असीमित विकास किया है
कृषि को विकसित बना दिया है
इस्पात, खाद, उपकरण, खाद्य पदार्थ, वस्त्र, वाहन आदि बनाने के असीमित कारखाने है
का विज्ञान की सहायता से विकास हुआ है

मनोरंजन— मनुष्य को श्रम करके थकने के बाद मनोरंजन की आवश्यकता होती है
टेपरिकार्डर, वी.सी.आर., टेलीविजन, सिनेमा आदि वै
तै
विषयों, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का ज्ञान प्राप्त होता है
सकते है

चिकित्सा— औ
आज इतना विकसित हो गया है
प्रत्येक रोग को एक्स-रे आदि द्वारा पता कर सकते है
वै

सम्भव हो गये है
विज्ञान आज जीवनदाता बन गया है

विज्ञान का विनाशकारी रूप– विज्ञान ने युद्ध के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति की है
को तै
औ
भी विकलांग पै
के कारण मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है
हाइड्रोजन या एटम बमों की सहायता से आज संसार को पल भर में नष्ट किया जा सकता है
विश्व विज्ञान के भय से प्रकम्पित है

विज्ञान का अभिशाप– विज्ञान ने जहाँ इंसान की जिन्दगी ऐश औ
मनुष्य को तमाम भौ
तरफ इसने कई ऐसे विनाशकारी शक्तियों को जन्म दिया है
सकती है
वाले हथियार अत्यन्त विनाशकारी हैं
को जहाँ अपार सुविधाएँ प्रदान की है
नाभिकीय यन्त्रों आदि के विध्वंशकारी आविष्कारों ने सम्पूर्ण मानवजाति को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है
वरदान है, वहीं दूसरी ओर यह समस्त मानव सभ्यता के लिए अभिशाप भी है

वास्तविक रूप में यदि हम विज्ञान से होने वाले लाभ औ
कि विज्ञान का सदुपयोग व दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में है
रूप में लेता है
ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग किया जाए तो मनुष्य को ऊर्जा प्रदान करता है
उपभोगों में लिया जा सकता है

परन्तु दूसरी ओर यदि इसका गलत उपयोग हो, तो यह अत्यन्त विनाशकारी हो सकता है
युद्ध के समय जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहरों पर परमाणु बम द्वारा हुई विनाशकारी लीला इसका ज्वलंत उदाहरण है

आज विज्ञान के ही कारण मानव-विज्ञान अत्यधिक खतरों से परिपूर्ण तथा असुरक्षित भी हो गया है
सुविधा के साधन उपलब्ध कराये है
अवसर भी छीन लिये है
महान् देन है
मनुष्य का जीवन समाप्त कर सकता है
दिन-प्रतिदिन होते जा रहे नवीन आविष्कारों के कारण मानव पर्यावरण असन्तुलन के दुष्चक्र में भी फँस चुका है

सुख-सुविधाओं की अधिकता के कारण मनुष्य आलसी औ
उसकी शारीरिक शक्ति का ह्रास हो रहा है
नये-नये रोग उत्पन्न हो रहे है
सहने की क्षमता घट गयी है
आडम्बरयुक्त जीवन इस विज्ञान की ही देन है
प्रगति ने पर्यावरण प्रदूषण की विकट समस्या खड़ी कर दी है

उपसंहार– अन्त में कहा जा सकता है
विज्ञान ने दोनों प्रकार के वस्तुएँ प्रदान की है
संरचनात्मक औ
राजनीतिज्ञों तथा समाजसेवियों का कर्त्तव्य है
के प्रयोग स्वरूप को ही महत्त्व दें। अन्तरिक्ष की खोज के लिए विज्ञान का प्रयोग हो, परस्पर लड़ने हेतु नहीं।
अब आवश्यक है
जो मनुष्य में आत्मसन्तोष, धै
सके। इस दिशा में विज्ञान को सक्रिय होना चाहिए। स्थान की दूरी कम करने के साथ ही मानव हृदय की दूरी भी कम करना आवश्यक है
कुटुम्बकम' की स्थापना हो सकेगी औ
की महान् उपलब्धि होगी।

❑

राष्ट्रकवि व सफल साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टै

–सूर्यनाथ सिंह

प्रशिक्षक डी.एल.एड्.

बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं मनुष्य को एकता व सामंजस्य का पाठ पढ़ाने वाले गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टै
का जन्म सन् 1861 में कोलकाता के प्रसिद्ध ठाकुर वंश में हुआ था। इनकी शिक्षा की उच्च व्यवस्था घर पर हुई। घर पर ही इन्होंने अपने दिग्दर्शकों की उत्तम-मार्गदर्शन प्रणाली द्वारा संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी व संगीत आदि विषयों का कुशल ज्ञान प्राप्त किया। कई स्कूलों में प्रवेश लेकर कम समय में अध्ययन पूरा किया।

छोटी ही आयु में इनकी प्रसिद्धि कवि के रूप में होने लगी। सन् 1913 में उन्हें अपनी पुस्तक 'गीतांजलि' पर साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय 'नोबेल पुरस्कार' मिला। उन्होंने इस पारितोषिक की 8,000 पौ
अपनी प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था 'शांति-निकेतन' की देखभाल में व्यय कर दी।

टै

टै
पड़ी। उनके द्वारा लिखे शिक्षा लेख, प्रकृति के उच्च रूपों से युक्त है

सर्वोत्तम-शिक्षा वही है
जीवन का सामंजस्य स्थापित करे। शिक्षा, जीवन के सादृशिक कार्य का स्थायी अंग है
उच्चतम शिक्षा वह है
समस्त-विश्व के साथ हमारा समन्वय स्थापित करे। शिक्षार्थी की शिक्षा प्राकृतिक-वातावरण में कुशलता से होनी चाहिए। उसे शिक्षा के माध्यम से भारतीय समाज की पृष्ठभूमि तथा भारतीय-संस्कृति का ज्ञान कराना अत्यावश्यक है
का पूर्ण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है

शिक्षक व शिक्षा का परिवेश– टै
अनुसार छात्रों को मार्गदर्शन व प्रेरणा देते समय, शिक्षक को सजग रहना चाहिए। जब तक शिक्षक स्वयं न सीख रहा हो, तब तक वह उचित-अध्यापन नहीं कर सकता है
को प्रकाशित कर सकता है
भावनाओं, प्रवृत्तियों तथा रुचियों को समझकर उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करे।

टै
बालकों की अपेक्षा अधिक आवश्यक है
शिक्षित बालिका, दो परिवारों को शिक्षित करती है
केवल किताबी ज्ञान ही बालक के लिए आवश्यक नहीं है
आवश्यक है
अपने दायित्व का बोध कर सके। प्राकृतिक-परिवेश में दी गयी शिक्षा अधिक उत्तम है
प्रकृति-प्रेम व उसके प्रति दायित्वों का भी बोध कराती है
की पुकार है

यह ध्यान रखना की तुम्हारी इज्जत पर कोई हाथ न डालने पाये, एकता पैदा करो और चरित्र का विकास करो।

— सरदार पटेल

कला समाज का दर्पण है

—डॉ. पंकज यादव
प्रवक्ता- कला

कला में ऐसी शक्ति होती है
सीमाओं से ऊपर उठाकर ऐसे ऊँचे स्थान पर पहुँचा देती है
जाति के बंधन से मुक्त हो जाता है

कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र धर्म, जाति आदि की सीमाओं को मिटा देती है
अपने आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है
कला व्यक्ति को "स्व" से निकालकर "वसुधैकुटुम्बकम" से जोड़ती है
ऊर्जा का महासागर है
सुन्दरम् से समन्वित करती है
विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।।

कला एक ऐसी बहुमूल्य सम्पत्ति है
पास है
हम जानते है
रही है
हमारी वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा चाट लिया जाता है
सिर्फ भूसा।

कला ही है
प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को सही दिशा देने की क्षमता है
सम्मोहित करने की शक्ति होती है

कला का तात्पर्य केवल चित्रकला से नहीं है
कला में चित्रकला, नृत्यकला, गायन, वादन, मूर्तिकला आदि अनेक कलाओं का वर्णन है
भी प्रत्येक बच्चे के मन में कुछ स्वतंत्र भाव उत्पन्न होते है
से अच्छा माध्यम कौ
चित्र बनाने में रुचि लेते है
इसका प्रदर्शन होता रहता है
दीवारों या ब्लै
देखने को मिलती है
आवश्यकता होती है
पूरे किये जा सकते है
उनके सपनों में पंख लग जाते है
प्रतिभा को पहचानने की जरूरत है

इतिहास गवाह है
का ह्रास होता है
मिटने लगती है
लगता है

अतः समाज तथा विद्यालय के माध्यम से अपने समाज तथा विद्यालय में कला उत्सव का आयोजन करे ताकि अपनी संस्कृति, समाज एवं जीवन का मूल आधार अपने आध्यात्मिक पक्ष को बचाकर अपनी परम्परा से रस लेकर आधुनिकता को चित्रित कर सके।

❑

डूबने से डरने वाले लोग तै — ***सरदार पटेल***
जो इस मिथ्या जगत् में जनसेवा के द्वारा जीवन को सार्थक बना लेता है
लिए मृत्यु नहीं। — ***सरदार पटेल***

आधुनिक हिन्दी भाषा का महत्त्व

—विनोद कुमार
प्रवक्ता- हिन्दी
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट बरईकला, सोहावल

1. हिन्दी भाषा दुनिया में एक तरह की प्राचीन भाषा है
   हुआ। उसके बाद देवनागरी लिपि जो आज हिन्दी के नाम से जानी जाती है
   सख्त अनुवाद है
2. हिन्दी हमारी मातृभाषा है
   भी कहा जाता है
   भाषा के सिंधु शब्द से ही हुआ है
   है
   में से एक है
3. हमारे देश में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है
   को मनाया जाता है
   के स्थायित्व के लिए राष्ट्र भाषा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए, जो किसी भी राष्ट्र के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है
   "निज भाषा उन्नति अहै
   बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"
4. हम सबका कर्त्तव्य है
   के पद पर आसीन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। व्यवहार में हिन्दी भाषा का प्रयोग 'हीनता' नहीं बल्कि 'गौ
   रूप में करना चाहिए। हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी पहले भारतीय है
   संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी भाषा में भाषण दिया।
5. हिन्दी भाषा की संवै
   सितम्बर, 1949 को अधिकारिक रूप से राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया।

❑

स्त्री शिक्षा का महत्त्व

—सुनीता वर्मा
प्रवक्ता- बी०टी०सी०

"नारी" विधाता की सर्वोत्तम औ
है
दया, निष्ठा, शीतलता, स्नेह, कर्त्तव्य-परायण ये सभी शब्द नारी की शक्ति के साथ जोड़ा गया है
निर्माण में नारी का योगदान अतुलनीय है
के रूप में वे पूजी जाती है
अधिक अत्याचार भी सहती है

दुनिया के कुछ सम्पन्न देशों में महिलाओं की स्थिति के बारे में हुए एक शोध में भारत आखिरी नम्बर पर आया है
वै
सर्वेक्षण में शामिल नहीं किये गये थे।

सर्वेक्षण 19 विकसित औ
किया गया, जिनमें भारत, मै
सऊदी अरब जै
को महिलाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ बताया गया।

भारत जै
है
यह वर्तमान स्थिति बताती है
नारी शक्ति कहाँ है

भारत में जहाँ रजिया सुल्तान, चाँद बीबी, अहिल्याबाई औ
उदय हुआ जिन्होंने पुरुष-प्रधान समाज को चुनौ
औ
कल्पना चावला, मीराकुमार, सानिया मिर्जा ने देश का नाम ऊँचा किया, वहीं नारी पर बढ़ते अपराध के कारण भारत में नारी की स्थिति आज भी दयनीय है
65% महिलाएँ समाज की प्रगति की धुरी से कोसों दूर है

किसी भी विकसित देश का आप उदाहरण उठा कर देखें तो आप पायेंगे कि वहाँ या उस देश में महिलाओं की स्थिति बहुत अधिक स्वतंत्रता तथा सम्पन्नता में पायी गयी। भारत को भी विकसित देशों की श्रेणी में आना है
महिलाओं की स्थिति में सुधार करके ही देश की आर्थिक औ
शिक्षा द्वारा ही सम्भव है
स्थिति में सुधार लाकर राष्ट्र का निर्माण हो सकता है
अत: जरूरत है

राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द का कथन है किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है की महिलाओं की स्थिति। शिक्षा नारी को ऐसी स्थिति में पहुँचा देती है
ढंग से स्वयं सुलझा लेती है
अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना की जा सकती है

❑

शिक्षा में खेल का महत्त्व

—डॉ. दयाशंकर वर्मा
क्रीड़ा प्रभारी, भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन

विद्यार्थी जीवन मानव-जीवन की आधारशिला है
समस्त अच्छी-बुरी आदतों का मानव-जीवन पर स्थाई प्रभाव पड़ता है
के सर्वांगीण विकास में बहुत सहायक है

खेल प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए। यह उतना ही जरूरी है
लिए भोजन। जिस प्रकार शरीर को नई ऊर्जा देने के लिए भोजन की जरूरत पड़ती है
ताजगी खेल भी शरीर को देता है

वर्तमान समय में यह औ
जाता है
मोबाइल औ
लेता है
को कुछ समय के लिए दूर तो कर देता है
दुष्प्रभाव भी बालक के मन एवं शरीर पर बहुत अधिक पड़ता है
वह ताजगी नहीं दे पाता है
है
होता है
एक सर्वे के अनुसार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बालक तनाव का अनुभव ज्यादा कर रहा है
सबसे बड़ा कारण है
दे रहे है

किसी ने कहा है
निवास करता है
लिए स्वस्थ शरीर का होना अनिवार्य है

वै

अर्थात् स्वस्थ शरीर को प्रमुख सुख माना है
मनोरंजन का एक साधन भी है
के साथ-साथ सामाजिक, राष्ट्रीय महत्त्व भी रखता है
तथा इससे अनुशासन पै
जोल की भावना का विकास होता है
के सभी स्कूलों में क्रिकेट, वॉलीबाल, फुटबाल, बै
का निर्माण करना चाहिए।

❑

मूल्यों के विकास में समाज

—अजय कुमार राय

प्रवक्ता- श्री साईंराम इन्स्टीट्यूट

मूल्य हमारे व्यवहार एवं
नै
है
होते है
संगठन या फिर व्यक्ति के लिए दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करते है
समाज औ

मूल्यों के विकास में परिवार वह पहली सीढ़ी है जिस पर चढ़कर मानवता के लक्ष्य को पाना आसान लगता है
किस प्रकार के मूल्यों की शिक्षा देना चाहता है
बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो जाता है
(शै
के आचरण से सबसे अधिक प्रभावित होता है
प्राथमिक स्तर पर मूल्य इसी उम्र में निर्धारित होते है
हालाँकि बाद में भी मूल्य विकसित होते है
प्रभाव का स्तर धीरे-धीरे कम हो जाता है

मूल्यों के विकास में प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, निन्दा व दंड एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करते है
परिवार के साथ-साथ समाज भी बालक के मूल्यों के विकास में अहम् भूमिका अदा करता है
असली भूमिका तो विद्यालय जाने के बाद शुरू होती
है
समाज में बालक का सम्पर्क ज्यों-ज्यों बढ़ता है
मीडिया, सामाजिक समूहों से वार्त्तालाप, सह-शिक्षा आदि
के नै
जै
औ
जै
पर सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है
जितना नजदीक होगा उस पर समाज का उतना ही प्रभाव पड़ेगा।

अब समाज के बाद मूल्यों के विकास में एक औ महत्त्वपूर्ण कारक जो उसे सबसे ज्यादा प्रभावित करता है
में योगदान देते है
व दूसरा, उच्च शिक्षा के स्तर पर। पहले स्तर पर मूल्यों का विकास ज्यादा होता है
मूल्यों के विकास को एक दिशा मिलती है
के परिवर्तन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है
इन दोनों स्तरों पर विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा एवं नै
जाता है

❑

वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षक

—अनूप कुमार सिंह
प्रवक्ता-डी. एल. एड्.

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है
केन्द्र हुआ करते थे। उपनयन संस्कार के पश्चात् बालक गुरुकुल में प्रवेश कर पाता था। जहाँ गुरु के साथ रहकर बालक एक शिष्य के रूप में शिक्षा ग्रहण करता था। शिष्य गुरु के उच्च आदर्शों, मूल्यों, नै
का अनुकरण करता था। उस समय शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम संस्कृत भाषा हुआ करती थी। गुरुकुल में ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना अनिवार्य था, जो एकाग्रता की आधारशिला थी। यहाँ शिष्य के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास पर प्रमुख बल दिया जाता था, जिससे छात्र शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके तथा अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भलीभाँति कर सके।

जै
हुआ। अब राजा-महाराजाओं का समाज में वर्चस्व बढ़ गया। अब ऐसे गुरुओं की माँग बढ़ गई जो शिक्षा के साथ-साथ मल्ल युद्ध, गदा युद्ध, धनुर्विद्या की शिक्षा दे सकें। एक तरह से टेक्निकल गुरुओं की माँग बढ़ गयी। द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य को सभी लोग जानते होंगे। वे एक तरह के टेक्निकल गुरु थे, जो युद्ध विद्या का ज्ञान देते थे। किन्तु अभी भी शिक्षक का समाज में सर्वोपरि स्थान था। आगे चलकर भारत में मध्यकाल आया, जिसमें शिक्षक का महत्त्व समाज में कुछ शिथिल पड़ गया। अब अरबी तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान रखने वाले शिक्षकों की माँग समाज में बढ़ गई। इसी समय बहुत से गुरुकुल तथा आश्रमों को तोड़ दिया गया। संस्कृत भाषा के विद्वान् उपेक्षा के शिकार हुए।

अंग्रेजों के आगमन के साथ ही भारत में आधुनिक काल प्रारम्भ हुआ। इस समय अंग्रेजी शिक्षा को महत्त्व प्रदान किया गया। अंग्रेजी भाषा ही शिक्षा की मुख्य भाषा बनी। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके कुछ भारतीय शिक्षकों ने आजादी के लिए संघर्ष किया औ
को आजादी दिलाई औ
कार्य किया। आजादी के पश्चात् भारत सरकार ने अपनी शिक्षा नीति की घोषणा की तथा इसी समय अधिक-से-अधिक शै
गई। शिक्षकों ने एक बार फिर अपनी खोई हुई गरिमा को पुनः प्राप्त किया।

वर्तमान समय में हमें दो प्रकार के शिक्षक दृष्टिगोचर होते है
1. व्यवसाय के रूप में शिक्षा को अपनाने वाले।
2. शिक्षा को व्यापार के रूप में अपनाने वाले।

जिन शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय के रूप में चुना है
तथा जिन्होंने इसे व्यापार के रूप में चुना है
शिक्षक की गरिमा का सर्वनाश कर दिया है
शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य पद तथा अधिक-से-अधिक धन प्राप्त करना है
पद-लोलुप शिक्षक आपको हर जगह मिलेंगे। किन्तु समाज में उन्हीं शिक्षकों को आज भी सम्मान प्राप्त है जो शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पित है
शिक्षक आज भी समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में अपना कार्य कर रहे है

❑❑

शिक्षा में बदलाव

–सुभाषचन्द्र वर्मा
डी.एल.एड्. प्रथम वर्ष

शिक्षा हमारे जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है
मानसिक, आध्यात्मिक, आत्मिक विकास के साथ राष्ट्रीय भावना जाग्रत करना एवं जीवन-यापन के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध करवाना शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य माने गये है
में शिक्षा अपने मूल उद्देश्यों से भटक गयी है
सिर्फ रोजगार प्राप्त करने का साधन मात्र बनकर रह गयी है
को सफलता का आधार एवं अन्तिम लक्ष्य माना जाने लगा है
अक्षमता एवं उसकी उपेक्षा के कारण 'रट्टू तोताओं' को प्रतिभाशाली माना जा रहा है
ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बनने की जगह निजी स्वार्थसिद्धि एवं धन इकट्ठा करने का एक औ
कर रह गयी है
वे नीतियाँ जिम्मेदार है
के बाद भी हिन्दुस्तान में अंग्रेजी न जानने वाले व्यक्ति को हीनभावना से ग्रसित होने के लिए मजबूर कर दिया गया है

अब ज्ञान कहाँ मिलता है
अब तो शिक्षा का बाजारीकरण हो चुका है
कितनी बड़ी विडम्बना है

की कार्यवाही अभी भी पूरी तरह से हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं में नहीं हो रही है
अभी तक कोई भी बड़ा आवश्यक बदलाव नहीं कर पाये है
स्वतन्त्रता के पहले थे।

अपने बच्चों को अमीर होने की शिक्षा न दें,
बल्कि खुश रहने के संस्कार दें,
इससे जब वे बड़े हो जाएँ,
तो हमेशा वस्तुओं की कदर करेंगे,
न कि उनकी कीमत की।

'प्राइमरी-शिक्षा' में आमूल-चूल परिवर्तन किये बिना देश की शिक्षा व्यवस्था को नहीं सुधारा जा सकता है
महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ाने वाले प्रोफेसरों जै
का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को संस्कारवान्, नै
चारित्रिक रूप से मजबूत बनाकर शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों से परिचित कराना चाहिए। प्राइमरी कक्षाओं में शिक्षकों की योग्यता मापने का सिर्फ एक पै
होना चाहिए कि बच्चे उनसे डरें नहीं, छोटे बच्चे का स्कूल जाने से डरना हमारी शिक्षा व्यवस्था पर बहुत बड़ा प्रश्न-चिह्न है

शिक्षा वही जो इंसान को इंसान बनाए,
व्यर्थ है

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2016 के लिए समाज के लगभग सभी वर्गों से सुझाव माँगे जा रहे है
स्वायत्तता, ग्रामीण भारत को ध्यान में रखना आदि बदलाव मानव संसाधन विकास मंत्रालय कै
है

❖❖❖

शिक्षा का अधिकार अधिनियम

–शुभम् तिवारी
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

– शिक्षा को मौ
कानून के लागू होने से स्वतन्त्रता के छः दशक पश्चात् बच्चों के लिए निःशुल्क औ
साकार हुआ है
गया। इसे बच्चों को निःशुल्क औ
अधिकार अधिनियम 2009 नाम दिया गया है

– इस अधिनियम के लागू होने से 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अपने नजदीकी विद्यालय में निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा पाने का कानूनी अधिकार मिल गया है
गरीब परिवार के बच्चे, जो प्राथमिक शिक्षा से वंचित है
प्रावधान रखा गया है

– राइट-टू-एजुकेशन ऐक्ट लागू होने के अवसर पर प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा है
नौ
शिक्षा औ
खुशहाल औ
भारत के सभी नौ
सकेगी।

– शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने से 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को न तो स्कूल फीस देनी होगी, न ही यूनीफार्म, बुक ट्रांसपोर्टेशन या मिड-डे मील जै
अगली क्लास में पहुँचने से रोका जायेगा, न निकाला जायेगा, न ही उनके लिए बोर्ड परीक्षा पास करना अनिवार्य होगा।

– कोई भी स्कूल बच्चों को प्रवेश देने से इंकार नहीं कर सकेगा। हर 70 बच्चों को पढ़ाने के लिए कम-से-कम दो प्रशिक्षित अध्यापक होंगे। जिन स्कूलों में संसाधन नहीं है
जायेगा। इस कानून के लागू करने पर आने वाले खर्च केन्द्र सरकार (55 प्रतिशत) औ
प्रतिशत) मिलकर उठायेंगे।

– शिक्षा के अधिकार को मूल अधिकार का दर्जा देने के साथ ही इसे मूल कर्त्तव्यों में शामिल कर अभिभावकों का कर्त्तव्य बनाया गया है
द्वारा राज्य सरकार, बच्चों के माता-पिता या संरक्षक सभी का दायित्व तय किया गया है
पर अर्थदण्ड का भी प्रावधान है

तात्कालिक तौ
भारतीय राष्ट्र एवं समाज को एक विकसित एवं शिक्षित राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास जान पड़ता है
2020 ई. तक भारत को एक जानकारी समाज (Knowledge Society) में रूपान्तरित किया जा सकता है यही हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का भी सपना है

बच्चों को निःशुल्क औ
अधिकार अधिनियम 2009 के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित है

प्राथमिक शिक्षा में प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा शामिल है

(अ) अनिवार्य शिक्षा–सरकार का दायित्व है कि– (क) 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाये।

(ख) 6 वर्ष से या 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को अनिवार्य प्रवेश, उपस्थिति व शिक्षा की समाप्ति सुनिश्चित करे।

❖❖❖

(ब) नि:शुल्क औ

अधिकार– (अ) बच्चे अपने नजदीकी सरकारी विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने तक नि:शुल्क औ

उसे किसी प्रकार का शुल्क या अन्य खर्चे नहीं देने होंगे।

केन्द्र सरकार को इस अधिनियम को समुचित रूप से क्रियान्वयन में राज्य सरकारों को भी विश्वास में लेकर उन्हें समुचित आर्थिक सहायता, परामर्श औ मार्गदर्शन के लिए भी केन्द्र सकरार को विशेष पहल करनी होगी।

''जरूरी नहीं रोशनी चरागों से ही हो,
शिक्षा से भी घर रोशन होते है

''सच्ची बातों को जान लेने का नाम ज्ञान है
जो अपनी मेहनत से कुछ कर दिखाएँ वही महान् है

जीवन में सफलता प्राप्त करने औ
करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है
से सामना करने में सहायता करता है

''शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है
जिसका इस्तेमाल दुनिया को
बदलने के लिए किया जा सकता है

''जब तक शिक्षा का मकसद नौ
तब तक समाज में नौ

❑

विराजिये माँ

–अनीता कुमारी
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

विराजिये माँ तू मेरी जिह्वा पर,
बस यह मेरी अभिलाषा है
है
यही शिक्षा की परिभाषा है
शिक्षा द्वारा समुचित विकास,
यदि मानव का हो सकता है
तो नारी का समुचित विकास,
क्या कभी नहीं हो सकता है
शिक्षा द्वारा हम समझे है
नारी न भोग का साधन है
मानव समाज की उन्नति का,
नारी सर्वोपरि साधन है
सीखना कलाओं का भी तो,
शिक्षा द्वारा ही सम्भव है
फिर नारी अशिक्षित रह जाए
तो यह भी बात असम्भव है
गृह गाड़ी के दोनों पहिए
नर औ
दोनों शिक्षित है
तो वे सुन्दर परिवार चलाते है
अतएव हमारा कहना है
नारी को अब पढ़ना होगा।
चाहे पथ हो चाहे पथरीला
उसको आगे बढ़ाना होगा।।

❑

हमारे जीवन में शिक्षा का महत्त्व

—आकांक्षा जायसवाल
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

आज जिस प्रकार दुनिया आधुनिक रूप से बदल रही है
है
के कारण शिक्षा के महत्त्व पर जोर दिया गया है बल्कि प्राचीन समय से ही शिक्षा के महत्त्व को हमारे पूर्वजों ने स्वीकार किया है
व्यक्ति शिक्षित नहीं है
वह समाज से खुद को अलग-सा महसूस करता है यहाँ शिक्षा का मतलब बहुत सारी डिग्री लेकर पूर्ण शिक्षित होने से नहीं है
आत्मबल होने से है
किसी का सहयोग लेने की आवश्यकता न पड़े। उसे कम-से-कम इतना ज्ञान हो कि वह लिखना-पढ़ना जानता हो। किसी भी व्यक्ति का प्रथम विद्यालय उसका घर होता है
उसके माता-पिता होते है
विद्यालय उसका घर होता है
पहला शिक्षक उसके माता-पिता होते है
में अधिकतर युवाओं की सोच यह है
उद्देश्य नौ
है
लेना होगा, तब तक हम पूर्ण रूपेण शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाएँगे। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम पूर्णरूपेण शिक्षित होकर दूसरों को रोजगार देने लायक काम करें, शिक्षा का महत्त्व हमारे जीवन में इस कदर बढ़ गया है
व्यक्ति खुद को ठगा हुआ महसूस करता है
क्षेत्रों की स्थिति में भी अब बदलाव आ रहा है
अब शिक्षित लोगों की माँग बढ़ गयी है

"स्त्री तथा पुरुष दोनों ही समाज-रूपी रथ के दोनों पहिए है
चलना असम्भव है
प्रकार बालकों-पुरुषों की शिक्षा पर जोर दिया जाता है ठीक उसी प्रकार स्त्री शिक्षा पर भी जोर दिया जाना चाहिए वरना यह समाज-रूपी रथ कभी आगे बढ़ नहीं पाएगा। एक पुरुष को शिक्षित करने से वह अकेला शिक्षित होगा, लेकिन एक स्त्री को शिक्षित करने से वह पूरा परिवार शिक्षित होगा। यह आवश्यक नहीं है
सिर्फ एक पुरुष ही चिकित्सक, वकील, अभियंता या अन्य पद हासिल कर सकता है
इतनी सक्षम है
है

किसी भी देश की यदि स्त्री शिक्षित नहीं हो, तो उस देश की आधी आबादी ही शिक्षित रह जाएगी औ ऐसा होने पर उस देश का विकास कभी भी सम्भव नहीं है
को मिलते है
में ऊँचा किया है
कि स्त्रियों को शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन उन्हें उच्च शिक्षा से दूर रखना चाहिए। आज आवश्यकता ऐसी मानसिकता को बदल कर बदलते समाज के साथ चलने की है

इस प्रकार हमारे देश का हर बच्चा इंजीनियर औ डाक्टर बनकर दूसरे देश को अपना पहचान दे सकते है
ज्यादा से ज्यादा फसल उत्पादन कर विश्व में नम्बर वन स्थान ले सकते है

❑

अकेलापन

–आकांक्षा चौ
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

क्या होता है
जिन्होंने कितनी रातें रो-रोकर बिताया है
वो अपने एक हार की वजह से
दुनिया से लड़ना छोड़ देता है
कै
क्या होता है
न जाने किस हाल में गुजरता होगा
उसका आज औ
न जाने वो कै
अपने हारे हुए वजूद से कोई
इस बात में साथ नहीं देता।
क्या होता है
क्या करे औ
कोई वजूद नहीं बचता जब
वह जीने की सब वजह खो देता
घुट-घुटके मरने से अच्छा होता,
क्या होता है
तू चल ए मुसाफिर
अपने मंजिल की ओर
इस जग में तेरे सिवा तुझे
जानने वाला है
हारी बाजी जीत के दिखा
तू आज, ए मुसाफिर
क्या होता है

❑

नारी शिक्षा

–सुधांशु
डी.एल.एड्. द्वितीय सेमेस्टर

नारी शिक्षा का महत्त्व जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है
महत्त्वपूर्ण है
छिपी प्रतिभा को जगाकर उसे सही दिशा प्रदान करना है

शिक्षा सभी का समान रूप से हित-साधन का कार्य किया करती है
विकासशील देश में नारी की शिक्षा का महत्त्व इसलिए अधिक है
को योग्य बनाने में अपना महत्त्वूपर्ण योगदान औ
मार्गदर्शन करती है

बच्चा सबसे अधिक माँ के सम्पर्क में रहा करता है
प्रभाव बच्चों के मन-मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है
मन-मस्तिष्क में अच्छे संस्कारों के बीज बो सकती है
जो कि बालक की प्रथम गुरु उसकी माँ होती है
एक माँ का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है
शिक्षित होगी तभी एक बच्चे को शिक्षित औ
बनाने की शिक्षा दे पायेगी जो आगे चलकर अपने समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक हुआ करते है

❑❑

नारी का कर्त्तव्य बच्चों के पालन-पोषण के अतिरिक्त अपने घर-परिवार की व्यवस्था का संचालन करना भी होता है
आय व परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उचित व्यवस्था एवं संचालन करती है
अधिकांश परिवार टूट रहे है
है
की अत्यन्त आवश्यकता है
बल पर ही चरम सीमा तक पहुँच सकी है
संघर्ष जीतने के लिए चरित्र-शास्त्र की आवश्यकता पड़ती है
पारिवारिक जीवन स्वर्गमय हो सकता है
बाद देश व समाज में वह पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में समर्थ हो जाती है
में शिक्षित माता गुरु से भी बढ़कर मानी जाती है
वह अपने पुत्र को महान् से महान् बना देती है

आज स्वयं नारी समाज के सामने घर-परिवार, समाज, रीतियों-कुरीतियों तथा परम्पराओं के नाम पर जो अनेक तरह की समस्याएँ उपस्थित है
निराकरण नारी शिक्षा एवं धन से सम्पन्न होकर ही कर सकती है
नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है
जाति समाज में फै
मिटाकर अपने ऊपर लगे लांछनों का सहज ही निराकरण कर सकती है
आवश्यक है

❑

देश-भक्ति गीत

-सुधांशु सिंह
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

दिल से माना, वतन तुझे दिल से माना
माने या ना माने सारा जमाना।
माना मै
स्वर्ग से सुन्दर भारत भूमि, जहाँ खुशी औ
गंगा जहाँ ज्ञान की बहती, जो जीवन आधार है
ऐसी भारत भूमि को है
माना मै
इस मिट्टी पर जन्म लिये थे, पुरुषोत्तम रघुराई।
सुख-दुख में जीवन जीने की सारी बात बताई।।
ऐसी बातें ही दूजे को बताना।
माना मै
इस मिट्टी में जन्म लिये थी, रानी लक्ष्मीबाई।
गर्व चूर्ण कर दिया था रण में, जब मै
ऐसी नारी शक्ति को है
माना मै
दिल से माना, वतन तुझे दिल से माना,
माने या न माने सारा जमाना
माना मै

❖❖❖

हिन्दी भाषा

—अंकिता सिंह
डी.एल.एड्. प्रथम सेमेस्टर

प्रकृति की पहली ध्वनि ॐ है
मेरी हिन्दी भाषा भी इसी ॐ की देन है
देवनागरी लिपि है
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डोंगरी, पंजाबी औ
हिन्दी है
प्रकृति की हर इक चीज अपने में सम्पूर्ण है
मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है
जो बोलते है
मन के भाव सही उभरते है
हिन्दी भाषा ही तुम्हें प्रकृति के समीप ले जाएगी।
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी।
कुछ हवा चली है
कहते है
बदल सकोगे क्या तुम अपनी माता को?
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो।
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो।
हर इक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो।
हिन्दी की जड़ों पर आओ हम गर्व करें।
हिन्दी भाषा पर आओ हम गर्व करें।।

❑

वो प्यारी बच्ची

—डिम्पल
डी.एल.एड्. (प्रशिक्षु) प्रथम सेमेस्टर

वो मासूम थी, प्यारी बच्ची
एक घर की रौ
माँ-बाप की आँखों का तारा थी
अपने भाई-बहनों का सहारा थी
अरमानों से पली थी वो
एक घर की रौ
जिसकी मासूम शरारतों से
माँ-बाप का दिन बन जाता था
जिसकी एक मुस्कान से
घर-आँगन खिल जाता था!
जिसके एक हँसी के आगे
दुनिया के सारे गम फीके पड़ जाते थे
वो छोटी-सी बच्ची थी!
वो बोलते हुए भी तुतलाती थी!
देख के जिसकी मासूम शक्ल
उदासी भी खुशी बन जाती थी।
जिसने जीवन के कुछ ही पल देखे थे
उसपे ऐसा अन्याय हुआ
ये कै
एक चार साल की बच्ची पे
ये कै
एक बच्ची तक बचा सके न
कै
जिस बच्ची पे ये जुल्म हुआ
वो कितना रोयी होगी!
फिर भी उन है

दया तक न आयी!
मेरा हृदय भर आता है
वो माँ कै
जिसकी बच्ची पे ये अत्याचार हुआ
जिस मासूम को देख के मन में
प्यार उमड़ आता है
देख उसी बच्ची को कुछ के मन
में है
कपड़ों के कारण होते अगर रेप
जो कहे, उन्हें बस इतना बतलाऊँ मै
आखिर वो ही बता दें चार साल
की बच्ची को कै
अगर अब भी हम सब न सुधरे तो
इक दिन ऐसा आएगा
जब इस संसार में बेटी देने से
भगवान भी घबरा जाएगा।

❖❖❖

फिर न जाने क्यूँ

—डिम्पल सिंह
डी.एल.एड्. तृतीय सेमेस्टर

न जाने क्यूँ बन गई फिर इक बिटिया की कहानी
रहती थी अपने घर में जो बन करके रानी
दिसम्बर, 2012 को खत्म हो गई उसकी कहानी
कै
न जाने क्यूँ.....
मिल जाती सजा अगर दोषियों को तो फिर न छपती ये कहानी
न जाने क्यूँ खत्म हो गया इंसान की आँख का पानी
6 दिसम्बर 2018 को खत्म हो गई प्रियंका रेड्डी की जिन्दगानी
न जाने क्यूँ.....
हाजीपुर की अलीशा हो या उन्नाव की पीड़िता
हर बेटी है
न जाने क्यूँ.....
मिल जाता इंसाफ अगर दामिनी को,
तो बच जाती प्रियंका की जिन्दगानी
न जाने क्यूँ.....
जिस तरह आवश्यक है
उसी तरह आवश्यक है

❖❖❖

शिक्षा

—डिम्पल वर्मा
डी.एल.एड्. (प्रशिक्षु) प्रथम सेमेस्टर

शिक्षा जीवन जीने का एक अनिवार्य हिस्सा है
शिक्षा शब्द कहने में अथवा बोलने में छोटा है
अर्थ उतना ही विस्तृत है
में शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है
लिंग के आधार पर भेदभाव रोकने में भी मदद करती है
उठा सकते है

एक शिक्षित महिला में ही कौ
आत्मविश्वास होता है
औ
सिक्के के दो पहलुओं की तरह है

पहले के समय में लड़कियों की शिक्षा को कभी भी आवश्यक नहीं माना गया था, परन्तु वक्त के साथ आधुनिक युग में महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर रही है
विरोध करते है
घर तक ही सीमित है
लड़कियों की शिक्षा समाज में बदलाव ला सकती है
एक शिक्षित लड़की विभिन्न क्षेत्रों में जै
बै
बोझ को साझा कर सकती है
युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है
महिलाओं की सोच के दायरे को भी बढ़ाती है

शिक्षा लड़की को आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बनने में मदद करती है
महिलाओं के सशक्तीकरण को पहचान सके, जिससे उसे लिंग व समानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले।

1. किसी भी राष्ट्र का सुधार लड़कियों की शिक्षा पर निर्भर करता है
प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. एक आदमी को शिक्षित करके केवल राष्ट्र का कुछ हिस्सा शिक्षित किया जा सकता है
एक महिला को शिक्षित करके पूरे देश को शिक्षित किया जा सकता है

3. अत: हमें सभी लड़कियों को शिक्षित करना चाहिए, जिससे हमारे राष्ट्र का निर्माण बेहतर ढंग से हो सके।

बाल मजदूरी

—संदीप कसौ
डी.एल.एड्. तृतीय सेमेस्टर

छोटे बच्चे बड़े होते बच्चे
देश का भविष्य होते है
क्यों बाल मजदूरी करवाते हो बच्चों से
देश का गौ

आँखों में मासूमियत होती है
थोड़े ना समझ होते है
क्यों बोझा ढोते है
क्यों बाल मजदूरी करते है

पढ़ने के दिनों में मजदूरी करते थे बच्चे
क्यों दया नहीं आती आपके भी है
थोड़े मासूम से है
बहुत प्यारे होते है

छोटे बच्चे बड़े होते बच्चे
देश का भविष्य होते है
क्यों बाल मजदूरी करवाते हो बच्चों से
देश का गौ

कृषि मशीनीकरण के लाभ

—Er. V. C. Pal
Assistant Professor
Dept. of Agriculture

1. उत्पादन में वृद्धि— मशीनों के द्वारा कृषि कार्यों को करने के लिए निश्चय ही उपज अधिक होती है
तक जुताई करता है
से जुताई करके भूमि को उर्वरा बनाया जा सकता है

2. उत्पादन पर कम व्यय— भूमि के प्रत्येक भाग को मशीनों के प्रयोग से सुचारु रूप से उपयोग में लाया जाता है
में किया जाता है
है
तुलना में सस्ता पड़ता है

3. समय की बचत— समय प्रत्येक खेती या व्यवसाय में अपना अलग ही महत्त्व रखता है
की कार्यक्षमता अधिक होने के कारण मशीनों के द्वारा किये जाने वाले कृषि कार्य भी कम समय में ही समाप्त हो जाते है

4. श्रम की कम आवश्यकता— मशीनीकरण से किसान कम समय में अधिक कृषि कार्य कर सकता है
की आवश्यकता पड़ती है
से एक व्यक्ति इसकी कटाई कुछ ही समय में कर सकता है

5. गहरी जड़ वाले खर-पतवारों को उखाड़ना— बहुत-सी गहरी जड़ें या जड़ वाले खरपतवार मशीनों के प्रयोग से सरलतापूर्वक उखाड़कर नष्ट किये जा सकते है

6. अलग व्यवसाय की स्थापना— टै
इत्यादि बड़ी मशीनों से कृषक अपना कार्य करने के बाद फालतू समय में उन्हें दूसरे व्यक्तियों के यहाँ चलाकर अतिरिक्त आय कर सकता है

7. जीवन स्तर में सुधार— मशीनों के प्रयोग से कृषक कम समय में कम लागत द्वारा अधिक आय करता है
ऊँचा उठाया जा सकता है

8. स्वास्थ्य में सुधार— भारतीय कृषक मानव व पशु शक्ति के स्थान पर मशीनों के प्रयोग से स्वयं को प्रतिकूल अवस्थाएँ जै
बचाकर स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है

9. राष्ट्र का औ कृषि का विकास होने के फलस्वरूप देश में कृषि यन्त्रों के निर्माण की आवश्यकता होगी जिससे राष्ट्र का औ

❑

सफलता

—दिपांशी वर्मा
B.Sc. (Ag.) IInd Year

जीवन एक पहेली है
सफलता औ
हर असफलता के बाद सफलता जरूर आती है
बस देखना है
असफलता मिलने से संघर्ष खत्म नहीं होता।
असफलता के दौ
लक्ष्य पाने के लिए लाखों उजालों की जरूरत नहीं।
बस परिश्रम औ

❑

भारत में कृषि का महत्त्व एवं कृषि के क्षेत्र में रोजगार

—डॉ. अरुण कुमार

विभागाध्यक्ष- कृषि संकाय

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है
उत्पादित वस्तुओं का प्रतिशत काफी अधिक रहता है
भारत में आवश्यक खाद्यान्न की लगभग सभी पूर्ति कृषि के माध्यम से ही की जाती है
भी एक बहुत बड़ी आबादी को कृषि के माध्यम से रोजगार प्राप्त है
जबकि देश में बेरोजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है
माना गया है
खुशहाली के लिए अत्यंत आवश्यक है
तथा उसके समग्र विकास के लिए कृषि का महत्त्व कितना अधिक है
पुष्टि की जा सकती है

कृषि उद्योग भारत की अधिकांश जनता को रोजगार प्रदान करता है
प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है
कच्चे माल के रूप में अनेक उद्योगों में प्रयोग करके लाखों व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होता है
अतिरिक्त परिवहन कम्पनियों को कृषि पदार्थ, जै
खाद्यान्न, कपास, जूट, गन्ना, तिलहन आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में भी भारी आय होती है
प्रकार भारतीय कृषि देश के निवासियों के लिए जीवन-निर्वाह का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है
आवश्यकता की लगभग शत-प्रतिशत पूर्ति भारतीय कृषि द्वारा ही की जाती है
पटसन, तेल आदि उद्योग प्राय: पूरी तरह भारतीय कृषि पर ही निर्भर करते है
कच्चे माल की पूर्ति मुख्यत: घरेलू उत्पादन द्वारा ही होती है रहती
है

विश्व की सबसे बड़ी कृषि सम्बन्धी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत में कृषि क्षेत्र का योगदान 2018-19 में सकल घरेलू उत्पाद का 17.00 प्रतिशत रहा, जबकि 2016-2017 में यह 17.32 प्रतिशत था।
भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर है
कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा गया है
यथासमय एवं यथेष्ट मात्रा में आ जाता है
उत्पादन भी ठीक हो जाता है
की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है
भी यथेष्ट कच्चा माल प्राप्त हो जाता है
सरकार अपनी कर व्यवस्था को तदनुसार ही निश्चित कर सकती है
है
मिलता है
उद्योग कृषि पर ही निर्भर है

समय तेजी से बदल रहा है
जिस खेती-किसानी की तरफ युवाओं का बिल्कुल रुझान नहीं होता था वहाँ आज कै
सम्भावनाएँ है
डाक्टरी, इंजीनियरिंग या एमबीए करने की सोचते थे, उनका रुझान अब एग्रीकल्चर की तरफ हो रहा है
भारत कृषि प्रधान देश है
सकल उत्पाद को दोगुना बढ़ाना चाहती है
कृषि क्षेत्र में तरह-तरह के तकनीकी बदलाव किये जा रहे है
क्षेत्र में कै
आधुनिकता के इस दौ
यह लगाव किसी चमत्कार से कम नहीं है
महाविद्यालयों में एडमिशन पाने के लिए युवाओं के बीच मची होड़ से इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है

का जुनून किस कदर सवार है
ख्यातिनाम संस्कृति यूनिवर्सिटी ने भी युवाओं के इस रुझान को देखते हुए कृषि संकाय को काफी सुदृढ़ किया है

कृषि क्षेत्र में कै अगर आप भी कृषि अनुसंधान के क्षेत्र से जुड़कर कृषि वै
एक बेहतर किसान बनना चाहते है
आपको 12वीं की परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर बीएससी एग्रीकल्चर या फिर बीएससी एग्रीकल्चर ऑनर्स की डिग्री हासिल करनी चाहिए। यह डिग्री एग्रीकल्चर, वेटनरी साइंस, एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, फॉरेस्टरी, हॉर्टीकल्चर, फूड साइंस औ
भी एक विषय में ले सकते है
आप सीधे खेती औ
जुड़कर कृषि क्षेत्र में देश के विकास में अपना अहम् योगदान दे सकते है

आज भी भारत की करीब 70 फीसदी जनसंख्या जीविका के लिए पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है
में कृषि क्षेत्र में पढ़े-लिखे किसानों की सख्त जरूरत है
इंजीनियरिंग या मै
कै
बै
अधिकारी, फील्ड ऑफिसर बनकर भी अपना शानदार कै
कृषि विभागों में आपके लिए रोजगार की अपार सम्भावनाएँ है

❑

Haemorrhagic Septicaemia

—Dr. Sujeet Kumar Yadav
Assistant Professor Dept. of Agriculture

Haemorrhagic Septicemia (H. S.) is a contagious bacterial disease caused by serotypes of Pasteurella multocida, B_2 and E_2, which occurs notably in cattle and buffaloes and to the lesser extent in other ruminants as well as other animals and high mortality rate (82-95%).

More than 42,000 cattle and buffaloes die out of it every year in India causing great loss to the national economy. The disease appears the rainy season. Above some times this causes 100% deaths of cattle and buffaloes in its surrounding. In India it is estimated that H. S. is responsible for approximately half of the bovine deaths. It's most common in buffaloes than in cattle.

Etiology— This causal organism is Pasteurella multocida.

Turn of Infection— The causal organism may get entry in the body an animal through inhalation, ingestion, skin.

Period of Incubation— Period incubation of this disease in 1 to 3 days.

Symptoms— High fever, hot and painful swelling, sudden rise in body temperature upto 104º to 108º F, Feed reluctance, drapping ears, dullness, sound "Ghurr-Ghurr" and lies on the ground and dies within some hours.

Treatments— Once it appears, valuable animals die within hours. Antiserum of the disease and the medicines such as sulphadimidine sodium, Terramycin, Ampicillin, Gentamycin used for this treatment.

Prevention— H. S. composit broth vaccine is used for this. Vaccination against this disease should be carried out annually about a month before the on set of the disease.

❑

Terminology in Plant Pathology

—Uttam Patel
Assistant Proff. (Plant Pathology)
B.Sc. Agriculture

Blight — A non–restricted tissue disintegrating symptom. Characterized by general and rapid killing of leaves flower and stem.

Canker — A necrotic or sunken lesion oil a stem branch or fruit of a plant.

Damping off — Destruction of Seedling near the Soil surface, resulting in the falling of seedling on the ground.

Die back— Progressive death of shoots and Roots generally starting at the tip.

Downey mildew — A plant disease in which the mycelium and spores of the fungus appear as a downey growth on the host surface.

Endemic disease — A disease which regularly occurs on a particular area of earth or country.

Epidemic disease — A wide spread and severe outbreak of a disease.

Gummosis — Production of gum by plant tissue.

Infection— Establishment of the pathogen in the host.

Necrosis — The death of cells or of tissues.

Rust — A disease of grasses and other plants giving a rusty appearance to the plant and caused by uredinales

Smut — A disease caused by ustilaginaceae characterized by masses of dark, powdry spores.

Facultative Parasite — An organism that is usually saprophyte under certain conditions may become parasite.

Obligate parasite — A parasite that in nature can grow and multiply only on living organisms.

Mosaic — Symptom of certain viral disease of plant characterized by intermingled patches of normal and light green or yellowish colour.

Mildew — A plant diseases caused by a fungus in which the mycelium and spores are seen as a whitish growth on the host surface.

❑

Program Planning and Importance of Program Planning

—Jyoti Rani
B.Sc. Home Science Department

Program planning is essential for any systematic attempt to achieve desired goals. The use of planning is to discover and prepare the way for action that should be taken.

Proper planning of the program is very important for achieving the success in extension work. It helps to identify the educational objectives, facilitates the selection of learning experience to attain these objectives and evaluation of the in relation to objectives becomes possible.

Benefits of Program Planning—

1. Avoid wastage of resources
2. Provide guidance
3. Continuity
4. Provide reliable information
5. Leadership development
6. Avoiding future problems.

❑

Statisticians Know How to Avoid Common Pitfalls

—Amit Mishra
Statistician

Using statistical analyses to produce findings for a study is the culmination of a long process. This process includes constructing the study design, selecting and measuring the variables, devising the sampling technique and sample size, cleaning the data, and determining the analysis methodology among numerous other issues. The overall quality of the results depends on the entire chain of events. A single weak link might produce unreliable results. The following list provides a small taste of potential problems and analytical errors that can affect a study.

Biased samples : An incorrectly drawn sample can bias the conclusions from the start. For example, if a study uses human subjects, the subjects might be different than non-subjects in a way that affects the results. See: Populations, Parameters, and Samples in Inferential Statistics.

Overgeneralization : Findings from one population might not apply to another population. Unfortunately, it's not necessarily clear what differentiates one population from another. Statistical inferences are always limited, and you must understand the limitations.

Causality : How do you determine when X causes a change in Y? Statisticians need tight standards to assume causality whereas others accept causal relationships more easily. When A precedes B, and A is correlated with B, many mistakenly believe it is a causal connection! However, you'll need to use an experimental design that includes random assignment to assume confidently that the results represent causality. Learn how to determine whether you're observing causation or correlation!

Incorrect analysis : Are you analyzing a multivariate study area with only one variable? Or, using an inadequate set of variables? Perhaps you're assessing the mean when the median might be a better? Or, did you fit a linear relationship to data that are nonlinear? You can use a wide range of analytical tools, but not all of them are correct for a specific situation.

Violating the assumptions for an analysis : Most statistical analyses have assumptions. These assumptions often involve properties of the sample, variables, data, and the model. Adding to the complexity, you can waive some assumptions under specific conditions—sometimes thanks to the central limit theorem. When you violate an important assumption, you risk producing misleading results.

Data mining : Even when analysts do everything else correctly, they can produce falsely significant results by investigating a dataset for too long. When analysts conduct many tests, some will be statistically significant due to chance patterns in the data. Fastidious statisticians track the number of tests performed during a study and place the results in the proper context.

Numerous considerations must be correct to produce trustworthy conclusions. Unfortunately, there are many ways to mess up analyses and produce misleading results. Statisticians can guide others through this swamp!

❑

किसान पर कविता

—पवन कुमार
B.Sc.(Ag). IInd Year

धरा का चीरकर सीना, नये अंकुर उगाता है
उगाकर अन्न मेहनत से, हमें भोजन खिलाता है
सदा जिसने मिटाई भूख, जन-जन की जहाँ भर की
वही हलधर अभावों में गले फाँसी लगाता है

कड़कती सर्दियों में धूप में, काली घटाओं में
लड़े अड़ जाये दुष्कर, आसमानी आपदाओं में
कभी जो हार न माने, नतीजा चाहे जो भी हो
वही फिर टूट जाता है

जरा सोचो तरक्की से, सियासत से क्या पाओगे
अगर ये न उगाये, तो क्या तुम खुद उगाओगे
अभी भी वक्त हम जाग जायें, इससे पहले कि
ये खेती छोड़ बै

❖❖❖

बेटियाँ

—काजल वर्मा
B.Sc. (Ag.) IInd Year

घर की सब चहल-पहल है
जीवन में खिला कमल है
कभी धूप गुनगुनी सुहानी
कभी चन्दा शीतल है
शिक्षा, गुण संस्कार शेष दो
फिर बेटों सी सबल है
सहारा दो अगर विश्वास का
तो पावन गंगाजल है
प्रकृति के सद्गुण सोचो तो
प्रकृति सी निश्छल है
क्यों डरते हो पै
अरे आने वाला कल है

❖❖❖

मेरी सफलता

—मधुरिमा गोस्वामी
B.Sc. (Ag.) Ist Year

मेहनत प्यारी है
परेशानियों का पहाड़ हो या मुसीबतों का अंगार हो,
विरोध की दीवार हो या,
उपहास की बौ
सब कुछ सहकर अडिग रहना है
सफलता मिलती है
सुख में हो या दुख में हो, हर दम जो हँसता रहे,
हर दर्द सहता रहे पर, मुख से कुछ भी न कहे,
कम खाए या गम खाए।
दूसरों की भलाई में जो आगे बढ़ता जाए,
बाधा आने से भी जो कभी न घबराए,
कुछ हो जाए पर आगे बढ़ना है
सफलता मिलती है
कामयाबी की प्यास हो, कमियाँ भी पास हो पार,
कमियाँ न रोक सकें जिसे, सफलता मिलती है

❖❖❖

क्या आप जानते है

—हर्षित वर्मा
B.Sc. (Ag.) Ist Year

1. पपीता का पीला रंग — केरिका जेन्थीन के कारण।
2. सेब का लाल रंग — एन्थोसाइनिन के कारण।
3. टमाटर का लाल रंग — लाइकोपिन के कारण।
4. मिर्च का लाल रंग — केप्सेन्थिन के कारण।
5. मिर्च का तीखापन — केप्सेसिन के कारण।
6. गाजर का पीला रंग — कै
7. गाजर का लाल रंग — एन्थोसाइनिन के कारण।
8. हल्दी का पीला रंग — कुरकुमीन के कारण।
9. करेले में कड़वापन — मेर्मोडीकोसाईट के कारण।
10. खीरे में कड़वाहट — कुकरबीटासीन के कारण।
11. प्याज में लाल रंग — क्यूरोसीटीन के कारण।
12. प्याज में पीला रंग — एन्थोसाइनिन के कारण।
13. मूली में तीखापन — आइसोसाइनेट के कारण।
14. सरसों में तीव्र गंध — थायोसाइनेट के कारण।
15. काली मिर्च का तीखापन — ओलीयोरेजीन के कारण।
16. पातगोभी में तीव्र गंध — सिनिग्रीन के कारण।
17. आलू की सुषुप्तावस्था तोड़ने के लिए प्रयोग करते है
18. विश्व की पहली बीज रहित आम की प्रजाति है
19. बेर की बीज रहित किस्म है इलायची।
20. किसान कॉल सेंटर की स्थापना कब तथा किसके द्वारा हुई?
    — 21 जनवरी, 2004 को नई दिल्ली में भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के कर कमलों द्वारा।

❑

Friends is the Key to Success

—Zufishan Rhman
B.Sc. (Ag.) IInd Year

The friend prevent me from incivility
And their company increases my prosperity
When we leave the door, they exit me,
And the rare motto has to be easy.
The friend are key to joyful life.
After obtaining everyone can spend happy life.
Let us make the new now but keep the old
If there are silver, those are gold.
A friend in need is a friend indeed.

❑

गुरुवर दया के सागर

—संध्या सोनी
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

गुरुवर दया के सागर, तेरा दर जगत से न्यारा।
दुनिया का दर भँवर है
तेरी दृष्टि है
अन्धों की आँख में भी, नव ज्योति भरने वाली।
अज्ञान के तिमिर से, हर भक्त को उबारा।।
तेरा है
अपनाया इसे जिसने, उसने न खाया धोखा।
जो जुड़ सका न तुमसे, वह लुट गया बेचारा।।
तेरे दर पे सब बराबर, कोई बड़ा न छोटा।
चोखा बनाया सबको, आया भले ही खोटा।
जो भी शरण में पहुँचा, सबको मिला सहारा।।
दुनिया का रस लुभाता, मझधार में डुबाता।
तेरा रस पुनीत पावन, है
गुरुवर दया के सागर तेरा दर जगत से न्यारा।

मुक्तक

गुरु की महिमा का क्या कहना, न्यारा है !
सबको प्यार लुटाता इतना, प्यारा है
बचना है
सबसे तुम्हें बचा सकता है

❑❑

मेरी पहचान

—सिद्धान्त चौ
B.Sc. (Ag.) IInd Year

मेरे शब्द ही मेरी पहचान है
स्वयं पर विश्वास ही
मेरी सफलता का आधार है
मेरा हौ
मेरे सपनों की उड़ान है
मेरा स्वभाव ही
मेरी विशेषता है
अपनों का साथ ही
मेरे जीवन का सार है
मेरे माँ-बाप ही
मेरा अभिमान है
हर एक सम्मान ही
मेरा प्रयास है
आप सबकी खुशी ही
मेरे चेहरे की शान है
क्योंकि मेरे शब्द ही मेरी पहचान है

❖❖❖

Artificial Intelligence

—Rajneesh Singh Patel
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

1. Branch of computer science that develops machines and software with human like Intelligence.
2. **Artificial Intelligence—** Is the availity of a computer program or a machine to think and learn. It is also a field of study which tries to make computer "smart" They work on their own without being encoded with commands. **John Mccarthy** came up. with the name Artificial Intelligence in 1955.
   In general use the term "Artificial Intelligence" means of program which mimics human **cognition**. At least some of the things we associate with other minds such as **learning** and **problem solving** can be done by computer thought not in the some way as we do.
3. **History—** The first appearance of artificial Intalligence is in Greek myths, like talos of crete or the Bronze robot of **Hephaestus Humanoid** robots where built by Yanshi Hero of Alexandria and **Al- Jazari** sentient Machines became popular in fiction during the 19th and 20th ceturies with the stories of **Frankenstein** and **Rossum's Universal Robots Formal logic** was developed by ancient Greek philosphers and mathematicians. ❑

बेजोड़ परीक्षा

—दिषू कुमार
B.Sc. (Ag.) Ist Year

है
फिर भी है
कभी-कभी लोहे के घन से
लगती पत्थर-फोड़ परीक्षा।
चौ
पेचीदा घुड़दौ
कभी रूदन से जुड़ जाती है
रहती कभी हँसोड़ परीक्षा।
हो जाती कब गुणा भाग कब
कब बाकी कब जोड़ परीक्षा।
दिखा दिया करती पग-पग पर
भाँति-भाँति के मोड़ परीक्षा।
रख देती ताकतवर को भी
अच्छी तरह मरोड़ परीक्षा।
नहीं चूकती है
छल का भंडाफोड़ परीक्षा।
जो कमजोर औ
देती उन्हें निचोड़ परीक्षा।
मेहनत के आगे भी नखरे
करती लाख-करोड़ परीक्षा।

❖❖❖

जिन्दगी एक गणित की पुस्तक की तरह है

—संजना वर्मा
B.Sc. (Ag.) IInd Year

जिन्दगी एक गणित की पुस्तक की तरह है
जिसमें सवालों पर सवाल है
प्रश्नावलियों पर प्रश्नावली।
मै
जब जोड़ने लगी तो लगा कि,
मेरे पास बहुत कुछ हो गया है
जब घटाने लगी तो लगा कि
सारे का सारा खो गया है
मै
अंकों के ढेर लगने लगे।
औ
माथे पर हाथ फेरने लगी।
दरअसल मै
औ
इसी तरह जिन्दगी के सारे गुणनखण्ड
एक दूसरे से कट गये।
औ
उत्तरमाला के सारे पन्ने फट गये।

प्रेम

—मुस्कान कुमारी
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

माँ पर लिख दिया, पिता पर लिख दिया औ
प्यार? वो तो लिखा हजारों बार, पर कोई है
लिख पाई, भाई, बड़ा ही मुश्किल है
लिखना, जो दिखाया नहीं जाता, बस किया जाता है
लम्हों को लिखना जिन्हें जिया जाता है
है
है
वाक्य असमर्थ लगता है
अक्सर उसके उन बेकार सवालों में देखी है
अक्सर करते है
मै
लड़ता झगड़ता रहता है
मुझ पर दिल-ओ-जान से मरता है
हूँ ये बात बखूबी जानती हूँ मै
खुशी से बड़ा मानती हूँ मै
भी कहाँ भाती है
आती है
एक समस्या का निवारण है
मेरा पिता भी है
भी है
मेरी नादानियों में से सबसे ज्यादा फिक्रजदा होता है
बचाता है
जताए उसने हर जिम्मेदारी निभाई है
हयात है

❖❖❖

ये धरा ही उसकी माता है

—शिवम तिवारी
B.Sc. (Ag.) IInd Year

बिना गाँव औ
सम्पूर्ण होना सम्भव नहीं है
हों तो देश भूखा ही मर जाये। लेकिन समय की विडम्बना
देखिये आज किसान अलग-अलग कारणों के कारण
अपनी जान गवाँ रहे है
मेहनत से दूसरों का पेट भरते है
समर्पित है

पेट जो भरता लोगों का
मिट्टी से फसल उगाता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

आलस जरा न तन में रहे
कोई डर न मन में रहे
जितनी भी मुसीबत बढ़ती है
बिन बोले वो चुपचाप सहे,
बस परिवार की खातिर ही
वो रहता मुस्कुराता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

न धूप सताए दिन की उसे
न काली रात डराती है
डटा रहे हर मौ
जब तक न फसल पक न जाती है

सूरज के उठने से पहले
वो पहुँच खेत में जाता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

मेहनत करता है
संयम भी बाँधे रहता है
बोझ जिम्मेदारियों का
उसके कांधे ही रहता है
कभी वक्त की ऐसी मार पड़े
वो भूखा ही सो जाता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

न जाने उसकी किस्मत को
कै
आज तो है
भारत का अन्नदाता,
मजबूरी में बेबस होकर वो
फाँसी को गले लगाता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा उसकी माता है

जो सेहत देता दूजों को
खतरे में उसकी जान है
सबकी पूरी करे जरूरत
अधूरे उसके अरमान है

पूरा मूल्य मिले मेहनत का
बस इतना ही तो वो चाहता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

पेट जो भरता लोगों का
मिट्टी से फसल उगाता है
उस किसान की खातिर तो
ये धरा ही उसकी माता है

❑

हमारी जीवन-शै

—शुभम तिवारी
B.Sc. (Ag.) Ist Year

अच्छा भोजन एवं अच्छा स्वास्थ्य किसको पसन्द नहीं है
में हम सब कुछ भूल चुके है
खान-पान तथा स्वास्थ्य के साथ-साथ जीने के तरीकों को बदल दिया है
भरी जीवन-शै
दे। आओ जानें भोजन करने के सही तरीके—

1. भोजन को खूब चबा-चबाकर खाना चाहिए, इससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है
इतना चबाना चाहिए कि जब तक यह पूरी तरह लार से मिल न जाये।

2. खाना खाने के बाद या उसके दौ
बिल्कुल नहीं पीना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से पाचक रसों का प्रभाव कम हो जाता है
घण्टा) बाद या फिर पहले पानी पीना चाहिए। भोजन को थोड़े-थोड़े समय पर खाना चाहिए, जिससे भोजन का पाचन अच्छी तरह से हो सके। इससे हमारा स्वास्थ्य सही रहेगा।

3. खाना खाने के तुरन्त बाद ठण्डे खाने युक्त चीजें जै
करना चाहिए, क्योंकि इससे भोजन-पाचन सही तरीके से नहीं हो पाता है
हो सकती है
करना चाहिए। रात में भोजन हल्का करना चाहिए।

❖❖❖

जिन्दगी की राह पर

—अनुपम कुमार
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

किसी सपने को दिल में खास मत रखना,
कल्पनाओं पर कभी विश्वास मत रखना।
जहाँ पर हो एक भी आग की चिंगारी,
भूलकर भी कभी कपास मत रखना।।

जो बने आपकी सफलताओं में बाधक,
ऐसे लोगों को कभी पास मत रखना।
लेकिन मेहनत औ
सफलता की कभी तुम आस मत रखना।।

देखकर गिरते हुए तुम चन्द लोगों को,
अपने मन को कभी उदास मत रखना।
तुमको रखना है
तो खुद को व्यसनों का दास मत रखना।।

अगर तुम्हें लगे सब झूठे रिश्ते है
तो उसकी बातों पर विश्वास मत रखना।
पानी है
निराशा को कभी पास मत रखना।।

❑❑

शहीद के बेटे की दीपावली

—महीप कुमार
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

चारो तरफ उजाला पर अँधेरी रात थी।
वो जब हुआ शहीद उन दिनों की बात थी।
आँगन में बै
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार।
माँ क्यों न तूने आज भी बिंदिया लगाई है
है
बिंदिया भी नहीं पाँव में बिखरे से बाल है
लगती थी कितनी प्यारी अब ये कै
कुमकुम के बिना सूना-सा लगता है
दीपावली पे क्यों न आये पापा अबकी बार।।
बच्चा बाहर खेलने जाता है
औ
किसी के पापा उसको नये कपड़े लाये है
मिठाइयाँ औ
वो भी तो नये जूते पहन खेलने आया।
पापा-पापा कहके सबने मुझे चिढ़ाया।
अब तो बता दो क्यों है
दीपावली पे क्यों न आये पापा अबकी बार..
दो दिन हुए है
हर बार की तरह तूने खीर बनाई।।
आने दो पापा से मै
तुमसे न बोलूँगा न तुम्हारी मै
ऐसा क्या हुआ कि बताने से इनकार।
दीपावली.....
वो आठ साल का बेटा तब अपनी माँ को कहता है
मत हो उदास माँ मुझे जबाब मिल गया।
मकसद मिला जीने का ख्वाब मिल गया।
पापा का जो काम रह गया है
लड़कर के देश के लिए करूँगा पूरा।।
आशीर्वाद दो माँ काम पूरा हो इस बार।
दीपावली पर क्यों न आये पापा अबकी बार।।

❑

गाँव बदलिगा

—आदर्श सिंह
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

गजब कय आपन गाँव बदलिगा।
आम नीम कटा छाँव बदलिगा।।
पूरा घर परिवार बदलिगा।
पेशा अब व्यापार बदलिगा।।
रोटी दाल अब भात बदलिगा।
बाबू कय जूता लात बदलिगा।।
घर घर कय तरकारी बदलिगा।
अम्मा माई महतारी बदलिगा।।
सास बहू कय साथ बदलिगा।
बड़की माई कय हाथ बदलिगा।।
बगिया कय फरवाह बदलिगा।
हर घर कय हरवाह बदलिगा।।
लुका छिपी कय खेल बदलिगा।
खोपड़ी वाला तेल बदलिगा।।
नारा वाला पै
शादी कय जोड़ा जामा बदलिगा।।

जब से आपन देश बदलिगा।
गाँव घर व परिवेश बदलिगा।।
लकड़ी वाला चूल्हा बदलिगा।
वर वरीक्षा दूल्हा बदलिगा।।
खत चिट्ठी अब तार बदलिगा।
दूध दही कय धार बदलिगा।।
सबकै
नोकिया वाला टोन बदलिगा।।
गाँव कय ताल तलै
कुकुर औ
माटी वाला कुआँ बदलिगा।
तपता वाला धुआँ बदलिगा।।
सब कय मड़हा छपरा बदलिगा।
माटी वाला खपरा बदलिगा।।
माई बाप कय आदर बदलिगा।
डुड़वा बरधा गादर बदलिगा।।
सिल जाँत अब चाकी बदलिगा।
अईया चाची काकी बदलिगा।।
गाँव घर कय फगुआ बदलिगा।
शादी ब्याह कय अगुआ बदलिगा।।
बड़े बुजुर्ग कय संगत बदलिगा।
नेवता हँकारी कय पंगत बदलिगा।।
घर घर कय संस्कार बदलिगा।
नई बहू कय व्यवहार बदलिगा।।
ससुर जेठ अव देवर बदलिगा।
गहना गुरिया जेवर बदलिगा।।
लौ
सबही कय मिसकाल बदलिगा।।
आदमी कय ईमान बदलिगा।
पीपर कय शौ
घर घर कय इंसान बदलिगा।
मेरा भारत महान बदलिगा।।

❖❖❖

मतदाता जागरूकता गीत

–कन्है
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

वोट डालने चलो रे साथी
लोकतंत्र के बनो बाराती
एक वोट से करो बदलाव
नेताजी के बदलो हाव–भाव,

सही उम्मीदवार का करो चुनाव
बेईमानों को मत दो भाव
आपका वोट है
लोकतंत्र की है

सुबह सबेरे वोट दे आओ
वोटर आईडी संग ले जाओ
उस इंसान का करो चुनाव
जो पार लगाये देश की नाव।

मतदान के दिन घर में मत रहना
वरना पाँच साल पड़ेगा सहना
भै
वोट दे के आ जाओ जी।

झाड़ू, कमल, हाथ या हाथी
वोट दे के बने लोकतंत्र के साथी
लोकतंत्र का आनन्द उठाते हो
फिर वोट क्यों नहीं दे आते हो

आपके वोट से आयेगा बदलाव।
समाज सुधरेगा कम होगा तनाव।।

❖❖❖

पापा

—साजिया खान
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

याद आता है
जहाँ से चाँद की रोशनी छनके आती थी।
पापा की बाँहों में छुपके सो जाती थी।
पापा जब प्यार से सपने दिखाते थे।
वह बचपन कहीं खो गया, जवानी की सरहद पर
आजकल आखिर खुश कौ
आँखें भर आईं यह सोचकर कि पापा अब डाँटते क्यों नहीं।
वक्त पे खा लेना, पढ़ाई में मन लगाना यह कहते क्यों नहीं।
यह मै

अब जब गम हद से बाहर हो गया
वह छोटा-सा जख्म नासूर हो गया।
ऐसा लगता है
फिर मुझे परियों के शहर ले जायेंगे।
फिर एक राजा होगा एक रानी होगी।
हर दिन एक नई कहानी होगी।
पापा तेरा रिश्ता जिन्दगी से भी आगे चला जाएगा।
लेकिन मुझे मालूम है

❑

माँ

—सचिन कुमार
B.Sc. (Ag.) IInd Year

कवि की लेखनी है
शायर की शायरी तो,
संगीत की वो लय है
जो झंकृत कर दे वो प्रेम है
कबीर की साखी है
तुलसी की चौ
मीरा की पदावली है
जिसके समक्ष तमाम उपलब्धियाँ क्षीण हो जाती
वो शक्ति है
मिट्टी को आकार देकर हमें बना दिया
वो मूर्तिकार है
अपने पै
वो कलाकार है
सौ
माँ है
दुनिया में माँ से अधिक तुम्हें कोई प्यार नहीं कर सकता जो कि नि:स्वार्थ होता है

❖❖❖

महिमा अपरम्पार बनारस

—सौ
B.Sc. (Ag.) Ist Year

कोई नहीं समझ पाया है
महिमा अपरम्पार बनारस।
भले क्षीर-सागर में हों विष्णु,
शिव का तो दरबार बनारस।
हर-हर महादेव कर कहती,
दुनिया जय-जयकार बनारस।
माता पार्वती संग बसता,
पूरा शिव परिवार बनारस।
कण-कण शंकर घर-घर मंदिर,
करते देव विहार बनारस।
वरुणा औ
है
फगुआ, तीज, दशहरा, होली,
रोज-रोज त्योहार बनारस।
कुश्ती, दंगल, बुढ़वा-मंगल,
लगै
जिसकी गली-गली में बसता,
है
एक बार जो आ बस जाता,
कहता इसे हमार बनारस।

❖❖❖

Women Empowerment

—Pooja Sahu
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

Today, we can not ignore the importance of women. Even a single place is not left where there is no women whether it is a battle field or a scientific field or a business field or game field or the most important part of our life "Our Beautiful Home" A women plays a very important role in every field. Some times a women is a mother, she gives birth to her child but on the other hand she is a defender on a battle field, where she can bring her enemies during the battle.

So, we can't deny the importance of a women just imagine..... what would be the condition if a country is without, we can't limit the area of women.

Education and Liberalian are the major demands of today's women After all....."

"Women is the creator of the world". Thus, we must not discriminate children on the basis of gender.

"Success in the ability to go from failure to failure without lossing for anthuciasm".

❑❑

शिक्षक की महिमा

—उपासना
बी0 एस-सी0 (कृषि), प्रथम सेमेस्टर

उठी लेखनी प्रेम से आज रहित अभिमान,
अपने शिक्षक गणों का करती हूँ गुणगान।
बारी आयी सुनो अब धर्मवीर सर की आज,
मृदा विज्ञान के शिक्षक मेरे है
इस क्षेत्र में इनको ज्ञान बहुत क्या कीन्ही खूब पढ़ाई है
है
अमित सर की बात कहूँ, जो विषय गणित पढ़ाते है
हम सबसे प्रश्न पूछते, सबका उत्साह बढ़ाते है
ऐसा समझाते है
मीठी-मीठी वाणी से प्रेरित हम सबको करते है
उत्तम सर को क्या कहूँ कै
विरासत की हम सबको शिक्षा दी तत्काल।
मध्यम वाणी से वो सबको, ऐसा विस्तार बताते है
एक बार नहीं दो बार नहीं कई बार वो समझाते है
विमलेश सर का राज मै
शस्य विज्ञान पढ़ाते है
रहत है
लगते भोलेपन के है
श्री प्राचार्य जी का कै
सिरजनहार है
कालेज नहीं ये भविष्य, मेरा सोता जगाया है
है
हम कितनी भी तारीफ करें, फिर भी हमको कम लगती है
सौ
बाकी शिक्षक जो शेष रहे, उनका मै
वो देव समान हमारे है
यदि गलती कोई शेष रही हो क्षमा पात्र मै
नाम उपासना मेरा अन्दारायपुर गाँव में रहती हूँ।
भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट में सब शिक्षक है
ऐसे हों पूरे देश में तो भविष्य बने अनेक।।

❑❑

आकांक्षा

—नेहा गोस्वामी
B.Sc. (Ag.) IIIrd Year

भीड़ भरी दुनिया में नाम चाहती हूँ
मै
वक्त बहुत कम है
जीवन के परिधि में आत्मा को है
स्वच्छन्द उड़ सकूँ ऐसा आकाश चाहती हूँ।
नदी के निरन्तरता का साथ चाहती हूँ।
दुनिया के नीति रीति में घुटने नहीं टेकना,
स्वाभिमान दृढ़कर सामने है
पक्षियों के कलरव का साज चाहती हूँ,
फूलों की दृढ़ता का राज चाहती हूँ।
भीड़ भरी दुनिया में नाम चाहती हूँ।
मै

❑❑

जीवन की सच्चाई

—गगनदीप
B.Sc. (H.Sc.) Ist Year

किसी ने पूछा नींद औ
किसी ने क्या सुन्दर-सा जवाब दिया—
नींद आधी मौ
औ
जिन्दगी तो अपने ही तरीके से चलती है
औ
सुबह होती है
उम्र यूँ ही तमाम होती है
कोई रोकर दिल बहलाता है
औ
क्या करामात है
जिन्दा इंसान पानी में डूबता है
औ
बस ये कण्डक्टर-सी हो गयी है
सफर भी रोज का है
हर सवाल का जवाब मै
औ
जवाब सब मिल गये।
छत ने कहा ऊँची सोच रखो,
पंखे ने कहा, ठण्डे से रहो।
घड़ी ने कहा, हर मिनट कीमती है
शीशे ने कहा, कुछ करने से पहले
अपने अन्दर झाँक लो।
खिड़की ने कहा, दुनिया को देख लो।

❖❖❖

माँ शारदा से प्रार्थना

(ओऽम शं सरस्वती सह धीमिरऽस्तु)

—रोशनी गौ
B.Sc. (H.Sc.) Ist Year

ज्ञान का दीप जग में जला दे,
ज्ञान का ऐसा वरदान दो माँ।
हम चलें ज्ञान-पथ पर हमेशा,
ज्ञान का ऐसा विज्ञान दो माँ।।
ज्ञान का है
कुछ करो मइया हो जाय पूरा।
ज्ञान की आभा फै
ज्ञान का वो अभय-दान दो माँ।।
हम पतित हों चतुर्दिग तिमिर में,
हो न ऐसा कभी जिन्दगी में।
जिन्दगी की अमा भी हो पूनम,
हमको कुछ ऐसा सद्ज्ञान दो माँ।।
जिन्दगी के किसी भी चरण पर,
हमको अभिमान छूने न पाये।
स्वार्थ की भावना तक पनपे,
हो सके ऐसा ही ज्ञान दो माँ।।
हम चलें ज्ञान-पथ पर हमेशा.....

❑❑

जीवन का लक्ष्य

—श्रद्धा मिश्रा
B.Sc. (H.Sc) Ist Year

1. लक्ष्य पर ध्यान लगाओ।
2. डर का सामना करो।
3. सच बोलने की हिम्मत करो।

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपनों से हो
औ
जब लड़ाई अपने आप से हो।

मंजिल मिले ये तो मुकद्दर की बात है
हम कोशिश ही न करें तो गलत बात है
क्या बात करें इस दुनिया की।
हर शब्द के अपने अफसाने है
जो सामने है
जिसको कभी देखा नहीं उसे सभी खुदा कहते है

❖❖❖